॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

कविवर मुनिश्री नानचन्द्रजी महाराज रचित

गुजराती

जैन प्रश्नोत्तर कुसुमावली

का

हिन्दी अनुवाद

अनुवादक

श्रीयुत मास्टर रिखवचन्दजी कड़ावत

स्टेट मिल इन्दौर.

वैराग्यशतक, मार्गानुसारी के ३५ गुण, उपदेशरत्न कोष
मदनचरित्र कर्त्तव्य कौमुदी आदि के अनुवाद कर्त्ता

प्रकाशक—

श्रीयुत् गिरधारीलालजी अनराजजी माखला
बेंगलोर

श्रीयुत कानमलजी आड़ावत के प्रबन्ध से श्री जैन
सुधारक प्रेस, अजमेर में मुद्रित

अर्थ सहित प्रतिक्रमण और शास्त्रोपयोगी प्रश्नोत्तर के
दोनों भाग पढ़ लेने वालों को अमूल्य भेंट

प्रथमावृत्ति	श्रावण	मू० सजिल्द
१०००	सं० १९८२	॥=)

॥ श्री वीतरागायनमः ॥

कविवर मुनिश्री नानचन्द्रजी महाराज रचित

गुजराती

जैन प्रश्नोत्तर कुसुमावली

का

हिन्दी अनुवाद

अनुवादक

श्रीयुत मास्टर रिखबचन्द्रजी कड़ावत

स्टेट मिल इन्दौर

वैराग्यशतक, मार्गानुसारी के ३५ गुण, उपदेशरत्न कोष मदनचरित्र कर्त्तव्य कौमुदी आदि के अनुवाद कर्त्ता

प्रकाशक—

श्रीयुत गिरधारीलालजी अनराजजी सांखला

बेंगलोर

श्रीयुत कालमल जी भांडावत के प्रबन्ध से श्री जैन सुधारक प्रेस, अजमेर में मुद्रित.

अर्थ सहित प्रतिक्रमण और बालोपयोगी प्रश्नोत्तर के दोनों भाग पढ लेने वालों को अमूल्य भेट

प्रथमावृत्ति १०००

श्रावण सं० १९२२.

मू० सजिल्द ॥=)

मुनिश्री नानचन्दजी रचित

गुजराती पुस्तकें।

(१) सुबोध संगीतमाला भाग १, २, ३ दूसरी आवृति सर्वोपयोगी पद संग्रह पृष्ठ ४०० की० १२ आना

(२) सुबोध संगीतमाला, भाग ३रा पृष्ठ १०० तीसरी आवृत्ति स्त्रीउपयोगी संगीत पुष्प की० ३ आना

(३) जैन प्रश्नोत्तर कुसुमावली तीसरी आवृत्ति पृष्ठ १०० जैनतत्त्वज्ञान का प्रकरण प्रश्नों का संग्रह की. ३ आ.

(४) सुबोध कुसुमावली नित्य पाठ करने योग्य की० २ आना.

(५) सामायक स्वरूप दूसरी आवृत्ति विवेचन सहित कीमत ३ आना.

(६) संस्कृत काव्यानन्द-बोध-वचन श्लोकों का संग्रह की २ आना.

(७) छन्द संग्रह—छन्दों अध्ययनो और स्तुतियों का संग्रह की० २ आना.

(८) सामायिक प्रतिक्रमण—छः काय का बोल, पैंतीस बोल और पदों के संग्रह सहित की० २ आना.

(९) रसिटेशनो (भाषणों, सवादों और गायन) कीमत पहला भाग ≈) तीसरा ≈)

मिलने का पता:—

श्री अजरामर जैन विद्याशाला ना कार्यवाहक,

मु० लींबड़ी (काठियावाड़)

(ऊपर की जैन पुस्तकों का मुनाफा विद्यार्थियों की सहायता में दिया जाता है।

निवेदन ।

श्री अजरामर जैन विद्या भवन की ओर से कविवर विद्वान मुनि श्री नानचन्द्रजी स्वामी रचित जितनी पुस्तकें प्रकाशित हुई है वे सब उपयोगी और सस्ती होने से इतनी लोक प्रिय हुई कि कई पुस्तकों की अधिक प्रति गुजराती में छपाई जाने पर भी उनकी माग अधिक ही रही और नई आवृति प्रकाशित किये बिना काम न चला यह पुस्तक उन्हीं मे से एक का अनुवाद है, जिसका नाम श्री जैन प्रश्नोत्तर कुसुमावली है जिसकी उपयोगिता इसी मे सिद्ध है कि थोड़े असे में ही इसकी गुजराती में तीन आवृतिया प्रकाशित होगई । इस पुस्तक के अधिक लोक प्रिय होने का कारण इसकी उपयोगिता देखते सहज ही ध्यान मे आता है । इसमें विचारशील विद्वान मुनि ने सम्पूर्ण विचार कर ससार की गति समझ विषय लाये हैं जिनका मनन और विवेचन के साथ की अभ्यास सच्चे तत्वज्ञान के अकुर स्फुरित करता है । प्रथम और दूसरे पाठ मे व्यवहारोपयोगी और तत्व प्रवेश के प्रश्नोत्तर है । तीसरे पाठ में महावीर स्वामी से सम्बन्ध रखने वाले जानने योग्य हाल सरलता से समझ सकें इस तरह लिखे है । चौथे पाठ में देव, गुरू, धर्म, में सम्बन्धित न्याय पूर्वक श्रद्धा दृढ करे ऐसे प्रश्न रक्खे है । पाचवे, छट्ठे पाठ में सम्यग्ज्ञान सम्बन्धी प्रश्न कर उपयोगी हाल दिखाया है । सातवें पाठ में सम्यकदर्शन और आठवें में चारित्र्य तप और वीर्य की स्पष्ट समझ दी है । पाठ नौ. दस. ग्यारह और बारह ये नव तत्व के अपूर्व ज्ञानानन्द में

लीन करते हैं। तेरहवें पाठ में गुण स्थानक और चौदहवें में कर्म प्रकृति सम्बन्धी प्रश्न हैं। पंद्रहवें में त्रेसठ सलाके पुरुषों सम्बन्धी विविध हकीकत थोड़े में समझाई है और सोलहवें पाठ में ज्योतिष सम्बन्धी व्यवहारोपयोगी ज्ञान समझाया है। इस तरह इस छोटीसी पुस्तक में महाराज श्री ने सम्पूर्ण प्राथमिक ज्ञान भर दिया है।

जिस शाला की ओर से ये पुस्तकें गुजराती में प्रकाशित हुई है उनमें से यह " जैन प्रश्नोत्तर कुसुमावली " पाठशाला की पाठ्य पुस्तकों में नियत है और अनुभव से यह सिद्ध है कि प्राचीन रीति से नव तत्व, गुण स्थान, कर्म, प्रकृति, प्रभृति न रटाते आनन्द के साथ विशेष स्थिर ज्ञान इस पुस्तक से प्राप्त होजाता है।

ब्यावर नगर में "जैन पाठशाला" लगभग एक साल से जारी है इसके धार्मिक कार्स में अर्थ सहित प्रतिक्रमण व शालोपयोगी जैन प्रश्नोत्तर दोनों भाग को स्थान दिया है। तत्पश्चात इस पुस्तक को नियत किया गया है। समाज में विशेष ज्ञान वृद्धि के हेतु हम पाठकों के सम॰ इसे हिन्दी में छपाकर उपस्थित कर रहे हैं। इसके सा॰ ब्रह्मचर्य का प्रकरण भी दाखिल कर दिया गया है जि॰ से विद्यार्थीगण ब्रह्मचर्य के लाभ से परिचित होकर योग॰ समय तक ब्रह्मचारी रहने का प्रयत्न कर सकें। हम इ॰ पुस्तक के मूल लेखक व अनुवादक के आभारी हैं ॰ जिनकी कृपा से हम इसे हिन्दी जैन संसार के समक्ष रख॰

म समर्थ हुए हैं। यह पुस्तक उन सज्जनों को सादर अमूल्य भेट की जावेगी के जो "प्रतिक्रमण" शालोपयोगी जैन प्रश्नोत्तर दोनों भाग कण्ठस्थ कर चुके होंगे।

विनीत—

गिरधारीलाल अनराज सांखला
बेंगलोर

पुस्तक मिलने का पता:—

श्रीयुत पुनमचन्दजी खीवसरा,
बीचडली मोहल्ला ब्यावर (राजपूताना)

जैन पुस्तक माला से निकली हुई पुस्तकें।

प्रत्येक जैनी भाई का यह परमोच्च धर्म है कि वह पेट के लिये जैन पुस्तक विक्रेताओं के बजाय पुस्तकें हम से मंगाया करें ताकि हमें निस्वार्थ सेवा करने का विशेष रूप से सौभाग्य प्राप्त हो।

(१) जम्बुस्वामी चरित्र पृष्ठ ६० ।=)॥ १२ का ४) (२) सुदर्शन सेठ चरित्र पृष्ठ ४८ मूल्य =) २५ का २॥) (३) नारीधर्म निरुपण पृष्ठ-५२ मूल्य -)॥ १२ का १) (४) जैन शिक्षण पाठमाला पृष्ठ ६४ मूल्य =) ११ का १।) (५) वैराग्यशतक पृष्ठ २४ एक का -) १०० का ५) (६) मार्गानुसार के ३५ गुण पृष्ठ १६ मूल्य -) १०० ५) (७ जैन दर्शन जैन धर्म पृष्ठ १६ मूल्य ॥' २॥) सैकड़ा।

सुखसाधन ग्रन्थमाला के निकले हुए ग्रन्थ।

(१) उपदेशरत्नकोष पृष्ठ ५० मूल्य =)॥ ७ का १) (२) कर्त्तव्य कौमुदी मूल, भावार्थ, विवेचन सहित पृष्ठ ५०० मूल्य २) कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा तक १॥।) रुपया.

स्वीकृति मिलगई शीघ्र छपाई जावेगी।

श्री श्री १००८ श्री उपाध्याय जैन मुनि श्री आत्मारामजी रचित जैन धर्म शिक्षावली पहला, दूसरा, तीसरा और चौथा भाग जैन पाठशालाओं के कार्यकर्त्ताओं को थोक खरीदने पर लगभग लागत मात्र पर दी जावेगी।

पुस्तकें मिलने का पताः—

मोतीलाल रांका,

आनरेरी मैनेजर.

जैन पुस्तक प्रकाशक कार्यालय, ब्यावर (राजपूताना)

महामुनि श्री गुलाबचंदजी स्वामी और मुनिवर्य वीरजी स्वामी रचित अनेक पाठशालाओं में पढ़ाने तथा इनाम के लिये स्वीकृत ।

जैन शिक्षण पाठमाला पहला भाग ।

पृष्ठ ६४ मूल्य ≈) पाठशालाओं से ८) सैकड़ा.

इस पुस्तक पर जैन व अजैन पत्रों की सम्मतियां ।

(१) हिन्दी केसरीः—इसमें नीति, सदाचार, व्यवहार और धर्म क्रिया विषय पर उपदेश किये गये हैं । पुस्तक जैनों के काम की है ।

(२) जैन शासनः—आ पुस्तक धार्मिक शिक्षण लेवानी इच्छा राखनारा अभ्यासी ने घणी उपयोगी छे तेनी अन्दर पाठोंनी योजना करवामा आवी छे एकदर पुस्तक सारु छे ।

(३) विश्व विद्या प्रचारकः—पुस्तक में जैन मतानुकूल नीति बोध सदाचार, व्यसन का त्याग विषयों का उपदेश पाठक्रम से दिया है। जैन विद्यार्थियों के लिये बडे काम की पुस्तक है ।

(४) वेंकटेश्वर समाचारः—इस पुस्तक में पुरुषा और स्त्रियों दोनों को सदुपदेश दिये हे ।

(५) कान्फरेन्स प्रकाश'—यह पुस्तक यथा नाम तथा गुण वाली है प्रत्येक जैन पाठशाला के कार्यकर्त्ता को अपने २ कोर्स में रखकर विद्यार्थी को पढाने योग्य है।

(६) दिगम्बर जैनः—इसमें २५ पाठों में विद्यार्थी को पढ़ाने योग्य धर्म, नीति और व्यवहारिक विषय का उपदेश दिया गया है जैन पाठशाला में प्रवेश करने योग्य है।

(७) आदर्श जीवनः—जैन शाला ने भाषणू उपयोगी है।

(८) महावीरः—इसमें साधारण लोकों के लिये नीति बोध, सदाचार, व्यसन त्याग आदि विषयों के बारे में उपदेशात्मक वाक्य लिखे हैं।

(९) जैन पथ प्रदर्शकः—पाठशाला में पढाने योग्य इस पुस्तक में बालकों के काम की बातें हैं।

(१०) पचराजः—इस पुस्तक में नीति, सदाचार, व्यवहार और धर्म क्रिया इस चार विषयों पर छोटे २ वाक्यों में वर्णन किया है। पुस्तक उपदेश प्रद है इसमें २५ पाठ हैं। जैनी भाईयों के तो बड़े काम के है।

(११) जैनमित्रः—पुस्तक बहुत अच्छी और स्कूल के लडकों को शिक्षादायक है।

(१२) जैन हितैषीः—इसमें अनेक उपयोगी शिक्षाएं हैं।

(१३) अग्रवाल बन्धुः—इसमें धर्म और सदाचा सम्बन्धी विषयों पर २५ पाठ दिये गये हैं। प्रत्येक पा में अनेक वाक्य है।

श्री वीतरागायनमः ॥

जैन प्रश्नोत्तर कुसुमावली ॥

सामान्य प्रश्नोत्तर।

पाठ पहला.

१ प्रश्नः-धर्म किसे कहते हैं ?
उत्तर-जो दुर्गति में जाते हुए जीव को बचाता है।
२ प्र०-धर्म का मूल क्या है ? उ०-विनय।
३ प्र०-विनय का अर्थ कहो ? उ०-विशिष्ट नीति (न्याय)
४ प्र०-पाप का मूल क्या है ? उ०-लोभ।
५ प्र०-रोग का मूल क्या है ?
उ०-स्वादिष्ट वस्तु खाने का कुव्यसन।
६ प्र०-दुःख का मूल क्या है ? उ०-राग (स्नेह)।
७ प्र०-दुःख किसे कहते हैं ? उ०-परतन्त्रता।
८ प्र०-सुख किसे कहते हैं ? उ०-सज्ञान स्वतन्त्रता।
९ प्र०-सुख का निदान क्या है ? उ०-संतोष।
१० प्र०-संतोष का अर्थ कहो ? उ०-इच्छाओं की रोक।
११ प्र०-संसार में जागृत कौन है ? उ०-विवेकी, सम दृष्टि।
१२ प्र०-संसार में सुप्त कौन है ? उ०-अविवेकी, मिथ्या दृष्टि
१३ प्र०-संसार में मदिरा कौनसी है ? उ०-मोह।
१४ प्र०-संसार में अमृत कौनसा है ?
उ०-अनुभवियों का हितोपदेश।
१५ प्र० संसार में अग्नि कौनसी है ? उ०-ईर्षा।

१६ प्र०–गुरु कौन हो सक्ता है ?
उ०–जो आत्मा के हितार्थ उपदेश देता है।
१७ प्र०–हित का अर्थ क्या ? उ०–कर्म दुःख से मुक्त होना।
१८ प्र०–शिष्य किसे कहते हैं ?
उ०–जो गुरु की आज्ञा धारक और भक्तिकारक हो।
१६ प्र०–दरिद्री कौन है ? उ०–अधिक तृष्णावान् मनुष्य।
२० प्र०–श्रीमंत कौन है ? उ०–सर्वथा संतोषी।
२१ प्र०–मूर्ख कौन है ?
उ०–जो अमूल्य भव व्यर्थ गुमाता है।
२२ प्र०–चतुर कौन है ? उ०–जो जन्म सफल करता है।
२३ प्र०–शत्रु कौन है ? उ०–मनो विकार।
२४ प्र०–मित्र कौन है ? उ०–आत्म बोध।
२५ प्र०–नेत्र कौनसे ? उ० सद्विद्या।
२६ प्र०–अनित्य क्या है ? उ०–पौद्गलिक सर्व वस्तुएँ।
२७ प्र०–अचल क्या है ? उ०–परमात्म स्वरूप।
२८ प्र०–जगत का दास कौन है ?
उ०–जो आशा का दास है।
२६ प्र०–सब संसार किसका दास है ?
उ०–आशा जिसकी दासी है।
३० प्र०–जगत में गिरने का रास्ता कौनसा है ?
उ०–सात व्यसन की सेवकाई।
३१ प्र०–सात व्यसन कौनसे ?
उ०–जुआ, मांसाहार, मद्यपान, वैश्यागमन, शिकार, चोरी, पर स्त्रीसेवन।
३२ प्रश्न–क्या जानना मुश्किल है ?
उत्तर–स्वदोष तथा स्वस्वरूप।

३३ प्र०–बहिरा कौन है ? उ०–जो हित बोध नहीं सुनता है।
३४ प्र०–गूगा कौन है ?
उ० जिसे समय पर उचित बोलना न आवे।
३५ प्र०–अंधा कौन है ? उ०–विषय में आसक्त (कामी)
३६ प्र०–पशु कौन है ? उ०–अविवेकी।
३७ प्र०–शूरवीर कौन है ? उ०–मन को जीतने वाला।
३८ प्र०–जड़ का धर्म क्या है ?
उ०–सड़ना, गिरना, रूपान्तर होना।
३९ प्र०–चैतन्य का धर्म क्या है ? उ०–अविनाशीपना।
४० प्र०–जीव किसे कहते हैं ? उ०–जो प्राण से जीवित है।
४१ प्र०–अजीव किसे कहते हैं उ०–चैतन्य रहित जड़।
४२ प्र०–पुण्य किसे कहते हैं ?
उ०–जिन कर्मों का परिणाम इष्ट हो।
४३ प्र०–पाप किसे कहते है ?
उ०–जिन कर्मों का परिणाम अनिष्ट हो।
४४ प्र०–मोक्ष किसे कहते है ? उ०–सर्व कर्मों से मुक्त होना।
४५ प्र०–संसार किसे कहते हैं ?
उ०–जहाँ जन्म, मरन के चक्र चला करते हैं।
४६ प्र०–सम्पत्ति कितने प्रकार की है ?
उ०–दो, आसुरी, दैवी।
४७ प्र०–संसार का बीज क्या है ? उ०–राग और द्वेष।
४८ प्र०–क्या करना चाहिये ?
उ०–समझ कर अपना कर्तव्य।*
४९ प्र०–क्या न करना चाहिये ? उ०–अकर्तव्य।*

* "कर्त्तव्य अकर्त्तव्य" का ज्ञान प्राप्त करना हो तो "कर्त्तव्य कौमुदी" मूल भावार्थ विवेचन सहित २) भेजकर जैन पुस्तक प्रकाशक कार्यालय ब्यावर (राजपूताना) से मंगावें।

५० प्र०—किस राह पर चलना चाहिये ?
उ०—जिस राह से महा पुरुष गये हैं।

५१ प्र०—किस राह न जाना चाहिये ?
उ०—परमात्मा की आज्ञा न हो।

५२ प्र०—जीव मात्र के कितने शरीर हैं ?
उ०—दो सूक्ष्म और एक स्थूल, यों तीन।

५३ प्र०—ज्ञान का अर्थ क्या है ? उ०—यथार्थ जानना।

५४ प्र०—अज्ञान किसे कहते हैं ? उ०—विपरीत समझ।

५५ प्र०—चांडाल कौन है ?
उ०—विश्वासघाती, कृतघ्नी, मिथ्या साक्षी देने वाला, प्रचण्ड क्रोधी, ये चार कर्म चांडाल और पाँचवा जाति चाडाल।

५७ प्र०—साधु कौन है ? उ०—जो आत्म कार्य साधता है।

५८ प्र०—चतुर कौन है ? उ०—जो अवसर पहिचानता है।

५९ प्र०—विद्वान् कौन है ?
उ०—जो विद्या पढ़कर तदनुसार बर्ताव रखता है।

६० प्र०—पंडित कौन है? उ०—जो स्वाश्रय द्वारा श्रेय साधता है

६१ प्र०—पढ़ा हुआ कौन है ? उ०—जो संसार में न भुलाता है।

६२ प्र०—अकल का शत्रु कौन है ?
उ०—जो अपना रहस्य दुश्मन को बताता है।

६३ प्र०—अकल का बारदान कौन है ?
उ०—जो मूर्ख होकर पंडित बनता है।

६४ प्र०—व्यौपारी कौन है ?
उ०—जो न्यायानुसार व्यवहार में कुशल हो।

६५ प्र०—नृपति कौन है ?
उ०—जो मनुष्यों का न्याय पूर्वक पालन करता है

६६ प्र०—क्षत्री कौन है ?
उ०—जो नाश होते मनुष्य को रोक, रक्षा करता है।
६७ प्र०—ब्राह्मण कौन है ?
उ०—जो आत्म तत्त्व (ब्रह्म) पहिचानता है।
६८ प्र०—मनुष्य कौन है ? उ०—जिस में मनुष्यत्व हो।
६९ प्र०—मनुष्य होते पशु कौन है ?
उ०—जिसे सारासार और हिताहित का विचार या ज्ञान न हो।
७० प्र०—देव कौन है ? उ०—जिस में दिव्य गुण भरे हों।
७१ प्र०—शास्त्र का अर्थ क्या ?
उ० जिससे शिक्षा मिलती है।
७२ प्र०—सिद्धान्त का अर्थ क्या ?
उ०—जिसका अर्थ सिद्ध, (पूर्ण) हो।
७३ प्र—सूत्र किसे कहते हैं ?
उ०—जिस में मूल कम, और भावार्थ अधिक हो, या जिस में अक्षर कम, और अर्थ अधिक निकलता हो।
७४ प्र०—महत्ता का मूल क्या है ?
उ०—किसी से कुछ न मांगना।
७५ प्र०—अस्थिर वस्तु कौनसी ? उ०—धन, यौवन, आयुष्य
७६ प्र०—शल्य की तरह दुःखदाई कौन है ?
उ०—गुप्त कृत पाप कर्म।
७७ प्र०—उत्तम दान कौनसा ?
उ०—अभयदान और ज्ञानदान।
७८ प्र०—आदरने योग्य क्या है ? उ०—सद्गुरु के वचन।
७९ प्र०—पवित्र कौन है ? उ० -निष्कपटी अतःकरण वाला।

८० प्र०-अपना श्रेय करने वाला कौन है ? उ०-अपन ही हैं।
८१ प्र०-अपना अनिष्ट करने वाला कौन है ? उ०-अपन ही हैं।
८२ प्र०—अपन अपना अनिष्ट कैसे करते हैं ?
उ०—अज्ञानता के कारण।
८३ प्र०—क्या त्यागना मुश्किल है ? उ०—दुष्ट आशा।
८४ प्र०—समस्त संसार का गुलाम कौन है ?
उ०—जो आशा का गुलाम हो।
८५ प्र०—परम आपद का स्थान कौन सा है ?
उ०—अविवेक।
८६ प्र०—निर्भयता कब प्रकट होती है ?
उ०—अविद्या जब नाश होती है।
८७ प्र०—सच्चा खजाना कौन सा है ? उ०—सद् विद्या।
८८ प्र०—सद् विद्या क्या फल देती है ?
उ०—पर आधीनता का निवारण करती है।
८९ प्र०-सच्चा लाभ कौनसा ? उ०-आत्म स्वरूपकी पहिचान
९० प्र०—विश्व को किस ने जीता है ?
उ०—जिस ने मन जीत लिया है।
९१ प्र०—अभय का स्थान कौन सा ? उ०—यथार्थ वैराग्य।
९२ प्र०—समस्त संसार में उन्नत कौन है ?
उ०—निस्पृही मानव (निराशी)
९३ प्र०—दुःख कितने प्रकार के है ?
उ०—मानसिक और शारीरिक ऐसे दो।
९४ प्र०—मन कैसे जीता जा सक्ता है ?
उ०—वैराग्य मय अभ्यास से।
९५ प्र० -धर्म का स्वरूप क्या है ? उ०—परम दया।

९६ प्र०--धर्म वृक्ष का फल क्या है ? उ०--मोक्ष (निर्वाण)
९७ प्र०--मोक्ष का प्रथम चरण कौन सा है ?
उ०--सच्चे शास्त्र का श्रवण ।
९ प्र०--मोक्ष का बीज क्या है ?
उ०--सम्यक् ज्ञान (सच्चा ज्ञान)
९९ प्र०--मोक्ष फल का रस क्या है ? उ०--परमानद ।
१०० प्र०--परमानन्द स्वरूप किस का है ?
उ०--अपनी आत्मा का ।

सामान्य प्रश्नोत्तर ।

पाठ दूसरा.

१ प्रश्न-जीव के बंधन कितने है ? उत्तर-दो राग और द्वेष ।
२प्र -जीव कितनी तरह से दंडित होता है ?
उ० -तीन तरह से, मन, वचन और काया से ।
३ प्र०- कषाय कितने है ?
उ०--चार क्रोध, मान, माया, लोभ ।
४ प्र०--शल्य कितने है ?
उ०--तीन, माया, नियाण, मिथ्यात्व, ।
५ प्र०--गुप्ति कितनी है ? उ०--तीन, मन, वचन, कायागुप्ति
६ प्र०--विकथा कितनी है ?
उ०--चार, स्त्री, भात, राज, और देश कथा ।
७ प्र०--ध्यान कितने हैं ?
उ०-चार, आर्तध्यान, रौद्रध्यान, धर्म ध्यान, शुक्ल ध्यान ।
८ प्र०--ध्यान के और भी भेद है ? अगर है तो कौन से ?
उ०--चार भेद हैं-पदस्थ, पिंडस्थ, रूपस्थ, रूपातीत ।

९ प्र०—लेश्या कितनी है ?

उ०—छः कृष्ण, नील, कापुत, तेजू, पद्म, और शुक्ल लेश्या।

१० प्र०—भय कितने है ?

उ०—सात, इहलोक, परलोक, मृत्यु, अपयश, अकस्मात्, आदान, आजिविका।

११ प्र०—नय कितने हैं ?

उ०—सात, नैगम, संग्रह, व्यवहार, ऋजुसूत्र, शब्द, समभिरुढ, एवंभूत।

१२ प्र०—निक्षेपा कितने है ?

उ०—चार, नाम, स्थापन, द्रव्य, भाव, ।

१३ प्र०—ज्ञान कितने हैं ?

उ०—पाच, मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यव, केवल ज्ञान।

१४ प्र०—अज्ञान कितने है ?

उ०—तीन, मति, श्रुत, विभंग ज्ञान।

१५ प्र०—दृष्टि कितनी हैं, और कौनसी ?

उ०—तीन, समदृष्टि, मिथ्यादृष्टि, सममिथ्या दृष्टि, (मिश्र दृष्टि)

१६ प्र०- शास्त्र देखने में कितनी दृष्टि हो और कौनसी ?

उ०—पचीस, चार प्रमाण, चार निक्षेपा, सात नय द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, निश्चय, व्यवहार, विशेष, अविशेष कार्य, कारण।

१७ प्र०—चार प्रमाण कौन से ?

उ० [illegible] [illegible]नुमान, आगम, उपमा, ।

१८ प्र [illegible] है ? उ०—तीन तथा आठ !

१६ प्र०—तीन कौन से ?

उ०—बहिरात्मा अन्तरात्मा, और परमात्मा।

२० प्र०—आठ कौन से ?

उ०—द्रव्यात्मा, कषायात्मा, योगात्मा उपयोगात्मा, ज्ञानात्मा, दर्शनात्मा चरित्रात्मा, और वीर्यात्मा।

२१ प्र०—योग कितने ? उ०—तीन, छः और पंद्रह।

२२ प्र०—तीन कौन२ से?उ०—मनयोग, वचनयोग, कायायोग

२३ प्र०—पद्रह कौन से ?

उ०—सत्यमन, असत्यमन, मिश्रमन, व्यवहारमन, सत्य-भाषा, असत्यभाषा, मिश्रभाषा, व्यवहारभाषा, औदारिक, वैक्रिय, आहारिक, ये तीन और इन तीनों के मिश्र तथा कार्माण योगः—

२४ प्र०—छः कौन से ?

उ०—कर्म योग, ज्ञान योग, मंत्र योग, भक्ति योग, हठ योग, और राज योग।

२५ प्र०—आचार कितने हैं ?

उ०—चार, ज्ञानाचार, दर्शनाचार, तपाचार, और वीर्याचार।

२६ प्र०—राशि कितनी हैं ?

उ०—दो, जीव और अजीव, या व्यवहार और अव्य वहार।

२७ प्र०—रस कितने हैं ?

उ०—नौ है, शृंगार, वीर, करूणा, हास्य, रौद्र, भयानक अम्दुत, विभत्स और शांत रस।

२८ प्र०—भावना कितनी ? उ०—बारह और चार।

२६ प्र०—बारह कौन सी ?

उ॰--अनित्य भावना, अशरण भावना, संसार भावना
एकत्व भावना, अन्यत्व भावना, अशुचि भावना,
आश्रव भावना, संवर भावना, निर्जरा भावना,
लोक भावना, बोधि भावना, और धर्म भावना।

३० प्र॰--चार कौनसी ? उ॰--मैत्री, करुणा, प्रमोद, माध्यस्थ

३१ प्र॰--समवाय कितनी ?
उ॰--पांच, काल, स्व भाव, नियत, पूर्वकर्म, उद्यम

३२ प्र॰ -पाप कितने ? उ॰- प्राणातिपात आदि अठारह।

३३ प्र॰- कर्म के कितने भेद है ?
उ॰ -आठ, ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वदनीय,
मोहनीय, आयुष्य, नाम, गोत्र और अंतराय कर्म।

३४ प्र॰- प्राण कितने है ?
उ॰ दस॰ पाच इंद्रिय, मन, वचन, काया, श्वासो
श्वास, और आयुष्य ।

३५ प्र॰- सूत्र कितने प्रकार हैं ?
उ॰ -सात, विधि, उपदेश, आदेश, वर्णन, भय
उत्सर्ग, अपवाद ।

३६ प्र॰- प्रमाद कितने हैं ?
उ॰- पाचमद, विषय, कषाय, निंदा, विकथा ।

३७ प्र॰ तत्व कितने हैं ?
उ॰- नौ है, जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, संवर,
निर्जरा, बंध, मोक्ष ।

३८ प्र॰--द्रव्य कितने हैं ?
उ॰ छः धर्मास्ति काय, अधर्मास्ति काय, आकास्ति

काय, जीवास्ति काय, कालास्ति काय, और पौद्गलास्ति काय।

३९ प्र०--भाव कितने हैं ? उ०- प्रथम तीन, दूसरे तीन

४० प्र०--तीन कौन २ से ?

उ०- उत्तम, मध्यम, कनिष्ट, तथा चायक भाव, चयोप शम भाव, और उपशम भाव।

४१ प्र० -दोष कितने ?

उ०--तीन, अति व्याप्ति, अव्याप्ति, असभव।

४२ प्र० प्रर्याप्ति कितनी है ?

उ०- छः आहार, शरीर, इंद्रिय, श्वासोश्वास, भाषा और मन।

महावीर प्रभु सम्बन्धी प्रश्नोत्तर।

पाठ तीसरा.

१ प्रश्न--चौवीसवे तीर्थंकर कौन हुए ?

उत्तर- महावीर स्वामी।

२ प्र०--वे कौन से देवलोक से चल कर आये थे ?

उ० दसवें प्राणत देवलोक से।

३ प्र० कौन से गाव और किस के यहा ?

उ० महान कुण्ड गाव में ऋषभदत्त ब्राह्मण की स्त्री देवानन्दा के उदर में।

४ प्र० कौनसी तिथि को ? उ० आषाढ़ शुक्ला ६।

५ प्र० वहा कितने समय तक रहे ?

उ० साडे बयासी अहो रात्री।



२२ प्र०—उनकी आर्या कितनी हुई ? उ०—छत्तीस हजार।
२३ प्र०—उनके श्रावक कितने हुए ?
उ०—एक लाख और उन्सठ हजार।
२४ प्र०—उनके श्राविका कितनी हुई ?
उ०—तीन लाख अठारह हजार।
२५ प्र०—चौदह पूर्व के ज्ञान वाले कितने साधु थे ?
उ०—तीन सौ।
२६ प्र—अवधि ज्ञान वाले कितने हुए ? उ०—तेरह सौ।
२७ प्र०—मनपर्यव ज्ञानी कितने हुए ? उ०—पाच सौ।
२८ प्र०—वैक्रयलब्धिधारी कितने हुए ? उ०—सात सौ
२९ प्र०—केवल्यज्ञानी साधु कितने हुए ? उ०—सातसौ।
३० प्र०—उनकी कितनी आर्या मोक्ष पधारी ? उ०—चौदहसौ
३१ प्र०—अनुत्तर विमान में कितने साधु गये ? उ०—आठ सौ
३२ प्र०—प्रभु को केवल्यज्ञान कब हुआ ?
उ०—वैसाख सुद दसम को।
३३ प्र०—केवल्यज्ञान प्रगट हुए बाद उन्होंने पहिला काम कौनसा किया ?
उ०—चार तीर्थ की स्थापना करी।
३४ प्र०—चार तीर्थ कौनसे ?
उ०—साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका।
३५ प्र०—वे प्रभु मोक्ष कब गये ? उ०—कार्तिक बद ३०।
३६ प्र०—उनके गणधर के नाम कहो ?
उ०-इद्रभूति, अग्निभूति, वायुभूति, विगतभूति, सुधर्मास्वामि, मंडिपुत्रजी, मोरीपुत्रजी, अकम्पितजी, अचलजी, मेतारजजी, प्रभासजी।

३७ प्र०-उनके (प्रत्येक के) कितने २ शिष्य थे ?
उ०-प्रथम पांचके, पांचसौ, २ दोके साड़े तीन सौ, और अंत के चारों को तीन २ सौ शिष्य थे ऐसे ४४०० शिष्य थे।

३८ प्र०-महावीर स्वामी के मोक्ष पधारने पर केवल्यज्ञान किसे प्रकट हुआ, और गादी पर कौन बैठा ?
उ०-गौतम स्वामी को केवल्यज्ञान प्रकट हुआ, और सुधर्मास्वामी उनके पाट विराजे।

३९ प्र०-महावीर स्वामी के पश्चात गौतम स्वामी और सुधर्मास्वामी कब मोक्ष गये ?
उ०-गौतमस्वामी बारह वर्ष बाद, और सुधर्मास्वामी बीस वर्ष बाद मोक्ष गये।

४० प्र०-सुधर्मास्वामी के पश्चात कोन पाट विराजे, और वे कितने ज्ञानी थे ?
उ०-उनके पाट जम्बु स्वामी बैठे, और वे केवल ज्ञानी थे।

४१ प्र०-महावीर स्वामी के कितने वर्ष बाद जम्बूस्वामी मोक्ष पधारे।
उ०-चोसठ वर्ष पश्चात्।

४२ प्र०- उनके बाद कोन केवलज्ञानी हुवे ?
उ०-किसी को भी केवलज्ञान नहीं हुआ। चरम केवली श्री जम्बूस्वामी थे (उनके पश्चात्त भरत-क्षेत्र से केवलज्ञान विच्छेद गया)

४३ प्र०-जम्बूस्वामी के पश्चात कौन आचार्य हुए और वे कितने वर्ष बाद स्वर्ग पधारे

उ०—जम्बूस्वामी के पश्चात उनकी गादी प्रभवस्वामी को मिली, वे महावीर स्वामी के ७५ वर्ष बाद स्वर्ग गये, उनके पाट श्री संभवस्वामी हुए वे महावीरस्वामी से ९८ वर्ष बाद स्वर्ग गये। उनके पीछे यशोभद्र पाट पर विराजे, वे महावीरस्वामी के १४८ वर्ष बाद स्वर्ग गए। उनके दो शिष्य थे संभूतिविजय और, भद्रबाहु, सभूतिविजय, महाबीरस्वामी से १५६ वर्ष बाद और भद्रबाहु १७० वर्ष बाद स्वर्ग गए।

४४ प्र०-उन भद्रबाहु स्वामी को कितना ज्ञान था ?
उ०—चौदह पूर्व का ज्ञान था, उनके पश्चात कोई चौदह पूर्व के ज्ञान वाले साधु न हुए।

४५ प्र०—भद्रबाहु के शिष्य कौन हुए, और कितने ज्ञानी थे ?
उ०—स्थूली भद्रजी थे, और वे दस पूर्व के ज्ञानी थे. उन के पश्चात् पूर्व का ज्ञान धीरे २ कम होता गया।

६४ प्र०—जैन सूत्र सिद्धान्त किसने लिखे ?
उ०-देवीर्धगणि क्षमाश्रम ने।

४७ प्र०—वे महावीर स्वामी के कितने पाट बाद हुए ?
उ०—सत्तावीसवें पाट पर बैठे।

४८ प्र०— पुस्तकें किस ग्राम में लिखी ?
उ० वल्लभीपुर में (वला में)

४९ प्र०—महावीर स्वामी से कितने वर्ष बाद पुस्तकें लिखी गई ? उ०-९८० वर्ष पश्चात्।

५० प्र०—सूत्र किसने संगठित किये ?
उ०—सुधर्मा स्वामी गणधर ने।

५१ प्र०—महावीर स्वामी ने बेले कितने किये ?
उ०—दो सो उन्तीस।
५२ प्र०—तेले कितने किये ? उ०—बारह।
५३ प्र०—उपवास कितने किये ?
उ०—पंद्रह २ दिन के अर्धमास क्षमण १२, डेढ मासी दो, दो मासी ६, ढ़ाई मासी दो, तीन मासी दो, चार मासी नो, छः मासी दो।
५४ प्र०—साडे बारह वर्ष और पंद्रह दिन में कितनी नींद ली ? उ०— दो घडी।
५५ प्र०—मोक्ष गये तब कौनसा नक्षत्र था ?
उ०—स्वाति।
५६ प्र०—महावीर स्वामी के च्यवन, हरण, जन्म, और केवलज्ञान प्रकट होते समय कौन २ से नक्षत्र थे ?
उ०—इन पांचों अवसर पर उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र था।
५७ प्र०—उन्होंने दिक्षा कितने जनों के साथ ली थी ?
उ०—अकेले ने ही।
५८ प्र०—साड़े बारह वर्ष और पंद्रह दिन में उन्होंने भोजन कितने दिन किया ? उ०—तीनसो उंच्चास दिन।
५६ प्र०—उन्होंने एक २ उपवास कितने किये ?
उ०—उन्होंने एक २ उपवास किया ही नहीं कम से कम एक साथ दो उपवास किये हैं।

देव गुरु धर्म सम्बन्धी प्रश्नोत्तर।

पाठ चौथा।

१ प्र०–देव किसे कहते है ?
उ०–अठारह दोष रहित हो।

२ प्र०–अठारह दोष कौन से ?
उ०–दानांतराय, लाभांतराय, भोगांतराय, उपभोगांतराय, वीर्यांतराय, हास्य, रति, अरति, भय, शोक, निंदा, काम, मिथ्यात्व, अज्ञान, निंद्रा, अविरत्ति, राग, द्वेष।

३ प्र०–देव के शरीर होते या नहीं ?
उ०–शरीर रहित और सहित भी देव होते है।

४ प्र०–शरीर सहित देव कोन हैं ?
उ०–जिन्होनें चार घनघाती कर्म नष्ट किये हैं।

५ प्रश्न–घनघाती कर्म कौन से ?
उ०–ज्ञानावर्णीय, दर्शनावर्णीय, मोहनीय, अंतरायकर्म।

६ प्र०–जब घनघाती कर्मों का नाश होता है तब कौनसा ज्ञान प्रकट होता है ? उ०–केवल्यज्ञान।

७ प्र०–ऐसे केवल्यज्ञानी कितने प्रकार के होते है ?
उ०–दो, सामान्य केवली, तीर्थंकर केवली।

८ प्र०–सामान्य केवली का अर्थ क्या है।
उ०–चाहे जो हलु कर्मी मनुष्य सदबोद्ध सुनकर आत्मस्वरूप को पहिचान परम पुरुपार्थ द्वारा केवल्य ज्ञान प्राप्त करते है, उन्हें सामान्य केवली कहते हैं।

९ प्र०—अन्य मनुष्य की अपेक्षा केवलज्ञान प्राप्त होने वाले मुमुक्षु में किसी बात की सच्ची आवश्यक्ता होती है।

उ०—हां, उनका शरीर, वज्र ऋषभ नाराच संघयण वाला, तथा पूर्ण आयुष्य को पाने वाला अवश्य होता है।

१० प्र०—तीर्थंकर केवली की पहिचान कहिये?

उ०—जगत के उद्धारक इन महापुरुषों का जन्म अमुक समय में ही होता है, और दूसरे मनुष्यों की अपेक्षा इनका अपूर्व सामर्थ्य अपूर्व तेज, अपूर्व ज्ञान, अपूर्व शक्ति और अपूर्व प्रभाव होता है। ये परम पुरुष अमुक काल तक गृहस्थाश्रम में रह कर उचित समय मे गृस्थाश्रम त्याग संयम ग्रहण करते है।

११ प्र०— उन्हें सयम की दिक्षा कौन देता है?

उ०—उन्हें गुरु की अपेक्षा नहीं रहती इसलिये वे स्वय दिक्षा ग्रहण करते हैं।

१२ प्र०—दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात वे किस प्रवृती में लगते है।

उ०—पूर्व कृत संचित कर्मों को दग्ध करने के लिये तपश्चर्या करते है, हमेशा निंजन प्रदेश में रहते है, और आत्म ध्यान ध्याते है, जबतक केवल ज्ञान प्रकट न हो वहा तक किसी को उपदेशक की तरह उपदेश नहीं देते।

प्र०–उनके कितने लक्षण होते है ?

उ०–एक हजार आठ।

प्र०–केवलज्ञान प्रकट होने पर पहिले वे क्या करते है ?

उ०–साधु, साध्वी श्रावक, श्राविका इन चार तीर्थों की स्थापना करते है और इसीलिये वे तीर्थकर कहलाते हैं।

प्र०–वे तीर्थंकर मुख्य कितने धर्म (कर्तव्य) का प्रतिपादन करते है ?

उ०–(गृहस्थ) आगार धर्म, और (त्यागी) अणगार धर्म इन दो का।

६ प्र०–उनके मुख्य और प्रभाविक शिष्यों का नाम क्या होता है ? उत्तर-गणधर।

७ प्र०–उन तीर्थंकर महाराज के दूसरे नाम कहो ?

उ०–अरिहंतदेव, जिनेश्वर, परमात्म, प्रभु ऐसे अनेक गुण सम्पन्न नाम है।

८ प्र० अरिहंत के गुण कितने ?

उ०–गुण तो अनंत है परंतु पुद्गल संयोगी बारह गुण गिनते हैं।

९ प्र०–ये प्रभु अशरीरी कब होते है ?

उ०–आयुष्य, नाम, गोत्र, वेदनीय इन चारों कर्मों का (जो प्रारब्ध से है) नाश होता है, तब तीनों शरीर से मुक्त हो परम धाम प्राप्त करते हैं और अशरीरी बनते है।

१० प्र०–वे अशरीरी केवली प्रभु किस नाम से पहिचाने जाते हैं ? उ०–सिद्ध परमात्मा के नाम से।

२१ प्र०—उनका आकार होता है या नहीं ?

उ०—नही वे निराकार, निरजन, अरुपी और परमज्ञान मय होते है।

२२ प्र०—वे सिद्ध प्रभु जगत से क्या व्यवहार रखते हैं ?

उ०—उन्हें कुछ कार्य करना शेष नहीं रहा, इसलिये वे कुछ भी व्यवहार नही रखते।

२३ प्र० -वे सिद्ध प्रभु किसी भी समय इस संसार में आवें या नहीं ?

उ०—उनका जनम मृत्यु नाश होगया है इसलिये वे इस संसार में भी नहीं आसकते।

२४ प्र०- इस संसार का कर्ता कौन है ?

उ०-दुनिया आदि रहित है, इसलिये इसका कर्ता कोई नहीं।

२५ प्र०—बनाने वाले के बिना यह दुनिया किस तरह बनगई ?

उ०—जो वस्तु अनादि होती है, वह किस तरह बनी वह प्रश्न ही नहीं होसक्ता।

२६ प्र०—किसी ने नहीं बनाई यह आप किस आधार से कहते है ?

उ०-किसी समय की बनी हुई वस्तु हो तो उसका किसी समय नाश भी होता है, परन्तु इस दुनिया का नाश नहीं होता, इसलिये यह प्राकृतिक बिना बनाई अनादि काल मे है ऐसा सिद्ध होता है।

२७ प्र०—दुनियां की दिन प्रति दिन हानि, वृद्धि दृष्टिगत होती है, असंख्य प्राणी जन्म लेते है और

मरते हैं। असंख्य भव्य पदार्थ नष्ट हो जाते हैं तो भी नाश नहीं होता किस तरह कहते हो ?

उ०—दुनियां की प्रत्येक वस्तु का रुपान्तर होता है, सिर्फ स्थूल दृष्टि से हानि वृद्धि दिखती है परन्तु सचमुच में एक परमाणु का रासानियक प्रयोग से भी नाश नहीं होता, और न नया उत्पन्न होता है, इसलिये दुनिया परमाणु रूप से नित्य और कार्य रूप से अनित्य है।

२८ प्र०—कर्ता जो ईश्वर नहीं तो जीवों को सुख दुख देने वाला कौन है ?

उ०—प्राणी मात्र अपने कर्मानुसार सुख दुख भोगता है, इसमें परमात्मा को बीच में आने की आवश्यकता नहीं रहती ?

२९ प्र०—कर्म जड या चेतन्य हैं ? उ०—कर्म जड़ है।

३० प्र०—जो जड है वे प्राणी को सुख दुख कैसे दे सकते हैं, इस प्राणी ने इतना पाप पुण्य किया इसलिये इसे इतना सुख दुख मिलना चाहिये, ऐसा ज्ञान उस जड को कैसे हो जाता है ?

उ०—जिस प्रकार विप खाने से शरीर में पीडा दुःख हो ऐसा गुण विप में है, और पौष्टिक खुराक खाने से शरीर में शांति सुख हो यह पौष्टिक खुराक का गुण है इसी तरह प्रत्येक पदार्थ में शुभ अशुभ असर करने का गुण है, विप या अमृत को सुख दुख प्राप्त करने का ज्ञान नहीं तो भी उनका जैसा

स्वभाव है वैसा असर वे उस वस्तु को काम में लाने वाले प्राणी के साथ करते हैं।

३१ प्र०-जिस तरह विष या अमृत के खाने या उपयोग में लाने से वे असर करते है, उसी तरह क्या कर्म असर करते है ? कर्म क्या वैसी वस्तु है ?

उ –जिस प्रकार विष या अमृत से सुख दुख होता है उसी तरह कर्म से सुख दुख होता है विष और अमृत जिस प्रकार शुभाशुभ परमाणु पुद्गल का समूह है उसी तरह कर्म भी शुभाशुभ परमाणु का समूह है सिर्फ विष और अमृत स्थूल है और कर्म पुद्गल सूक्ष्म है।

३२ प्र०–विष या अमृतादि पदार्थ जिस तरह शरीर के अमुक २ भाग में से प्रवेश करते है, उसी तरह कर्म कैसे प्रवेश करते है ?

उ०–प्राणी मात्र जैसे विचार, इच्छा, अध्यवसाय, मन के संकल्प अथवा आवश्यकताएं रखते है, वैसे परमाणु पुद्गलों के समूह मन द्वारा ग्रहण करते है और वे पुद्गलों के समूह राग द्वेष वाली आत्मा के साथ क्षीरनीर के समान मिल जाते हैं तब कर्मदल कहलाते है।

३३ प्र०–वे कर्म दल प्राणियों को सुख दुख कर देते हैं

उ०–जब तक वे कर्मदल सत्ताधीन हो (संचित रुप में हो) तब तक कुछ भी नहीं करते, परन्तु जब वे कर्मोदय होते है (प्रारब्ध में आते हैं) तब प्राणी सुख दुख का अनुभव करता है।

१४ प्र०—जीव को ऊच नीच गति प्राप्त कराने वाला कौन है ?

उ०—कर्माधीन प्राणी स्वतः के कर्मवश जिस गति में जाने योग्य होता है उस गति में जाता है।

१५ प्र०—जीव को कर्मों से सुख दुःख होता है तब कोई मनुष्य कर्म की स्तुति करे भजन करे, अगर उस के नाम की माला फेरे, तो उस मनुष्य को कर्म सुख दे सके या नहीं ? उ०—नहीं।

१६ प्र०—क्यों न करे ? उदाहरण देकर समझाओ ?

उ०—जिस तरह जहर खाने वाला मनुष्य विष उतारने वास्ते विष की स्तुति करे, भजन करे, अथवा उस के नाम की माला फेरे तो उस से जहर नहीं उतर सक्ता उसी तरह कर्म की स्तुति करने से कुछ नहीं हो सक्ता।

१७ प्र०—परमात्मा की स्तुति करने से या भजन करने से वे परमात्मा अपना भला कर सके हैं या नहीं ?

उ०—नहीं परमपद प्राप्त परमात्मा किसी का भला या बुरा करने की इच्छा नहीं करते।

१८ प्र०—जब वे किसी का भला या बुरा कुछ नहीं कर सके तो उनका भजन करने से क्या लाभ है ? और उन से प्रतिकूल रहने में क्या हानि है ?

उ०—जीव जैसी भावना या क्रिया करता है, उसका उसे अवश्य फल मिलता है परमात्मा का

स्मरण, कीर्तन, ध्यान, भजन, ये उत्तम भावनाएं और उच्च क्रियाएं है। उन पर पवित्र का ध्यान धरने वाला स्वयं पवित्र हो जाय ऐसा उन प्रभु में अलौकिक गुण हैं। और उन प्रभु से प्रतिकूल रहने वाला अपनी अनिष्ट भावनाओं, और क्रियाओं से अपने स्वतः का अज्ञानता, के कारण अनिष्ट कर लेता है।

३९ प्र०—परमात्मा हमारा भला करेगा, इस आशा से मनुष्य उनका स्मरण या स्तुति करते हैं तो उन्हें फल मिलता है या नहीं ?

उ०—परमात्मा का नाम ही मंगल रूप है, इसलिये जितने प्रेम और शुद्ध मन से उनका स्मरण करें उतना लाभ अवश्य प्राप्त होता है।

४० प्र०—कोई मनुष्य अपना व्यवहार न सुधारे, और सिर्फ परमात्मा का स्मरण ही करता रहे तो उसका भला हो सक्ता है या नहीं ?

उ०—प्रभु का स्मरण करने वाला जो अपना व्यवहार खराब रक्खेगा, तो उसे स्मरण करना ही न रुचेगा, श्रेय की इच्छा रखने वालों को स्मरण के साथ अपना व्यवहार भी सुधारना चाहिये।

गुरु.

४१ प्र०—गुरु किसे कहते है ?

उ०—आत्मस्वरूप को पहिचान उसके कल्याणार्थ यथार्थ मार्ग पहिचान कर उस राह पर चलते हैं और दूसरों को चलाते हैं उन्हें गुरु कहते हैं।

४२ प्र०–जिस मार्ग से वे चलते है वह आत्मकल्याण का सच्चा मार्ग है या झूठा, यह कैसे समझ सक्ते है ?

उ०–जो महात्मा आत्मा के कल्याणार्थ सच्चे मार्ग से चलते हैं यह उनके स्वभाव प्रकृति, आचार, विचार पर से समझा जाता है।

४३ प्र०–आत्म कल्याण का सच्चा मार्ग कैसा होगा ?

उ०–भवसागर से पार पाने के लिये वीतराग प्रभु ने जिस मार्ग का प्रतिपादन किया है वही मार्ग सच्चा है।

४४ प्र०–उन मोक्ष मार्ग में जाने वाले महात्माओं के व्रत नियम कैसे हैं ?

उ०–अहिंसा आदि पाच महाव्रत, पाच सुमति और तीन गुप्ति का पालन करना बाह्य और अभ्यन्तर दोनो प्रकार के परिग्रह, मोह, माया से दूर रहना यति के क्षमा आदि दस गुणों का धारण करना,- विषय कषाय से विरक्त रहना और हमेशा अपने तथा दूसरों के हित होनेका का प्रयत्न करना।

४५ प्र०–गुरु अपने शिष्य को तार कर मोक्ष बदर तक ले आसक्ते हैं ?

उ०–सद्गुरु तो तिरने की कला सिखाते हैं और कठनाईया समझा देते हैं रस्ता बताते और शका निवारण कर देते है तिरना यह प्रत्येक शिष्य को स्वतः का कार्य है। किसी भी समय गुरु

शिष्य को मोक्ष पहुंचा देते है यह नहीं हो सक्ता ।

४६ प्र०—हितोपदेश कर्ता गुरु की सेवा करने मे क्या फल प्राप्त होता है ?

उ०—सदगुरु अपूर्व समझ कराके अपनी अनादि की अज्ञान दशा टालने के निमित्त ननते है । इनके परिचय से अपनी भ्रांति टलती है, मान गलता है, मिथ्यात्व का नाश होता है और अंत में आत्मकल्याण के सुख प्राप्त कर सकते हैं ।

धर्म

४७ प्र०—धर्म किसे कहते हैं ?

उ०—दुर्गति में जाते हुए जीव को बचाले उसे धर्म कहते हैं ।

४८ प्र०—ऐसे धर्म का लक्षण क्या है ? उ०—अहिंसा ।

४९ प्र०—धर्म की नींव क्या और स्वरूप क्या है ?

उ०—न्याय धर्म की नींव और सत्य यह धर्म का स्वरूप है ।

५० प्र०—धर्म का व्यवहारिक अर्थ क्या है ?

उ०—कर्तव्य (फरज) ।

५१ प्र०—धर्म का अर्थ कर्तव्य कैसे हुआ ?

उ०—कर्तव्य अर्थात करने योग्य काम और करने योग्य कार्य यही मनुष्य मात्र का धर्म है ।

५२ प्र०—करने योग्य कार्य सबका एकसा या भिन्न २ होता है ?

उ०—अधिकार पर से प्रत्येक के कर्तव्य थोड़े बहुत अंश में भिन्न २ होते हैं।

५३ प्र०—भिन्न २ कर्तव्यों के थोड़े बहुत दाखले देकर समझाओ?

उ०—गुरु के साथ शिष्य का, शिष्य के साथ गुरु का, राजा के साथ प्रजा का और प्रजा के साथ राजा का इसी तरह पिता पुत्र का परस्पर, पति पत्नी का परस्पर ऐसे ही मित्र भाई, उपकारी, शरणागत, अनुयायी अपने से हलकी जाति के प्राणी, अपने से उच्च जाति के प्राणी, इसी तरह एक दूसरे के भिन्न २ कर्तव्य होते है।

५४ प्र०—गुरु के साथ शिष्य का क्या कर्तव्य है?

उ०—गुरु की भक्ति करना और उनके कथनानुसार व्यवहार करना।

५५ प्र०—शिष्य के साथ गुरु का क्या कर्तव्य है?

उ०—शिष्य की योग्यतानुसार उसे ज्ञान सिखाना और हित राह दिखाना।

५६ प्र०—प्रजा के साथ राजा का क्या कर्तव्य है?

उ०—प्रजा शांति में रहे ऐसे प्रयत्न करना, सदा सुलह शांति व्याप्त रहे इसलिये क़ायदे बना कर न्याय पूर्वक प्रजा का पालन करना और जिस तरह प्रजा की आबादी बढ़े वैसा करना।

५७ प्र०—राजा के साथ प्रजा का क्या कर्तव्य है?

उ०—ऐसे न्यायी निपुण नृपकी आज्ञा सिरोधार्य कर उन की उन्नति चाहना और उनके हमेशा कृतज्ञ रहना।

५८ प्र०–पुत्र के साथ माता पिता का क्या कर्त्तव्य है ?
उ०–पुत्र को बालवय से ही शुभ संस्कार में लगाना, कुटेवों से वंचित रखना विद्याभ्यास कराना और दुनिया में श्रेष्ठ पुरुषों की तरह जीवन व्यतीत कर सकें ऐसे कुशल बनाने का प्रयत्न करना।

५६ प्र०–माता पिता के साथ पुत्र का क्या कर्तव्य है ?
उ०–उनकी सेवा करना, उनके अत्यन्त उपकार को कभी न भूलना, अपनी योग्यता प्रकटित होने पर उनका भार उतार कर धर्म ध्यान और शांति में जीवन व्यतीत करें ऐसी सहूलियत कर देना।

६० प्र०–पति पत्नी का परस्पर क्या कर्तव्य है ?
उ०–परस्पर प्रेम रखना, एक दूसरे की भूल सुधारना, अन्योन्य हित चाहना, मान करना, मदद देना, आपत्ति में सहायक होना, दुख में भाग लेना, स्वार्थ न साधना और भविष्य की प्रजा के हृदय में उत्तम संस्कार के बीजारोपण करना।

६१ प्र०–मित्र के साथ क्या कर्तव्य है ?
उ०–उन से माया-कपट न करना, हितचिंतक बनना खराब राह पर जाता हो तो सत्तराह पर लगाना. दुःख में दुखी होना और किसी प्रकार उन से भेद भाव न रखना।

६२ प्र०–उपकारी के साथ क्या कर्त्तव्य है?
उ०–उपकारी का योग्य सत्कार करना और जहा

तक बन सके उनके उपकार का बदला चुकाने की भरसक कोशिश करना।

६३ प्र०—शरणागत के साथ अपना क्या कर्त्तव्य ?

उ०—सानुकूलतानुसार सहायता करना, उनकी याचना पर लक्ष देना परन्तु लापरवाह न होना।

६४ प्र०—अनुयायियों के साथ क्या कर्त्तव्य है ?

उ०—उन्हें सुधारना, सुखी करना, सत्तराह लगाना, और उनका जीवन सुख से व्यतित हो ऐसा प्रयत्न करना।

६५ प्र०—अपने से उच्च पुरुषों के साथ अपना क्या कर्त्तव्य है ?

उ०—उन पर पूज्य भाव रखना, उनकी उच्चता, योग्यता का अनुकरण करना और उनके उत्तम गुण देखकर प्रमुदित होना परन्तु इर्षा न करना।

६६ प्र०—अपने से हलके प्राणियों के साथ अपना क्या कर्त्तव्य है ?

उ०—उनपर दया करना, उनके दोष और अपूर्णता देख आकुल न होने या घृणा न करते उन्हें दोष मुक्त करने का प्रयत्न करना और अपने से बने उतना उनका भला चाहना और करना।

६७ प्र०—गृहस्थाश्रम के कार्य करना धर्म कैसे कहा जाता है।

उ०—धर्म के दो विभाग हैं। एक गृहस्थाश्रम का धर्म और दूसरा त्यागाश्रम का धर्म। गृहस्थ को गृस्थाश्रम के नियमों का पालन करना ही उनका धर्म है।

६८ प्र०—धर्म का दूसरा अर्थ किया ?

उ०—स्वभाव।

६९ प्र०—धर्म का अर्थ स्वभाव कैसे किया ?

उ०—चेतन और अचेतन प्रत्येक पुद्गल के भिन्न २ स्वभाव हैं वे उनके धर्म हैं।

७० प्र०—सब पुद्गलों का सामान्य धर्म क्या है ?

उ०—मिलना, भिन्न होना, रूपान्तर होना, नये जूने होना, सूक्ष्म स्थूल पना धारण कर वर्ण, गंध, रस, स्पर्श का पलटाना यही धर्म (स्वभाव) पुद्गल का है।

७१ प्र०—चेतन का धर्म क्या है ?

उ०—सदा स्वउपयोगी, सच्चिदानन्द स्वरूप में लीन, परम ज्ञान में रमन यही शुद्ध चेतन का धर्म (स्वभाव) है।

७२ प्र०—चेतन में शुद्ध और अशुद्ध यह क्या ?

उ०—चेतन जब तक जड (शरीर और कर्मों के) साथ है तबतक अशुद्ध है और जब कर्मों से बिलकुल मुक्त होजाता है तब शुद्ध समझा जाता है।

७३ प्र०—जड के साथी चेतन अपने ही धर्म का पालन करते हैं या अन्य धर्म का ?

उ०—जड़ के साथ अति सम्बन्ध होने से जड़ का धर्म ही अपने में स्थित कर लेता है जिससे जड़ के विकारों से, अपने में विकार और जड के गलन पलन में अपना गलन पलन समझता है

और अनेक अकार्य करता है ये सब उसके स्वत के धर्म विरुद्ध हैं। परन्तु जब जड़ और चेतन के धर्म जान समझ कर पर भाव को त्याग स्वभाव में रहने का प्रयत्न करता है, तब कर्मों की निर्जरा होती है, और उस समय वह अपने धर्म का सेवन कर रहा है ऐसा समझा जाता है।

७४ प्र०—गृहस्थाश्रम धर्म का पालक कब समझा जाता है?

उ०—विवेक पूर्वक अहिंसादि पाच अणुव्रतों का पालन करता हुआ सेवा धर्म की चाह रखता है, दुखी को विश्राम भूत होता है, सत्य प्रिय बनता है, परोपकार से प्रेम रख निर्दोष जीवन व्यतीत करता है, वह गृहस्थ धर्म का पालक समझा जाता है।

७५ प्र०—सांचिप्त में देव गुरु और धर्म का अर्थ कहो?

उ०—सब कर्मों से विमुक्त, आत्म स्वरूप प्रकट कर अनन्त सुख के भोक्ता हुए वे देव वीतराग के प्रतिपादन किये हुए मार्ग पर चलने वाले, आत्म कल्याण के साधने और अन्य को सधाने वाले गुरु और आत्म कल्याण साधने की जो सर्वोत्तम क्रिया है कि जिस क्रिया से दोषों का समूल नाश होता है और आत्मा की स्वतन्त्रता प्रकट होती है उस क्रिया का नाम धर्म की क्रिया है।

समयूक ज्ञान ।

परोक्ष ज्ञान (पाठ पाँचवां)

१ प्रश्न—मोक्ष प्राप्त करने के मुख्य साधन कितने हैं ? उत्तर चार, सम्यक्ज्ञान, सम्यक्दर्शन, सम्यक्चारित्र और विशुद्ध तप।

२ प्र०—ज्ञान का अर्थ क्या ? उ०—किसी भी वस्तु को उसके नाम, गुण, जाति क्रिया और स्वरूप से विशेष समझना वह ।

३ प्र०—ज्ञान के कितने भेद है ? उ०—पांच, मतिज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधि ज्ञान, मनःपर्यव ज्ञान, केवल ज्ञान

४ प्र०—इन पाचों के संक्षिप्त भेद कितने ? उ०—दो प्रत्यक्ष और परोक्ष ।

५ प्र०—परोक्ष ज्ञान कितने ? उ०—मतिज्ञान, श्रुतज्ञान।

६ प्र०-मतिज्ञान का अर्थ क्या ? उ०-इन्द्रियों मन के द्वारा मति से जानना वह मति ज्ञान है।

७ प्र०—मति ज्ञान का दूसरा नाम क्या है ? उ०—आभिनिबोधिक ।

८ प्र०-मतिज्ञान के कितने भेद है ? उ०-दो, श्रुत निश्रित, अश्रुत निश्रित् ।

९ प्र०—श्रुत निश्रित के कितने भेद है ? उ०—चार, अवग्रह, ईहा, अपाय, धारणा ।

१० प्र०—अवग्रह अर्थात् क्या ? उ०-किसी भी वस्तु की सामान्यता (-अनिमिलता) समझना ।

११ प्र०—अवग्रह के कितने भेद हैं? उ०—दो व्यंजनावग्रह, अर्थावग्रह।

१२ प्र०—व्यंजनावग्रह का अर्थ क्या? उ०—किसी पदार्थ का इन्द्रियों के साथ सम्बन्ध होना।

१३ प्र०-अर्थावग्रह का क्या अर्थ है? उ०—वस्तु के भाव को सामान्य रीति से समझना।

१४ प्र०—अर्थावग्रह के कितने भेद हैं? उ०—छः, पाच इन्द्री और छट्ठा मन, इन छः पदार्थों के अर्थ का अवग्रह अर्थात बोध होता है।

१५ प्र०-व्यजनावग्रह के कितने भेद हैं? उ०—चार, श्रुत घ्राण, रस, स्पर्श, ये ४ इन्द्रिया (चक्षु और मन इन दो का व्यजनावग्रह नहीं होता)।

१६ प्र०—ईहा का अर्थ क्या है? उ०—सामान्य रीति से जानी हुई वस्तु पर विशेष विचार करना।

१७ प्र०—अवाय का अर्थ क्या है? उ०—विचार किये पश्चात् उसका निश्चय करना।

१८ प्र०—धारणा का अर्थ क्या है? उ०—उस निश्चित की हुई को धारण करना यह।

१९ प्र०—ईहा, अवाय, और धारणा के कितने भेद हैं? उ०—प्रत्येक के छः २ भेद, पाच इन्द्री और छट्ठा मन, तीनों के मिलकर अठारह भेद होते हैं।

२० प्र०—श्रुत निमित के कुल कितने भेद हुए? उ०—अर्थावग्रह के छः, व्यजनावग्रह के चार, ईहा, अवाय, धारणा, के छः छः सब २८ भेद हुए।

२१ प्र०—श्रुत निश्रित का अर्थ क्या है ? उ०—श्रुत अर्थात् सुनकर उसके अर्थ का विचार करना ।

२२ प्र०—अश्रुत निश्रित अर्थात् क्या ? उ०—स्वतः की बुद्धि फैलना ।

२३ प्र०—अश्रुत निश्रित के कितने भेद है ? उ०—उत्पातिया, विनिया, कम्मिया, परणामिया ये चार प्रकार की बुद्धि हैं ।

२४ प्र० औतपातकी का अर्थ क्या ? उ०—अपने स्वतः की सहज ही में बुद्धि उत्पन्न होजाय (बीरबल बादशाह की तरह) ।

२५ प्र०—वैनयिकी का अर्थ क्या ? उ०—गुरु प्रभृति का विनय करते बुद्धि प्राप्त हो ।

२६ प्र०—कार्मिकी अर्थात् क्या ? उ०—अभ्यास करते बुद्धि उत्पन्न हो ।

२७ प्र०—परिणामिकी अर्थात् क्या ? उ०—ज्यों २ वय की वृद्धि हो बुद्धि बढ़ती जाय ।

२८ प्र०—पूर्व भव का जिससे स्मरण होजाय वह कौनसा ज्ञान है ? उ०—जाति स्मरण ज्ञान ।

२९ प्र०—यह ज्ञान पाच ज्ञान में किस ज्ञान का भेद है ? उ०—मति ज्ञान का ।

३० प्र०—श्रुत ज्ञान का अर्थ क्या ? उ०—शब्द ज्ञान अथवा शास्त्र ज्ञान ।

३१ प्र०—यह ज्ञान मतिज्ञान सिवाय किसी को होता है ? उ०—नहीं, मतिज्ञान होता है उसे श्रुत ज्ञान होता है और श्रुत ज्ञान हो उसे मतिज्ञान, श्रुत बिना मति

ज्ञान नहीं हो सक्ता और मतिज्ञान विना श्रुतज्ञान नहीं हो सकता।

३२ प्र०–श्रुतज्ञान कितने तरह का होता है? उ०–दो दो भाग करें ऐसे सात जाति का श्रुत ज्ञान होता है (सब मिलकर १४ जाति का)

३३ प्र०–इन चौदह जाति के नाम कहो? उ०–अक्षरश्रुत अनक्षरश्रुत, सञ्जीश्रुत, असंज्ञीश्रुत, सम्यक्श्रुत, मिथ्याश्रुत, सादिश्रुत, अनादिश्रुत, सपर्यवसित-श्रुत, अपर्यवसितश्रुत, गमिकश्रुत, अगामिकश्रुत, अंग, प्रविष्ठ और अग बाहिर ये १४ भेद।

३४ प्र०–अक्षरश्रुत के कितने भेद हैं? उ०–तीन, सञ्ज्ञाक्षर, व्यंजनाक्षर, लब्ध्यक्षर।

३५ प्र०–सञ्ज्ञाक्षर अर्थात्? उ०–लिपि से या संकेत से समझाना।

३६ प्र०–व्यंजनाक्षर अर्थात्? उ०–उच्चारण करके समझाना।

३७ प्र–लब्ध्यक्षर अर्थात्? उ०–लब्धि रुप अक्षर (थोडे अक्षरों के श्रवण से अधिक शास्त्रों का ज्ञान होजाय)।

३८ प्र०–अनक्षर श्रुत अर्थात् क्या? उ०–छींक, बगासी, घंटा, झालर, ढोल प्रभृति के शब्द।

३९ प्र०–संज्ञीश्रुत का अर्थ क्या? उ०–मन वाले प्राणी को शब्द सुनकर ज्ञान हो।

४० प्र०–असञ्ज्ञीश्रुत अर्थात् क्या? उ०–बिना मन के सम्मूर्छिम प्राणी को इन्द्रियों के आधार से ज्ञान हो।

४१ प्र०—सम्यक्श्रुत अर्थात् क्या ? उ०-समदृष्टि को शास्त्र का सम्यक् ज्ञान हो।

४२ प्र०—मिथ्याश्रुत अर्थात् क्या ? उ०-मिथ्या दृ जीव को शास्त्र की उलटी रीति से (मिथ्या ज्ञान हो।

४३ प्र०—सादि और सपर्यवसित श्रुत अर्थात् क्या ?
उ०-द्रव्य से एक पुरुष, क्षेत्र से भरत ओर ईरवत काल से उत्सर्पिणी अवसर्पिणी तक जो ज्ञान है वह सादि सपर्यवसित श्रुत ज्ञान है।

४४ प्र०—सादि सपर्यवसित श्रुत का शब्दार्थ क्या ?
उ०-आदि (प्रारम्भ) सहित अन्त तक।

४५ प्र०—अनादि अपर्यवसित श्रुत का अर्थ क्या ?
उ०-जिम का आदि और अन्त नहीं ऐसा श्रुत, जे द्रव्य से, कई पुरुष, क्षेत्र से महाविदेह क्षेत्र काल से महाविदेह क्षेत्र में प्रचलित काल तक

४६ प्र०—गमिक श्रुत अर्थात् क्या ?
उ०-शास्त्रों में समान, और अनुक्रम वाले अधिकार हों।

४७ प्र०—अगमिक श्रुत का अर्थ क्या ?
उ०-जिसके अधिकार भिन्न २ और असमान हों।

४८ प्र०—अंग प्रविष्ठ श्रुत अर्थात् क्या ?
उ०-जो शास्त्र अग भूत हो।

४६ प्र०—वे अग भूत शास्त्र कितने और कौन से ?
उ०-बारह, आचारग, सुयडांग, ठाणांग, समवायांग, विविहा पन्नति (भगवति) ज्ञाता, उपासक,

दशांग, अंतगड दशांग अनुत्तरो व वाई, प्रश्न व्याकरण, विपाक और दृष्टिवाद।

प्र०—अंग बाहिर अर्थात क्या ?

उ०—अंग से सम्बंधित उपांग।

प्र०—वे अंग बाहिर के भेद कितने और कौनसे ?

उ०—दो, आवश्यक और आवश्यक से व्यतिरिक्त।

१ प्र०—आवश्यक के कितने अध्ययन हैं और कौनसे ?

उ०-छः सामायिक चऊवीसंथो, वंदना, प्रतिक्रमण, कायोत्सर्ग, प्रत्याख्यान।

३ प्र०—आवश्यक से व्यतिरिक्त के कितने भेद हैं और कौन से ?

उ०- कालिक सूत्र और उत्कालिक सूत्र।

४ प्र०—कालिक सूत्र का अर्थ क्या ? और कितने है ?

उ०—अमुक समय ही पढना चाहिये वे कालिक सूत्र तीस है।

१५ प्र०—उत्कालिक सूत्र अर्थात क्या ? और वे कितने है ?

उ०—असज्झाय और अकाल सिवाय चाहे जिसवक्त पढ सकें वे उन्तीस हैं।

प्रत्यक्ष ज्ञान।

पाठ (६)

१ प्र०—प्रत्यक्ष ज्ञान के भेद कितने और कौनसे ?

उ०—दो इन्द्रिय प्रत्यक्ष और नो इंद्रिय प्रत्यक्ष।

२ प्र०— इंद्रिय प्रत्यक्ष के कितने भेद हैं ?

उ०—पांच, इंद्रियों के पांच।

३ प्र०—नो इंद्रिय प्रत्यक्ष के कितने भेद हैं ?
उ०—तीन, अवधिज्ञान, मन पर्यवज्ञान और केवलज्ञ
४ प्र०—अवधिज्ञान अर्थात् क्या ?
उ०—इन्द्रियों की सहायता न लेकर परमारे अ
सीमातक आत्माको मनके अवधान से इ
उत्पन्न हो वह अवधि ज्ञान है।
५ प्र०—अवधिज्ञान के कितने भेद हैं ?
उ०—दो, भव प्रत्ययिक, और क्षयोपशम प्रत्ययिक
६ प्र०—भव प्रत्ययिक अर्थात् क्या ?
उ०—देवता और नारकी के भव में अवधिज्ञ
होता है वह।
७ प्र०—क्षयोपशम प्रत्ययिक अर्थात् क्या ?
उ०—अवधिज्ञान को आवरण करनेवाले कर्मों
विशुद्ध अध्यवसाय से क्षयोपशम हो जाय फि
मनुष्य और तिर्यचको जो ज्ञान प्रकटे व
क्षयोपशम प्रत्यायिक अवधिज्ञान है।
८ प्र०—क्षयोपशम प्रत्ययिक के कितने भेद हैं और
कौन से ?
उ०—अनुगामी, अनानुगामी, वर्धमान, हायमान,
प्रतिपाती और अप्रतिपाती।
९ प्र०—अनुगामी का अर्थ क्या ?
उ०—नैत्र की तरह साथ ही रहे।
१० प्र०—अनानुगामी अर्थात् क्या ?
उ०—जहां उत्पन्न हुआ हो उसी स्थान पर देख
अन्य स्थान पर जाने से न देख सके।

११ प्र०—वर्धमान का अर्थ क्या ?
उ०—उत्पन्न होने पश्चात् विशुद्ध अध्यवसाय का संयोग होने से उसकी वृद्धि हो ।

१२ प्र०—हायमान का अर्थ क्या ? उ०—उत्पन्न होने पश्चात् अशुभ विचार आने से घटने लगे ।

१३ प्र०—प्रतिपाती अर्थात् क्या ? उ०—उत्पन्न होने पश्चात् जल्द ही वह ज्ञान लुप्त हो जाय ।

१४ प्र०—अप्रतिपाती का अर्थ क्या ?
उ०—उत्पन्न होने पश्चात् वह ज्ञान स्थिर रहे ।

१५ प्र०—अवधिज्ञानी द्रव्य से कितना देखता है ?
उ०—जघन्य अनंत द्रव्य देख सकता है और उत्कृष्ट सब रूपी द्रव्य देख सक्ता है ।

१६ प्र०—अवधिज्ञानी क्षेत्र से कितना देख सक्ता है ?
उ०—जघन्य, अंगुल का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट सब लोक और अलोक में लोक के जितने असंख्य खन्ड देख सक्ता है ।

१७ प्र०—काल से अवधिज्ञानी कितना जान सक्ता है ?
उ०—जघन्य आविलिका के असख्यातवें भाग जितने काल को जान सक्ता है और उत्कृष्ट अतीत अनागत, असंख्याति अवसर्पिणी, उत्सर्पिणी के कालचक्र को जान सक्ता है ।

१८ प्र०—भाव से अवधि ज्ञानी कितना जान सक्ता है ?
उ०—जघन्य उत्कृष्ट अनंत भाव जान सक्ता है ।

१६ प्र०-यथार्थ ज्ञान का नाम क्या है ? उ०-सम्यकज्ञान

२०. प्र०-विपरीतज्ञान का नाम क्या है ?
उ०-मिथ्याज्ञान (अज्ञान)

२१ प्र०-सम्यकज्ञान वाले को दृष्टि कितनी होती है ?
उ०-एक सम्यक दृष्टि ।

२२ प्र०-मिथ्याज्ञान वाले को दृष्टि कौनसी होती है ?
उ०-मिथ्यादृष्टि ।

२३ प्र०-मिथ्यादृष्टि को मतिज्ञान प्राप्त हो तो उसे क्या कहते हैं ? उ०-मति अज्ञान ।

२४ प्र०-मिथ्यादृष्टि को श्रुत ज्ञान हो तो वह कैसा ज्ञान समझा जाता है ? उ०-श्रुतअज्ञान ।

२५ प्र०-मिथ्यादृष्टि को अवधिज्ञान हो वह कैसा समझा जाता है ? उ०-विभंगज्ञान ।

२६ प्र०-मनः पर्यवज्ञान अर्थात् क्या ? उ०-संज्ञी पंचेद्रिय जीवों के मनको सब तरह से जान लेना ।

२७ प्र०-मनको जान लेना अर्थात् क्या ?
उ०-दूसरे मनुष्य के दिल में रही हुई सब बात समझ लेना ।

२८ प्र०-मनः पर्यवज्ञान के कितने भेद हैं ? और कौन से ? उ०-दो, ऋजुमति विपुलमति ।

२६ प्र०-ऋजुमति अर्थात् क्या ?
उ०-सामान्य रीति से ग्रहण करने की मति ।

३० प्र०-विपुलमति का अर्थ क्या ?
उ०-विशेष रीति से ग्रहण करने की मति ।

३१ प्र० ऋजुमति कितना देखता है? उ०—अनंत प्रदेशी, अनंत मनके भाव जनता है, देखता है।

३२ प्र०—विपुल मति कितना देखता है? उ०—वे भी उपरोक्त भाव देखते हैं परन्तु अधिक विशुद्धता से।

३३ प्र०—मनपर्यवज्ञान किसको उत्पन्न होता है?
उ०—समदृष्टि आत्मार्थी साधु मुनिराज को।

३४ प्र०—अवधिज्ञान और मनः पर्यवज्ञान प्रत्यक्ष ज्ञान किस तरह हैं?
उ०-इन्द्रियों की विना सहायताके मनसे आत्मा को प्रत्यक्ष दिखाते हैं इसलिये प्रत्यक्ष है।

३५ प्र०—मति और श्रुत ज्ञान परोक्ष किस तरह है?
उ०—इन्द्रियों की सहायता सिवाय मन नहीं जान सक्ता इसलिये आत्मा को परोक्ष है।

३६ प्र०—छदमस्थ को उत्कृष्ट कितने ज्ञान प्राप्त होते हैं?
उ०—चार, मति, श्रुत, अवधि, और मनःपर्यवज्ञान।

३७ प्र०—सर्व श्रेष्ठ परमज्ञान कौनसा है?
उ०-केवल्य ज्ञान।

३८ प्र०—केवल्य अर्थात क्या?
उ०—एक, शुद्ध, सम्पूर्ण, प्रत्यक्ष, असाधारण, अनंत, अस्खलित, वह केवल्यज्ञान है।

३९ प्र०—यह ज्ञान उत्पन्न होता है तब क्या दिखाता है?
उ०—रूपी अरूपी, सकल्य द्रव्य, क्षेत्र से लोक लोक काल से भूत, भविष्य, वर्तमान भावसे सर्व गुण पर्याय हस्तामल कवत् देखे जाते हैं।

४० प्र०—इस ज्ञान के भेद कितने ?
उ०—यह ज्ञान अखण्ड आत्म प्रकाश के समान हो
से इसके भेद नहीं हैं।

४१ प्र०—केवल्य के सिवाय चार ज्ञान किस भाव
आते हैं? उ०—चयोपशम भाव से।

४२ प्र०—केवल्यज्ञान किस भाव से प्रगट होता है?
उ०—चायकभाव से।

सम्यक दर्शन।

(पाठ सातवां)

१ प्र०—मोच प्राप्त करने का दूसरा साधन कौन सा?
उ०—सम्यक दर्शन।

२ प्र०—दर्शन के कितने भेद हैं और कौनसे?
उ०—आठ चक्षुदर्शन, अचक्षु दर्शन, अवधि दर्शन, केवल्य दर्शन, सम्यक दर्शन, मिथ्या दर्शन, समिथ्या दर्शन, स्वप्न दर्शन।

३ प्र०—आठ दर्शन कितने अर्थ में शामिल हैं?
उ०—तीन अर्थ में, (१) दृश्य में, (२) सम्यक्त्व में, (श्रद्धा) (३) सामान्यज्ञान में।

४ प्र०—मतिश्रुत ज्ञानवाले को कौन सा दर्शन होता है? उ०—चक्षु दर्शन, अचक्षु दर्शन।

५ प्र०—अवधिज्ञानी को कौनसा दर्शन होता है?
उ०—अवधिदर्शन।

६ प्र०—मनः पर्यवज्ञानी को कौन सा दर्शन होता है?
उ०—चक्षु दर्शन, अचक्षु दर्शन।

७ प्र०—केवल्यज्ञानी को कौनसा दर्शन होता है ?
उ०—केवल्यदर्शन ।
८ प्र०—चक्षु दर्शन का अर्थ क्या ? उ०—चक्षु से देखना।
९ प्र०—अचक्षुदर्शन का अर्थ क्या ?
उ०—चक्षु सिवाय अन्य इन्द्रियों तथा मन से जो सामान्यज्ञान होता है वह अचक्षु दर्शन ।
१० प्र०—अवधिदर्शन का अर्थ क्या ?
उ०—इन्द्रियों की बिना ही सहायता के मन में अमुक सीमा तक देखने का जो सामान्यज्ञान प्रकट हो वह अवधि दर्शन है ।
११ प्र०—केवल्य दर्शन का अर्थ क्या ?
उ०—सम्पूर्ण सामान्यज्ञान ।
१२ प्र०—मनः पर्यवज्ञान है और मनः पर्यव दर्शन क्यों नहीं ?
उ०—मनः पर्यवज्ञानी को सामान्य रीति से देखना नहीं पड़ता अतएव दर्शन नहीं है।
१३ प्र०—सम्यकदर्शन अर्थात् क्या ?
उ०—यथार्थ देखना।
१४ प्र०—मिथ्या दर्शन अर्थात् क्या ?
उ०—हो उससे प्रतिकूल देखना ।
१५ प्र०—समामिथ्या दर्शनका अर्थ क्या ?
उ०—कुछ सत्य और कुछ असत्य देखना ।
१६ प्र०—स्वप्न दर्शन अर्थात् क्या ?
उ०—स्वप्न में जो २ देखा जाता है उसे अचक्षु दर्शन भी कहते हैं ।

१७ प्र० -देखना इस अर्थ मे कितने दर्शन होते हैं ?
उ०-एक, चक्षु दर्शन ।

१८ प्र०-श्रद्धा इस अर्थ में कितने दर्शन होते है ?
उ०-तीन, सम्यक दर्शन, मिथ्या दर्शन, सममिथ्या दर्शन ।

१६ प्र०-सामान्यज्ञान के अर्थ वाले कितने दर्शन हैं ?
उ -तीन अचक्षु दर्शन, अवधि दर्शन और केवल्य दर्शन ।

२० प्र०-सम्यकदर्शन हो उसे कौनसा ज्ञान होता है ?
उ०-सम्यक्ज्ञान ।

२१ प्र०-मिथ्यादर्शन हो उसे कौनसा ज्ञान होता है ?
उ०-मिथ्याज्ञान ।

२२ प्र०-समामिथ्या दर्शन हो उसे कौनसा ज्ञान होता है?
उ०-समामिथ्याज्ञान ।

२३ प्र० सम्यक्ज्ञानी हो वह कौनसे देव गुरु, धर्म को मानता है ?
उ०-राग, द्वेष, रहित, सर्व कर्म से मुक्त, केवल्य ज्ञानी, ऐसे पवित्र स्वरूपी को देव (प्रभु) मानता है और उन्हीं वितरागी देव के फरमाये हुए मार्ग पर ममत्व रहित विचरण करने वालों को गुरु और जिसराह से परम शांति मिले वह वितराग के बताये हुए परम दयामय मार्ग को धर्म मानता है ।

२४ प्र०-धर्म की नीव क्या ? उ०-सम्यक्त्व ।

२५ प्र०-सम्यक्त्व न हो तो जीव मोक्ष पासक्ता है या नहीं ?

उ -नहीं विना सम्यक्त्व के जीव मोक्ष नहीं पा सक्ता।

२६ प्र०-सम्यक्त्व का संक्षिप्त अर्थ क्या ?

उ०-ज्ञान और सची श्रद्धा।

२७ प्र०-सम्यक्त्व की पहिचान के कितने संकेत है ? और कौन कौन से ?

उ०-६७, तीन शुद्धि तीन लिंग, पांच लक्षण, पाच दूषण (अतिचार) से रहित, पाच भूषण चार सर्दहना छ स्थान, आठ आचार, आठ प्रभावक, दस रुचि, दस विनय।

२८ प्र०-तीन शुद्धि कौनसी ?

उ०-मन, वचन और काय शुद्धि।

२६ प्र०-तीन लिंग कौनसे ?

उ०-(१) आगम श्रवण की रुचि (२) धर्म कार्य करने में प्रेम (३) गुरु भक्ति।

३० प्र०-पाच लक्षण कौनसे ?

उ०-सम (समस्थिति) समवेग (मोक्षाभिलाषी) निर्वेद (विषयपर अरुचि) अनुकम्पा, दुखी पर करुणा, आस्था (विश्वास)।

३१ प्र०-पांच दूषण कौन से ?

उ०-शका, कांक्षा, वितिगच्छा (फलका सदेह) पाखंड-प्रशसा, पाखंड का परिचय।

३२ प्र०-भूषण पाच कौनसे ?

उ०-स्वधर्म में अटल आगम शैली में कुशल सत्यानुप्रेक्षी, तीर्थकी सेवा करनेवाला, धर्म का उद्धारक।

२३ प्र०—छः स्थान कौन से ?

उ०—जीव का अस्तित्व है, जीव शाश्वत है, पुन्य पापका कर्ता है, भोक्ता है, मुक्ति है, उसका उपाय है, इन छः का स्वीकार करने वाला।

२४ प्र०—चार सर्दहना कौनसी ?

उ०—परमार्थ का परिचय, तत्वज्ञानी की सेवा, श्रद्धा भृष्ट स्वदर्शनी का त्याग, मिथ्यात्वी सँगवर्जन।

२५ प्र०—आठ आचर कौन से ?

उ०—निः शंका, निः कांक्षा, निर्वितिगच्छा, (फल में निस्सदेह) अमूढ दृष्टि, उपबोध, समीप आने वाले को उपदेशकर्ता, स्थिरीकरण (धर्म से च्युत होने वाले को स्थिरकर्ता) धर्म वत्सल, प्रभाविक ।

२६ प्र०—आठ प्रभावक कौनसे ?

उ०—(१) प्रावचनी (प्रवचन की कुशलता से मार्ग प्रदीप्त करे) (२) कथा निपुण (धर्म कथाएं कह कर दुर्बोधी को धर्म में लगावे) (३) वादी (शास्त्रार्थ कर शासन दिपावे) (४) निमित्त भाषी (भूत भविष्य के ज्ञानसे मार्ग दीपावे) (५) तपस्वी निस्पृहता से तपस्या कर मार्ग दिपावे) (६) विद्या सम्पन्न (रसायन यंत्र, खगोल, भूगोल, भूतल, भूस्तर, इतिहास, न्याय, इत्यादि सीख जैन सिद्धांत में पुष्ट करें) (७) सिद्धि सम्पन्न (विविध प्रकार की सिद्धियों द्वारा जैन मार्ग को दिपावे) (८)

कवि (काव्य शक्ति द्वारा सिद्वात को पुष्ट करने वाले ग्रंथ रच धर्मको दिपावे) ।

३७ प्र०—दस रुचि कौनसी ?

उ०—निसर्ग रुचि, (स्वाभाविक) उपदेश रुचि, आज्ञा रुचि, स्वरुचि, बीजरुचि, अभिगम रुचि, विस्तार रुचि, क्रिया रुचि, संक्षेप रुचि, धर्म रुचि, ।

३८ प्र०—दस विनय कौन से ?

उ०—आचार्य उपाध्याय, स्थैवर तपस्वी, ग्लानी, शिष्य, कुल, गण, सघ, स्वधर्मी इन दस का विनय करता ।

३९ प्र०—साधु या श्रावक में सम्यक्तत्व न हो तो वे किस गिनती में है ?

उ०—द्रव्य (नाममात्र) श्रावक या साधु गिने जाते हैं ।

४० प्र०—सम्यकदृष्टि की खास विशेषता क्या है ?

उ०—सम्यक दृष्टि सात स्थान का आयुष्य का नया बंध नहीं बांधता है ।

४१ प्र०—सात स्थान कौनसे ?

उ०—नारकी, तिर्यंच, स्त्री, नपुंसक, भवनपति, वाण व्यांतर, जोतिषी इन सात स्थान का आयुष्य नहीं बांधता है ।

४२ प्र०—सम्यक्त्व प्राप्त होने पर मृत्यु तक कायम रहे तो वह जीव कितने भव कर मोक्ष प्राप्त कर लेता है ?

उ०—जघन्य तीन भव और उत्कृष्ट पंद्रह भव कर मोक्ष जाता है।

४३ प्र०—सम्यक्त्व आये पश्चात् वापिस चलीगई और मृत्यु तक न रही तो वह जीव कब मोक्ष पाता है?

उ०—जघन्य दूसरे तीसरे भव और उत्कृष्ट अर्ध पुद्गल परवर्तन में मोक्ष पाता है।

चारित्र तप और वीर्य।

(पाठ आठवां)

१ प्र०—सम्यक्त्व के बाद कौनसा कर्तव्य है?

उ०- चारित्र।

२ प्र०—चारित्र अर्थात् क्या?

उ०—आत्म कल्याण करनेकी शुद्ध क्रिया व्यवहार) अर्थात् दुख मुक्त होने का व्यवहार।

३ प्र०- उसके कितने भेद है?

उ० -दो देशविरति और सर्व विरति (व्रत)।

४ प्र०—देशविरति के कितने व्रत हैं?

उ०—बारह, पाच अणुव्रत तीन गुणव्रत चार शिक्षा व्रत।

५ प्र० अणुव्रत अर्थात् क्या? उ०—साधु के व्रत की अपेक्षा छोटे (मर्याद वाले)।

६ प्र०—गुणव्रत अर्थात् क्या? उ०—अणुव्रत को गुण (मदद) करने वाले।

७ प्र०—शिक्षाव्रत अर्थात् क्या?

उ०—धर्म शिक्षा के सवन समान या शिक्षा अर्थात् अणुव्रत रूप मंदिर के शिखर समान ।

८ प्र०—देश विरति का प्रचलित नाम क्या है ?

उ०—श्रावक या श्रमणोपासक ।

९ प्र०—सर्वविरति कौन ? उ०—साधु ।

१० प्र०—उनके कितने व्रत हैं ?

उ०—पाँच महाव्रत और छठे रात्रि भोजन के त्याग।

११ प्र०—पाच महाव्रत कौन से ?

उ०—सर्वथा जीव हिंसा का त्याग, सर्वथा असत्य के त्याग, सर्वथा अदत्त के (चोरी) त्याग, सर्वथा मैथुन के त्याग, सर्वथा परिग्रह के त्याग ।

१२ प्र०—इस सिवाय उन्हें और क्या पालना आवश्यक है ?

उ०—पांच सुमति और तीन गुप्ति ।

१३ प्र०—पांच सुमति कौनसी ? और उनका अर्थ क्या ?

उ०—ईर्या सुमति अर्थात् यत्न पूर्वक चलना, भाषा सुमिति अर्थात् यत्ना से बोलना, एषणा सुमति, अर्थात यत्ना से वहिरना (अन्न पानी लेना) आयाण भंड मत निमेवणीया सुमति अर्थात अपने उपकरण प्रभृति यत्ना से लेना, रखना, उच्चार आदि परिठावणिया सुमति अर्थात् डाल देने फेंक देने की वस्तुए यत्न पूर्वक डालदेना, फेंक देना ।

१४ प्र०—तीनगुप्ति कौनसी ? और उनका अर्थ क्या ?

उ०—मन, वचन और काया से पाप न करना और धर्म में स्थिर करना ।

१५ प्र०—श्रावक के गुण कितने और कौनसे ?

उ०—इकवीस, १ अक्षुद्र २ रूपवंत ३ सौम्य प्रकृति वाला, ४ लोक प्रिय ५ अक्रूर ६ पापभीरु ७ शाठ्य रहित ८ चतुर ९ लज्जावत १० दयालु ११ मध्यस्थ परिणामी १२ सुदृष्टि वाला १३ गुणानुरागी १४ शुभ पक्ष धारण करने वाला १५ दीर्घ दृष्टिवन्त १६ विशेषज्ञ १७ अल्पराभी १८ विनित १९ कृतज्ञ २० पराहितकारी २१ लब्ध लक्षी.

१६ प्र०—साधु किसे कहते हैं ?

उ०—स्वयं आत्म कल्याण साधता है, और दूसरों को सधाता है.

१७ प्र०—उनके गुण कितने और कौनसे ?

उ०—सत्तावीस १ दया २ असत्य त्याग ३ अस्तेय ४ ब्रह्मचर्य ५ अपरिग्रह ६ अक्रोध ७ निर्मान ८ निष्कपट ९ निर्लोभ १० सहन शीलता ११ निष्पक्षपात १२ परोपकार १३ तपश्चर्या १४ प्रशांतता १५ जितेन्द्रियता १६ परममुमुक्षुप्रति १७ प्रसन्न दृष्टि १८ सौम्य १९ नम्रता २० गुरु भक्ति २१ विवेक २२ वैराग्य रक्तता २३ सत्यानु प्रेक्ष २४ ज्ञानाभिलाप २५ योग निष्टता (मन, वचन और काया को नियम में रखना) २६ संयम में रति २७ विशुद्ध आचार.

१८ प्र०—अध्ययन कराते हैं उन्हें क्या कहते हैं और उनके कितने गुण हैं ?

उ०-उपाध्याय कहते हैं और उनके २५ गुण हैं।

१६ प्र०-सम्प्रदायका मुख्य क्या कहलाता है ?

उ०-आचार्य, और उनके गुण ३६ हैं।

२० प्र०-साधुओं का धर्म कितने प्रकार का है ?

उ०-दम, क्षमा, निर्लोभ, निष्कपट, निर्मान, तपश्चर्या सत्य, संयम निर्मलपना, निष्कंचन और ब्रह्मचर्य।

२१ प्र०-चारित्र्य का फल क्या है ?

उ०-आते हुए कर्मों को रोकना।

२२ प्र०-जीवको सुख दुख होने का क्या कारण है ?

उ०-जीव के बंधे हुए शुभाशुभ कर्म।

२३ प्र०-अशुभ कर्मों के नाश करने का उत्तम साधन कौनसा ? उ०-तपश्चर्या।

२४ प्र०-तपश्चर्या अर्थात् क्या ?

उ०- जिस क्रिया से आत्मा पवित्र, निर्मल, शुद्ध, निर्दोष बनती है।

२५ प्र०-उसके भेद कितने और कौनसे ?

उ०-छः बाह्य और छः अभ्यतर।

२६ प्र०-उनके नाम कहो।

उ०-१ अनसन (आहार का त्याग) २ उणोदरी (क्षुधा से कम भोजन करना) ३ भिक्षाचरी (भिक्षा जाते समय अभिग्रह धारण करना) ४ रसपरित्याग (मिष्ट रस का त्याग करना) ५ काया क्लेश (शीत, उष्ण, लौचादि कष्टका सहन करना) ६ प्रतिसंलेखणा (अंग उपांग को नियम में रखना) ये छः बाह्य तप हैं (१) प्रा-

याश्चित (गुरु आगे किये हुए अपराध का प्रकाशकर शुद्ध होना) (२)विनय (३)व्यावच (४) स्वाध्याय (५) ध्यान (६) कायोत्सर्ग (ये छः अभ्यंतर तप हैं)

२७ प्र०—बाह्य और अभ्यंतर इन दोनों में अधिक तीक्ष्ण और फलदायक कौनसा तप है ?

उ०—अभ्यंतर फल तप.

२८ प्र०—तपश्चर्या करने में मुख्य किसकी आवश्यकता है ?

उ०—वीर्य (पराक्रम) की ।

२९ प्र०—वीर्य के कितने भेद हैं ?

उ०—तीन । बाल वीर्य, पंडित वीर्य, बाल पंडित वीर्य.

३० प्र०—बाल वीर्य अर्थात् क्या और वह किसे होता है ?

उ०—व्रत प्रत्याख्यान करने का बल जो न प्रकट कर सके,ऐसे चौथे गुणस्थान तक के जीवों को होता है.

३१ प्र०—बाल पंडित वीर्य अर्थात् क्या ?

उ०—व्रत प्रत्याख्यान देश से कर सके ऐसे ५ वें गुणस्थान वाले जीव.

३२ प्र०—पंडित वीर्य अर्थात क्या ?

उ०—सर्व विरती साधु, जो छट्ठे गुणस्थान से १४ वें गुणस्थान तकके जीव हैं, वे पंडितवीर्य के धनी हैं।

जीव तत्व ।

(पाठ नवां)

१ प्र०—दुनियां में मुख्य तत्व कितने हैं ?

उ०—दो जीव तत्व,अजीव तत्व ।

२ प्र०—जीव और अजीव के परस्पर सम्बन्ध से कितने तत्व गिने हैं ?

उ०—नौ जीव, अजीव, पुन्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, बंध, मोक्ष।

३ प्र—जीव किसे कहते है ?

उ०—जो दस प्राणों द्वारा जीवित हैं उसे जीव कहते हैं।

४ प्र०—दस प्राण कौन से ?

उ०—पांच इन्द्री, मनबल, वचनबल, कायबल, श्वासोच्छ्वास और आयुष्य।

५ प्र—जीव का लक्षण क्या है ?

उ०—ज्ञानोपयोग लक्षण (सदास्व उपयोगी) चैतन्य लक्षण सुख दुख का समझने वाला, करने वाला, भुगतने वाला।

६ प्र०—जीव के मुख्य भेद कितने ? उ०—त्रस और स्थावर।

७ प्र०—त्रस अर्थात् क्या ?

उ०—जिन्हें त्रास हो (स्वयं चल फिर सकते हैं)।

८ प्र०—स्थावर अर्थात् क्या ?

उ०—स्थिर रहते हैं (जो स्वयं चल फिर न सकें)।

९ प्र०—स्थावर के मुख्य भेद कितने और कौनसे ?

उ०—दो, सूक्ष्म और बादर।

१० प्र०—सूक्ष्म कैसे और कितने ?

उ०—जो चर्म चक्षु से नहीं देखे जा सके वे समस्त लोक में भरे हैं और अनंत हैं।

११ प्र०—बादर जीव कौनसे ?

उ०—चर्मचक्षु से जिनके शरीर का समूह देखा जाता है।

१२ प्र०—सूक्ष्म और बादर उन दोनों के कितने भेद हैं।

उ०—बाईस—पृथ्वी, पानी, अग्नि वायु, ये चार सूक्ष्म और चार बादर यों दोनों मिलाकर ८ हुए और वनस्पति के तीन भेद, सूक्ष्म, प्रत्येक साधारण ये तीन मिल कर ११ जिनके अपर्याप्ता और पर्याप्ता मिलकर २२ भेद हुए।

१३ प्र०—प्रत्येक और साधारण किसे कहते हैं ?

उ०—शरीर शरीर में एक जीव होते है वे प्रत्येक और एक शरीर में अनंत जीव हों वे साधारण कहलाते हैं (कंद मूलादि)

१४ प्र०—पर्याप्ता और अपर्याप्ता अर्थात क्या ?

उ०—प्रत्येक जीव जब आकर जन्म लेता है, तब उसे जितनी पर्याप्ती बाधना होती है न बाधता है वहा तक अपर्याप्ती गिना जाता है और सब बांध लेने पर पर्याप्ता गिना जाता है।

१५ प्र०-पर्याप्ती कितनी और कौनसी ?

उ०—६ आहार, शरीर, इन्द्री, श्वासोच्छ्वास भाषा और मन।

१६ प्र०—स्थावर जीव के कितनी इन्द्रियां होती हैं ?

उ०-काया एक ही।

१७ प्र०—त्रस के कितने भेद हैं ?

उ०—चार बेइंद्री तेइंद्री चोरेंद्री ये तीन विकलेंद्री और चौथा पचेंद्री।

१८ प्र०—विकलेंद्री के कितने भेद हैं ?

उ०—६ बेइंद्री, तेइद्री, चौरेन्द्री ये तीन जिनके पर्यासे और अपर्यासे मिल कर ६ भेद हुये।

१९ प्र०—बे इंद्री जीव कौन से ?

उ०—काया और मुह इन दो इंद्रियां वालों को बे इंद्री कहते हैं जैसे शख कीडा अलसा इत्यादि।

२० प्र०—तेइन्द्री जीव कौनसे ? उ०—काया, मुंह, नासिका इन तीन इन्द्रीयों वाले तेइद्री कहाते हैं जैसे जू, लीक, माकड (खटमल) इत्यादि

२१ प्र०—चौरेन्द्री जीव कौनसे ?

उ०—काया मुंह, नासिका, नेत्र ये चार इंन्द्रिय वाले चौरेंद्री जीव कहलाते हैं जैसे मक्खी, मच्छर, डाम प्रभृति।

२२ प्र०—पंचेंद्री प्राणी कौन है ? उ०—काया, मुह, नासिका नेत्र, कर्ण, जिनके ये पाचों इद्री हो।

२३ प्र०—पंचेंद्री के कितने भेद और कौनसे ?

उ०—चार, नारकी, तिर्यंच, मनुष्य, देवता,।

२४ प्र०—नारकी अर्थात् क्या ? उ०—नरक (एकांत दुख में रहने वालों का स्थान) में रहने वाले जीव।

२५ प्र०—नरक कितनी और कौनसी ? उनके नाम गोत्र और भेद कहो। उ०—नरक सात १ घमा २ वशा ३ शिला ४ अजना ५ रिग ६ मघा ७ माघवई ये सात नाम तथा १ रतन २ शर्करा ३ वालु ४ पक ५ धुम्र ६ तम ७ तमतमा प्रभा ये सात

गोत्र के नाम हैं इनके पर्याप्त और अपर्याप्त मिलकर चौदह भेद हुए।

२६ प्र०—तिर्यंच के भेद कितने और कौनसे ? मुख्य दो संज्ञी और असंज्ञी।

२७ प्र०—संज्ञी असंज्ञी किसे कहते हैं उ०—गर्भज (मन वाले) संज्ञी और समुर्छिम (विनामन के) असंज्ञी

२८ प्र०—असंज्ञी और संज्ञी तिर्यंच के कितने भेद है ?

उ०—बीस १ जलचर (जलमें रहने वाले) (२) स्थलचर (जमीन पर रहने वाले अश्वादि) ३ उरपर (सर्पादिक छाती से चलने वाले) ४ भुजपर (भुजासें चलने वाले) ५ खेचर (आकाश में चलने वाले) ये पाच संज्ञी और पाच असंज्ञी इन दसों के पर्याप्त और अपर्याप्त मिलकर २० भेद हुए।

२९ प्र०—मनुष्य के कितने भेद हैं ? उ०—३०३, १५ कर्म भूमि ३० अकर्म भूमि ५६ अंतर द्वीपा इन एकसौ एक के प्रर्याप्ते और अपर्याप्ते मिलकर २०२ गर्भज १०१ समुर्च्छिम अपर्याप्ता मिलकर ३०३ भेद हुए।

३० प्र०—समुर्च्छिम के पर्याप्ते क्यों नहीं ? उ०—ये जीव पर्याप्ते में न आकर अपर्याप्ते में ही मृत्यु हो जाते हैं इसीलिये इनके पर्याप्ते नहीं गिने।

३१ प्र०—गर्भज और समुर्च्छिम इनमें क्या भेद है ?

उ०—स्त्री पुरुष के संयोग से जो उत्पन्न होते हैं वे गर्भज हैं और इस संयोग से न उत्पन्न हो कर

जो मनुष्यों के उच्चारादि मल मूत्र में उत्पन्न होते हैं वे मनुष्य समुर्च्छिम गिने जाते हैं।

३२ प्र०—मनुष्य समुर्च्छिम अपनको नजर आते हैं या नहीं?
उ०—नहीं, वे इतने सूक्ष्म है कि चर्म चक्षुओं से नहीं देखे जाते।

३३ प्र० समर्च्छिम मनुष्य के उत्पन्न होने के स्थान कितने और कौनसे?
उ०—चौदह. मिष्टा, पेशाब, खुंखार, नाकका मैल, वमन, पीत्त, परु, रुधिर वीर्य, सुखाई हुई अशुचि फिर गीली होजाय, मनुष्य के कलेवर, स्त्री पुरुष का संयोग, नगर के खाल में मनुष्य के सर्व असुचि के स्थान में।

३४ प्र०—तिर्यच के मल में कौनसे जीव उत्पन्न होते हैं?
उ०—उसमें पचेंद्री जीव नहीं उपजते परन्तु बे-इंद्रिया-दिक जीव उत्पन्न होते हैं।

३५ प्र०—मिट्टी तथा पानी के योग से कौन से जीव उत्पन्न होते हैं? उ० वनस्पति के तथा बे इन्द्री से पचेंद्री तक के जीव उत्पन्न होते हैं परन्तु वे समुर्च्छिम गिने जाते हैं।

३६ प्र०—कर्म भूमि अर्थात् क्या? उ०—काम धधे से निर्वाह करने वाले प्रदेश।

३७ प्र०—अकर्म भूमि अर्थात् क्या? उ०—काम धधे बिना सिर्फ इच्छा बल से निर्वाह करने वाले प्रदेश।

३८ प्र०—अतर द्वीप का अर्थ क्या? उ०—जम्बु द्वीप बाहर लवण समुद्र में ५६ अतर द्वीप हैं उनमें जन्मना।

गोत्र के नाम हैं इनके पर्याप्ता और अपर्याप्ता मिलकर चोदह भेद हुए।

२६ प्र०—तिर्यंच के भेद कितने और कौनसे ? मुख्य दो संज्ञी और असज्ञी।

२७ प्र०—संज्ञी असंज्ञी किसे कहते है उ०—गर्भज (मन वाले) सज्ञी और समुर्छिम (बिनामन के) असंज्ञी

२८ प्र०—असंज्ञी और संज्ञी तिर्यंच के कितने भेद हैं?

उ०—बीस १ जलचर (जलमें रहने वाले) (२) स्थलचर (जमीन पर रहने वाले अश्वादि) ३ उरपर (सर्पादिक छाती से चलने वाले) ४ भुजपर (भुजासे चलने वाले) ५ खेचर (आकाश मे चलने वाले) ये पाच सज्ञी और पाच असज्ञी इन दसों के पर्याप्ता और अपर्याप्ता मिलकर २० भेद हुए।

२९ प्र०—मनुष्य के कितने भेद हैं? उ०—३०३,१५ कर्म भूमि ३० अकर्म भूमि ५६ अंतर द्वीपा इन एकसौ एक के प्रर्याप्ते और अपर्याप्ते मिलकर २०२ गर्भज-१०१ समुर्च्छिम अपर्याप्ता मिलकर ३०३ भेद हुए।

३० प्र०—समुर्च्छिम के पर्याप्ते क्यों नहीं? उ०—ये जीव पर्याप्ते मे न आकर अपर्याप्ते में ही मृत्यु हो जाते हैं इसीलिये इनके पर्याप्ते नहीं गिने।

३१ प्र०—गर्भज और समुर्च्छिम इनमें क्या भेद हैं?

उ०—स्त्री पुरुष के संयोग से जो उत्पन्न होते हैं वे गर्भज हैं और इस संयोग से न उत्पन्न हो कर

जो मनुष्यों के उच्चारादि मल मूत्र में उत्पन्न होते हैं वे मनुष्य समुर्च्छिम गिने जाते हैं।

३२ प्र०—मनुष्य समुर्च्छिम अपनको नजर आते हैं या नहीं?

उ०—नहीं, वे इतने सूक्ष्म हैं कि चर्म चक्षुओं से नहीं देखे जाते।

३३ प्र० समुर्च्छिम मनुष्य के उत्पन्न होने के स्थान कितने और कौनसे?

उ०—चौदह. मिष्टा, पेशाब, खुंखार, नाकका मैल, वमन, पीत्त, परु, रुधिर, वीर्य, सुखाई हुई अशुचि फिर गीली होजाय, मनुष्य के कलेवर, स्त्री पुरुष का संयोग, नगर के खाल में मनुष्य के सर्व असुचि के स्थान में।

३४ प्र०—तिर्यंच के मल में कौनसे जीव उत्पन्न होते हैं?

उ०—उसमें पंचेंद्री जीव नहीं उपजते परन्तु बे-इंद्रियादिक जीव उत्पन्न होते हैं।

३५ प्र०—मिट्टी तथा पानी के योग से कौन से जीव उत्पन्न होते हैं? - उ० वनस्पति के तथा बे इन्द्री से पंचेंद्री तक के जीव उत्पन्न होते हैं परन्तु वे समुर्च्छिम गिने जाते हैं।

३६ प्र०—कर्म भूमि अर्थात् क्या? उ०—काम धंधे से निर्वाह करने वाले प्रदेश।

३७ प्र०—अकर्म भूमि अर्थात् क्या? उ०—काम धंधे विना सिर्फ इच्छा बल से निर्वाह करने वाले प्रदेश।

३८ प्र०—अंतर द्वीप का अर्थ क्या? उ०—जम्बु द्वीप बाहर लवण समुद्र में ५६ अंतर द्वीप हैं उनमें जन्मना।

३९ प्र० अकर्म भूमि और अतर द्वीपी मनुष्य कौनसे?
उ०—युगलिया, भद्रिक, भले स्वभाव वाले मर कर देवलोक जाने वाले।
४० प्र०—कर्म भूमि के पंद्रह क्षेत्र कौनसे? उ० पांच भरत पाच इरवत, पांच महाविदेह।
४१ प्र०—तीस अकर्म भूमि के क्षेत्र कौनसे? उ०—पांच हेमवय, पाच एरणवय, पाच हरिवास, पांच रमकवास पांच देवकुरु, पांच उत्तर कुरु।
४२ प्र —देवता के भेद सक्षेप में कितने और विशेष में कितने? उ०—संक्षेप में १० और उत्कृष्ट १९८।
४३ प्र०—जघन्य और उत्कृष्ट कौन २ से वे कहो?
उ०—(१) भवन पति २) परमाधामी १५ (३) वाणव्यंतर १६ (४) जम्भिका १० (५) ज्योतिषी दस (६) किल्वीसी तीन (७) लोकांतिक ९ (८) देवलोक १२ (९) ग्रैवेकी ९ (१०) अनुत्तर वमानिक पाच। यों सब मिलकर ९९ जाति के देव के पर्याप्ता और अपर्याप्त मिलकर १९७।
४४ प्र० सब जीव मूल स्वरूप में समान हैं या छोटे बड़े
उ०—मूल स्वरूप में समान है परन्तु कर्म रूपी उपाधि मे बड़े छोटे गिने जाते हैं।
४५ प्र०—जीव का कोई घात करना चाहे तो हो सकी है या नहीं?
उ०—नहीं. जीव अमर है। किसी दिन नहीं मरता,

४६ प्र०—तब मरजाना यह क्या ?
उ०—जीवका शरीर से प्रथक होना.
४७ जीव नहीं मरता तो पाप कैसे लगता है ?
उ०—जीव की स्वीकृति कीहुइ प्यारी से प्यारी काया वस्तु को भिन्न कर दुख उत्पन्न करने से पाप लगता है.
४८ प्र०—सब जीव समान है फिर एकन्द्री को मारने से कम और मनुष्य को मारने से अधिक पाप क्यों लगता है ?
उ०—जो जीव अधिक उत्क्रांति पाया हो, जगत में विशेष उपयोगी हो जिसके पास अधिक आत्मिक ऋद्धि हो उसे मारने से (उसकी ऋद्धि का वियोग कराने मे) अधिक पाप लगता है और जो जीव कम ऋद्धिवान, कम उपयोगी, और कम उत्क्रांत होता है उस तरफ से कम पाप लगता है कम अधिक के प्रमाण से कम अधिक पाप लगता है।
४६ प्र०—जीव का उत्पन्न कर्त्ता कौन है ?
उ०—कर्त्ता कोई नहीं, अनादि है।
५० प्र०—उत्पन्न किये बिना उनकी प्राप्ति कैसे होती है ?
उ०—किसी भी समय कोई वस्तु उत्पन्न हुई तो उसका बिनाश भी किसी दिन होता है, परन्तु इस जीव का नाश नहीं होता यह अविनाशी है, इसलिये इसका उत्पन्न करने वाला कोई नहीं ऐसा सिद्ध होता है।

५१ प्र०—जिस तरह जड़ पदार्थ टूटता है फूटता
विखरता है और फिर एकत्र होजाता है
तरह इस जीव की स्थिति होती है या नहीं
उ०—स्थिति पलटती है वह जड़ रूपी मूर्तिमान
इस लिये ऐसा नहीं हो सक्ता।
५२ प्र०—जीव को कैसे पहचान सक्ते हैं ?
उ०—जो जीव अधिक बड़ती न पाये हैं वे जीव पृथ्वी
पानी, अग्नी और वायु के शास्त्र वेत्ताओं के कथ
से मानना, बाकी बनस्पति से सब जीव चल
फिरने सुख दुख की इच्छाएं और संज्ञाओं
सहजही में पहचाने जाते हैं।
५३ प्र०—जीवों की पहिचानकर उनके साथ कैसा व्यवहार
रखना चाहिये।
उ०—अपने से हलकी जाति के सब जीवों पर दया
रखना, तथा अपने सामान के प्राणियों के साथ
समान भाव रखना, और अधिक शक्ति वाले वा
उपकारी पुरुषों क साथ पूज्य भाव रखना।
५४ प्र०—अनंत जीवों का स्वरूप किस रीति से जानते हैं
उ०—अपना जीव है वैसे ही बाकी के सब जीव है इस
लिये अपने जीव का स्वरूप बराबर समझ लेने
से बाकी के सब जीवों का स्वरूप समझ में
आजाता है।
५५ प्र०—सब जीवों के उत्पन्न होने की जीव योनी कितनी ?
उ०—चोरासी लाख ७ लाख पृथ्वी काय ७ लाख

अपकाय ७ लाख, तेऊ काय, ७ लाख, वायु काय, १० लाख प्रत्येक वनस्पति काय, १४ लाख साधारण वनस्पति काय, २ लाख बेंद्री, २ लाख वेंद्री, २ लाख चौरेंद्री, ४ लाख नारकी, चार लाख देवता, ४ लाख तिर्यंच, १४ लाख मनुष्य

५६ प्र०—जीवयोनि अर्थात् क्या ?

उ०—जीवों के उत्पन्न होने के भिन्न २ स्थान।

५७ प्र०-जीवके समूह को क्या कहते हैं ?

उ०—जीवास्ति काय।

५८ प्र०—जीव का दूसरा नाम क्या है ?

उ०-प्राण, भूत, सत्व, विरनु, आत्मा, प्रभृति अनेक नामों से पहिचाना जाता है।

५९ प्र०—जीव कौनसे भवसे मोक्ष में जा सक्ता है ?

उ०—मनुष्य भव से।

६० प्र०—कोई जीवित मनुष्य को दाग दे तो जले या नहीं ?

उ०—जीव दग्ध नहीं हो सक्ता, सिर्फ शरीर दग्ध होता है।

६१ प्र०—जब शरीर जलने लगता है तब मैं जलता हू ऐसा क्यों कहता है ?

उ०—अनादि की अज्ञानता से निज स्वरूप को भूल कर और शरीरादि पर वस्तु मैं हूं, वह मेरी है ऐसा मान, जड़ के विनाश से अपना विनाश हुआ समझ कर दुःखी होता है।

६२ प्र०—जो जीव नहीं मरता तो शरीर में से निकल कर कहां जाता होगा ?

उ०—जिंदगी में जैसे शुभाशुभ आचरण से जिस प्रकार शुभाशुभकर्म का सचय करता है वैसे ही स्थान में जाकर उत्पन्न हो जाता है।

६३ प्र०—एक जीव के प्रदेश कितने हैं ? उ०—असंख्य।

६४ प्र०—वे प्रदेश अलग २ हो जाते है या नहीं ?

उ०—नहीं, वह एक प्रदेश दूसरे प्रदेश से कभी भिन्न नहीं होता।

६५ प्र०—जीव अपना बडे से बड़ा रूप धारण करे तो कितना हो सक्ता है ?

उ०—चौदह राज लोक (समस्त दुनियां) में समावेश होसके इतना बड़ा हो सक्ता है।

६६ प्र०—इतना बड़ा होकर कीटादि के शरीरों में किस तरह रह सक्ता है ? क्या उसे तकलीफ नहीं होती होगी ?

उ०—एक बडे होल में बिजली का दिया प्रकाश देता है, परन्तु उस पर जितना भाजन ढका है उसी में प्रकाश समा जाता है, इसी तरह जीव शरीर के प्रमाण से रह सक्ता है ऐसा ही उस का स्वरूप है और इस तरह रहने में उसे कुछ तकलीफ नहीं हो सक्ती, कारण वह अरूपी है।

६७ प्र०—जीव प्रत्येक कार्य स्वतः ही करता है या किसी के द्वारा कराता है ?

उ०—संज्ञीजीव मन द्वारा और असज्ञीजीव मन जैसी शक्ति द्वारा इन्द्रियों से काम काज लेते हैं।

अजीव तत्व ।

(पाठ दसवां)

१ प्र०–अजीव अर्थात् क्या ? उ० चैतन्य रहित जड लक्षण

२ प्र०–इस के मुख्य भेद कितने हैं ?

उ०–दो, रूपी और अरूपी ।

३ प्र०–रूपी अरूपी किसे कहते हैं ?

उ०–जिस द्रव्य में वर्ण, गंध, रस स्पर्श हो वह रूपी और न हो वह अरूपी है ।

४ प्र०–रूपी के मुख्य भेद कितने हैं ?

उ० चार पुद्गलास्तिकाय का स्कंध, देश, प्रदेश और परमाणु ।

५ प्र०–पुद्गलास्ति काय का अर्थ क्या ?

उ०–(पूडन,गलन) मिलना, भिन्न होना जैसा जिसका स्वभाव है वह पुदगल और उसका समूल है पुद्गलास्तिकाय ।

६ प्र०–स्कंध, देश, प्रदेश, और परमाणु अर्थात् क्या ?

उ०–जो द्रव्य पूर्ण-समग्र हो वह स्कध कहलाता है उसमें के किसी भाग की कल्पना करना देश, उसका परम सूक्ष्म से सूक्ष्म भाग प्रदेश, वह सूक्ष्म प्रदेश मुख्य द्रव्य से भिन्न हो जाय वह परमाणु कहलाता है ।

७ प्र० वह परमाणु कितना सूक्ष्म होता है ? इसका विशेष स्पष्टीकरण करो ?

उ०–अनंत सूक्ष्म परमाणु के मिलने से एक बादर परमाणु, अनंत बादर परमाणु के मिलने से एक

उष्ण परमाणु, आठ उष्ण परमाणु से एक शीत परमाणु, आठ शीत परमाणु से एक उर्धरेणु आठ उर्धरेणु से एक त्रसरेणु, आठ त्रसरेणु से एक रथरेणु, आठ रथरेणु इतना उत्तरकुरु देवकुरु के मनुष्य का एक बाल होता है। वैसे आठ बाल—एक महाविदेह क्षेत्र के मनुष्य के सिर का बाल। वैसे आठ बाल—भरतक्षेत्र के मनुष्य के सिर का एक बाल। आठ बाल—एक नीक आठ नीक—एक जूं। आठ जूं—एक जव का मध्य भाग। आठ जव के मध्य भाग—एक अंगुल। बारह अंगुल—एक वेंत (बालिश्त)। दो बालिस्त—१ हाथ। दो हाथ—एक कुची। दो कुची एक धनुष। दो हजार धनुष—एक गाऊ। चार गाऊ—एक योजन।

८ प्र०—अरूपी के मुख्य भेद कितने ?

उ०—धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकास्तिकाय इन तीनों के स्कंधदेश प्रदेश यों नो और दसवा काल यों दस भेद हुए।

९ प्र०—धर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय अर्थात क्या ?

उ०—जीव और पुद्गल के चलने में सहायक हो। जिस प्रकार मछली में तैरने की शक्ति है, परन्तु पानी बिना नहीं तैर सक्ती। जिस तरह उसे पानी मददगार है वैसे ही धर्मास्तिकाय के बिना कोई भी व्यक्ति गति नहीं कर सक्ता और स्थिर रहने में जो मददगार हैं वह अधर्मास्तिकाय का गुण है

१० प्र०- काल के नन्हे से नन्हे भाग को क्या कहते हैं ?
उ०-समय ।

११ प्र०—वह समय कितना सूक्ष्म होता है उसका विस्तार से वर्णन करो ।
उ०—आंख मींचकर खोलने में असंख्याते समय व्यतीत हो जाते हैं उस असंख्य समय को एक आवलिका कहते हैं। ऐसी २५६ आवलिका में निगोद वाले जीव का एक भव हो जाता है ऐसे सत्तर भव से एक श्वासोश्वास होता है। ऐसे सात श्वासोश्वास से एक स्तोक होता है और सात स्तोक के बराबर एक लव ऐसे मितोतर लव का एक मुहूर्त होता है

१२ प्र०—एक मुहूर्त में कितनी आवलिका होती है ?
उ०—१,६७,७७,२१६ आवलिका.

१३ प्र०—एक मुहूर्त में निगोद वाले जीव के कितने भव होते हैं ? उ०—६५,५३६ भव ।

१४ प्र०—एक अहोरात्रि में कितने मुहूर्त होवे हैं ?
उ०—३० मुहूर्त ।

१५ प्र०—एक पुद्गल परावर्तन का समय कब होता है ?
उ०—पद्रह अहोरात्रि=एक पक्ष । दो पक्ष=एक माह । बारह माह=एक वर्ष । पांच वर्ष=एक युग । ८४ लाखवर्ष=एक पूर्वांग । ८४ लाख पूर्वांग=एक पूर्व । असंख्य पूर्व=एक पल्योपम । दस क्रोडा क्रोडी पल्योपम=एक सागरोपम । दस क्रोडा क्रोडी सागरोपम=एक अवसर्पिणी । ये दो मिलकर वीस

क्रोड़ा क्रोड़ी सागरोपम का एक काल चक्र होता है। ऐसे अनन्त काल चक्र होतो एक पुद्गल परवर्तन होता है।

१६ प्र०—अजीव तत्व के चार और दश मिल कर चौंदह भेद कौन से? उनके विस्तार से कितने भेद हैं।

उ०—अरूपी के तीस भेद और रूपी के पाचसौं तीस भेद मिल कर कुल ५६० भेद हुए।

१७ प्र०—३० भेद अरूपी अजीव के किस प्रकार होते हैं? समझाओ।

उ०—धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, अकास्तिकाय, (१) द्रव्य से एक चेत्र से लोक के अनुसार काल से अनादि अनंत, भाव से, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श मूर्ति रहित, (५) गुणसे धर्मास्तिकाय चलने में सहायता करने वाली अधर्मास्तिकाय, स्थिर रहने में मदद देने वाली, और अकास्तिकाय अवगाहन अर्थात् मार्ग देने वाली ये पद्रह भेद हुए। सोलवा काल द्रव्य से अनेक (१७) चेत्र से ढाई द्वीप के अनुसार (१८) काल से आदि अनंत (१६) भावसे वर्ण गंध रस स्पर्श रहित (२०) गुणसे वर्तन लत्तण नये को पुराना करना और पुराने को निकाम का कर देना ये बीम और जो दस अरूपी के पहिले कहे है मिल कर तीस भेद अजीव अरूपी के हुए

१८ प्र०-रूपी अजीव के पांचसौ तीस भेद कौन से ! समझाओ।

उ०-प्रत्येक रूपी द्रव्य में मुख्य गुण पच्चीस हैं। पांच वर्ण (काला, लाल, हरा, पीला, सफेद) दो गंध (सुगंध, दुर्गंध) पाच रस (तीक्ष्ण, कटु, कसाएला, खट्टा, मीठा) पांच सठाण (परिमडल, वट त्रस, चोरस, आयत आठ स्पर्श खरदरा, कोमल, भारी, हलका, शीतल, उष्ण, स्निग्ध रुक्ष, ये पच्चीस मुख्य भेद हैं उनमें के एक एक वर्ण के बीस भेद होते हैं दो गध पाच रस आठ स्पर्श पाच सठाण, ऐसे पाच २ वर्णके सौ भेद हुए एक एक गंध के तेवीस भेद होते हैं (पाच वर्ण, पांच रस, आठ स्पर्श, पाच सठाण) ऐसे दोनों गंध के ४६ भेद हुए एक एक रस द्रव्य के बीस भेद होते हैं (पांच वर्ण दो गध पांच सठाण, आठ स्पर्श) ऐसे पाच रस के सौ भेद हुए हर एक द्रव्य के सठाण के बीस भेद हैं पाच वर्ण, दोगध पांच रस, आठ स्पर्श) यों पाच संठाण के सौ भेद हुए हर एक द्रव्य के स्पर्श के तेईस भेद हैं (पाच वर्ण, पाच रस, दो गध, छ स्पर्श, पांच सठाण) पहिले खरखरा और कोमल वर्ज देना फिर दो २ स्पर्श छोड़ने जाना आठ स्पर्श के १८४ भेद हुए वे सब मिल कर ५३० भेद अजीव रूपी के हुए।

पुन्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, बंध और मोक्ष।

(पाठ ग्यारवां)

१ प्र०—पुन्य तत्व अर्थात् क्या ?
उ०-जिसके फल भोगते हुए मिष्ट हों और जिससे इच्छित वस्तु प्राप्त हो।

२ प्र —पुन्य कितने प्रकार से संचित होता है ?
उ०—नो, अन्न, पानी, जगह, वस्त्र और इनके सिवाय कौन से भी योग्य साधन वे पांच और मन, वचन, काया की शुभ प्रवृत्ति और इन्हीं नम्रता।

३ प्र०-इन नव प्रकार के संचित पुण्य का फल कितनी तरह से भोगते है ? उ०—बयालीस प्रकार से।

४ प्र०-बयालीस प्रकार का सार समझाओ ?
उ०—गति, जाति, शरीर, इंद्री, उपांग, संघण, (दृढता) संठाण, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, बल, तेज, यश सौभाग्य, सौन्दर्य, वैभव, कंठ, लालित्य, इज्जत शान्ति, शक्ति, प्रताप, इत्यादि २ उच्च और सुखदायक प्राप्त हों।

५ प्र०-पाप अर्थात् क्या ?
उ०—जिसके फल भोग ते हुए अनिष्ट और कटु हों।

६ प्र०—वह पाप कितनी प्रकार से संचित होता है ?
उ०—अठारह प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, क्लेश, अभ्याख्यान, पैशुन्य, परपरिवाद, अरति, रति, माया, मोसा, मिथ्यात्व, दर्शन, शल्य।

७ प्र०—पाप के फल कितने प्रकार मे भोगे जाते हैं ?
उ० ८२ प्रकार से

८ प्र०—८२ प्रकार का सार कहो ?
उ०—गति, जाति, इंद्रियां उपाग सघण, सठाण, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, अत्यंत, हलके, खराब और अमनोग्य होते हैं इनके सिवाय निर्बल, निस्तेज अपयश, दुर्भाग्य अस्थिर, दुःस्वर, ज्ञानावरण; दर्शना वरण, पाच अतराय (दान, लाभ, भोग, उपभोग वीर्य की अतराय) पाच प्रकार की निद्रा (निद्रा, निद्रा, प्रचला, प्रचला, प्रचला थिणद्धी,) से लीन हो और चारित्र मोहनी की पचीस प्रकृतियाँ ढकी रहें।

९ प्र०—आश्रव अर्थात् ?
उ०—आत्मरूप तालाब में इंद्रियादिक नालों मे कर्म पापरूप पानी का प्रवाह हो।

१० प्र०—आश्रव के कितने भेद हैं ?
उ०—सामान्य २० भेद हैं मिथ्यात्व, अव्रत प्रमाद, कषाय, अशुभयोग, प्राणातिपात, मृषावाद अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, पाच इंद्रिया तथा मन वचन काया को वश न रखना हर एक कार्य में अविवेक चपलता करना।

११ प्र०—संवर अरथात् क्या ?
उ० आत्मरुपी तालाब में पाप रुप जल के प्रवाहको आता हुआ व्रत प्रत्याख्यादि क्रिया रूप द्वार से रोकले उसे सवर कहते हैं।

१२ प्र उसके भेद कितने हैं ?

उ० सामान्यत बीस, समकित, व्रत, प्रत्याख्यान अप्रमाद, अकषाय, शुभयोग, दया, सत्य, असत्येय, ब्रह्मचर्य अपरिग्रह पांच इंद्रिया तथा मन, वचन, काया इन आठों को वश करना हर एक कार्य में विवेक अचपलता के बीस भेद हुए।

१३ प्र०—निर्जरा अर्थात क्या ?

उ०—आत्मा के प्रदेश से तपश्चर्या द्वारा कर्म अंश मे कर्म की निर्जरा होना अर्थात् जलकर दूर होना उसे निर्जरा कहते हैं।

१४ प्र०—निर्जरा के कितने भेद हैं? उ०—सकाम, अकाम।

१५ प्र०—सकाम अर्थात् क्या ?

उ०—इच्छा पूर्वक समझ कर कर्म से दूर होना।

१६ प्र०—अकाम अर्थात क्या ?

उ०—इच्छा बिना, तिर्यंच की तरह कष्ट सहन करके कर्म की निर्जरा होना।

१७ प्र —बंध तत्व अर्थात् क्या ?

उ०—आत्मा प्रदेश और कर्म पुद्गल के दल क्षीर नीर की तरह तथा लोह अग्नी की तरह एकत्र होना।

१८ प्र०—उसके भेद कितने हैं ?

उ०—चार, प्रकृति बंध, स्थिति बंध, अनुभाग बंध, प्रदेश बंध।

१९ प्र०—प्रकृति बंध क्या ?

उ —जो कर्म बांधे जाते हैं उनका फल सुख या दुःख प्राप्त होने का स्वभाव या परिणाम।

२० प्र०—स्थिति अर्थात् क्या ?

उ०—जो कर्म जितने समय में संचित हुआ है उतने ही समय तक भोगना उसे स्थिति बंध कहते हैं।

२१ प्र०—अनुभाग अर्थात् क्या ? उ०—वह कर्म तीव्र या मंद जैसी इच्छा से संचित हुआ हो

२२ प्र० प्रदेश अर्थात् क्या ?

उ०—उस कर्म पुद्गल के जितने दल संचित हुए हों उसे प्रदेश बन्ध कहते हैं।

२३ प्र०—मोक्ष अर्थात् क्या ?

उ०—सर्व आत्माके प्रदेश से सकल बंधन का छूटना सकल दोषादि से मुक्त होना, सकल कार्य की सिद्धि होना उसे मोक्ष कहते हैं।

२४ प्र०—मोक्ष जाने के कितने साधन हैं ?

उ०—चार, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप।

२५ प्र०—मोक्ष जाने वाले के कितने बोलों की अत्यन्त आवश्यक्ता है ?

उ०—मनुष्यत्व, वज्र रुप, भनाराच, संवयण, परम शुक्र ध्यान क्षायक सम्यक्त्व यथाख्यात, चारित्र, परम शुक्र लेश्या, पंडित, वीर्य, केवलज्ञान केवलदर्शन।

नव तत्व सम्बन्धी विशेष प्रश्नोत्तर

पाठ बारहवां.

१ प्र०—जीव शरीर के कौन से भाग में रहता है ?

उ०–शरीर के समस्त भाग में वैसे तिल में तेल और दूध में घृत है।

२ प्र०–प्रत्येक जीव समान प्रदेश गुण शक्ति ज्ञान और स्वभाव वाले होते हैं या भिन्न २ ?

उ०–प्रत्येक जीव मूल स्वभाव से वो सब तरह स समान होते हैं परंतु उपाधि (कर्म) के कारण शक्ति ज्ञान गुण और स्वभाव में एक दूसरे से कम अधिक देखे जाते हैं।

३ प्र०–जीव को कर्म कब से लगे है ?

उ०–अनादि काल से जीव और कर्म साथ ही हैं।

४ प्र०–स्थूल देह से जब जीव भिन्न होता है तब उसके साथ क्या क्या रहता है ?

उ०–तेजस और कारमान ये दो शरीर और शुभाशुभ कर्म सामग्री ?

५ प्र०–मुक्त हुए जीव को कर्म लगे या नहीं ?

उ०–मुक्त जीवों को कर्म नहीं लगते।

६ प्र०–कर्म किसको लगते हैं जीव को या कर्म को

उ०–कर्म सहित जीव है और उसे ही कर्म लगते हैं।

७ प्र०–अनादि काल से रहने वाली कितनी वस्तुएं हैं ?

उ०–अनंत जीव परमेश्वर और जगत (पुद्गल समूह)

८ प्र०–इन तीनों में से किसी का किसी समय नाश होता है या नहीं ?

उ०–नहीं इन तीनों में से किसी का नाश नहीं होता।

९ प्र०–जीव मात्र सुख चाहते हैं वह सुख कहां है ?

उ०–सुख जीव के पास ही है।

१० प्र० अपने ही पास हो तो फिर अन्य जगह क्यों ढूंढता फिरता है।

उ०–अपनी अज्ञानता के कारण।

११ प्र०–जीव स्वतन्त्र है या परतन्त्र ?

उ०–जब तक कर्म से विमुक्त न हो वहां तक परतन्त्र और विमुक्त होने पर जीव स्वतन्त्र है।

१२ प्र०–सुख कितने प्रकार का है ?

उ०–दो, आत्मिक सुख और पौद्‌गलिक सुख।

१३ प्र०–पौद्‌गलिक सुख के कितने भेद हैं ?

उ०–दो, शारिरिक, मानसिक।

१४ प्र०–दुःख के कितने भेद हैं ?

उ०–दो, शारिरिक मानसिक।

१५ प्र०–एक जीव के पास कर्म रूपी कितने परमाणु पुद्‌गल होते हैं ? उ०–अनन्त।

१६ प्र०–जिस समय कर्म बन्धे या छूटे तब एक समय में कितने परमाणु पुद्‌गल होते हैं ? उ०–अनन्त।

१७ प्र०–जीव जब स्थूल शरीर से निकल कर दूसरी गति में जाता है तब उसकी गति टेढी तीर्छी रहती है या सीधी ? उ०–सीधी तनिक भी टेढी नहीं।

१८ प्र०–किसी जीव को मजबूत काच या लोहे की कोठी में बन्द कर दें तो भी जीव निकल सकेगा ?

उ०–हां, स्थूल शरीर को छोड कर उसका निकलना सरल है।

१९ प्र०–दो सूक्ष्म शरीर और कर्मका बडा भारी समूह जीव के साथ रहते भी वज्रसी बन्द कोठी में से जीव कैसे निकल सक्ता है ?

उ० वज्र जैसी मजबूत कोठी में रहे हुए छिद्र अपने चर्म चक्षु से नहीं देखे जाते परन्तु जीव के निकल जाने को उसमें असंख्य छिद्र रहते हैं।

२० प्र०—दूसरी गति में जाते हुए जीव को कोई रोकने वाला या ठहराने वाला कोई स्थान मध्य में आता है या नहीं ?

उ०—नहीं, जीव और उसके साथ रही हुई उपाधि सब इतनी अधिक सूक्ष्म रहती है कि उसे दृढ से दृढ़ वज्र की भींत से भी निकल जाने में कोई कठिनाई नहीं होती।

२१ प्र०—एक परमाणु में वर्ण गन्ध, रस, स्पर्श कितने होते हैं ?

उ०—चाहे जिस जाति का एक वर्ण, एक गन्ध, एक रस और दो स्पर्श रहते हैं।

२२ प्र०—शुभाशुभ कर्मों में वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श कितने होते हैं ?

उ०—कर्मों के समूह में पाच वर्ण, दो गन्ध पाच रस और चार स्पर्श रहते हैं।

२३ प्र०—आठ स्पर्श में से चार स्पर्श कौन से नहीं होते ?

उ०—भारी, हलका, दृढ और कोमल ये चार नहीं होते और बाकी के चार होते हैं।

२४ प्र०—ऐसे चार स्पर्श वाले पुद्गल दूसरे कौनसे हैं ?

उ०—शुभाशुभ कर्म, मन, वचन, और कार्मण शरीर के पुद्गल चो स्पर्शी (चार स्पर्श वाले) होते हैं।

२५ प्र०—रूपी और अरूपी किसे कहते हैं ?

उ०—वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श सहित जो द्रव्य हो उसे रूपी और न हो उसे अरूपी द्रव्य कहते हैं।

२६ प्र०-जीव जब कर्म बधन करता है तब वे पुद्गल कहा से ग्रहण करता है?

उ०—अपने अन्यन्त समीप रहे हुए पुद्गलों को ग्रहण करता है।

२७ प्र०—किसी भी रंग का एक परमाणु हो उस में कुछ मिले सिवाय फेरफार हो सके या नहीं?

उ०—हा, उस की वृद्धि, हानि, होती है वैसे ही वर्ण गध रस, बदलते भी हैं।

२८ प्र०—परमाणु जैसे सूक्ष्म द्रव्य में कुछ मिला या निकल गया, हानि हुई या वृद्धि, स्वरूप बदलना कैसे बन सक्ता है?

उ०—परमाणु का ऐसा ही स्वभाव है।

२९ प्र०—पानी के परमाणु पृथ्वी के रूप में और पृथ्वी के परमाणु पानी के रूप में होते है या नहीं?

उ०—हां, पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु, वनस्पति इन सब के परमाणू एक दूसरे रूप में बदलते हैं परन्तु जल के या पृथ्वी के परमाणु जल या पृथ्वी रूप में ही रहें ऐसा नहीं हो सक्ता।

३० प्र०—पृथ्व्यादि परमाणु जल रूप और जल के पृथ्व्यादि रूप में हो जाते हैं इसे दृष्टांत देकर समझाओ।

उ०—ऑक्सीजन और हैड्रोजन नामक दो वायु एकत्र करने से उन का पानी हो जाता है पानी वृक्ष के मूल में सींचने से मूल द्वारा वृक्ष में प्रवेश

हो वृक्ष रूप हो जाता है, वृक्ष सुखा कर जीर्ण हो जाता है तब पृथ्वी में मिल जाता है उसी पृथ्वी के परमाणु अन्य प्रयोग होने पर अन्य रूप में हो जाते है।

२१ प्र०—एक जाति के वर्ण, गंध, रस के परमाणु पुद्गल अन्य वर्ण गंध रस के रूप में हो जाते है, दृष्टांत से समझाओं?

उ०—कालेरंग की मिट्टी के प्रदेश पर नीम, गुलाब जुई, प्रभृति, वृक्ष के बीज लगाने से नीम का बीज अपने स्वरूप को प्रकट करने वास्ते अपने से ही वर्ण, गंध, रस के परमाणु को खींचेगा और गुलाब, व जुई अपने अनुकूल परमाणुओं को ही खींचेंगे और उस काली मिट्टी के परमाणुओ को अपने २ रूप में परिणित करेंगे, काली दिखती हुई मिट्टी को गुलाब का बीज, गुलाब के रूप में फिरा सक्ता है।

२२ प्र०—बड का जीर्ण बीज जमीन में रोपने से उसे भारी बड वृक्ष के रूप में कौन बनाता है।

उ०—उस बडके बीज में ऐसी शक्ति होती है कि उस मिट्टी, पानी, प्रकाश, गर्मी ऐसी वस्तुओं का सुयोग प्राप्त होने पर वह विकास पाता है और समीप के पुद्गलों को खींच अपने रूप में परिणित कर बड वृक्ष के रूप में बनाता है। इसी तरह प्रत्येक वृक्ष अनुकुल सयोग प्राप्त होने पर

उत्पन्न होकर चढते हैं और प्रतिकुल संयोग पा नाश पाते है।

३३ प्र०—धर्म, पुण्य, पाप इनमें क्या फर्क है?

उ०—जीव के साथ बंधने वाले शुभ कर्म पुन्य और अशुभ कर्म पाप तथा जीव से कर्म की निर्जरा होना (छूट जाना) धर्म गिना जाता है।

३४ प्र०—किसी जीव के पास सिर्फ पाप कर्म या सिर्फ पुन्य कर्म ही हो सके हैं या नहीं?

उ०—नहीं अधिक या कम परन्तु पाप कर्म और पुन्य कर्म, दोनों रहते हैं।

गुण स्थानक।

(पाठ तेरहवां)

१ प्र०—जीव के गुण की एक २ से उन्नत सीढियों के स्थान को क्या कहते हैं? उ० गुण स्थानक।

२ प्र०—गुण स्थान का विशेषार्थ दृष्टांत देकर समझाओ।

उ० जैसे किसी खास स्थान पर जाने में रास्ते में स्थान या स्टेशन पर से होकर जाना होता है तथा किसी मंजिल पर जाना हो तो सोपान की पत्तियों पर से उसी मंजिल पर जाना पडता है उसी तरह जीव को मुक्ति रूप अचल स्थान पर पहुचने में जो २ गुण स्थानक पसार करने पडते हैं वे गुणस्थान कहलाते हैं।

३ प्र०—गुण स्थानक कितने और कौन से हैं?

उ०—चौदह, १ मिथ्यात्व २ साश्वादान ३ मिश्र ४ अविरति सम्यक दृष्टि ५ देशविरति ६ प्रमत संजति ७ अप्रमत सजति ८ निवृति बादर ९ अनिवृति बादर १० सूक्ष्म संपराय ११ उपशात मोह १२ क्षीण मोह १३ संयोगी केवली १४ अयोगी केवली।

४ प्र०-मिथ्यात्व अर्थात् क्या ?

उ०—दृष्टि का विपर्यास (खोटापन)।

५ प्र०—मिथ्यात्व को दृष्टात से अधिक स्फुट करके समझाओ।

उ०—जैसे धतुरे के बीज खाने वाला सफेद वस्तु को पीली देखता है वैसे ही मिथ्यात्व मोहनी कर्म के उदय से प्राणी जगत का वास्तविक स्वरूप आत्मा का हित, सुख का मार्ग, शाति का आगार नहीं देख सक्ता सद्धर्म सद्गुरु, सत्य देव, मिथ्यात्व के दबाव से नहीं पहचान सक्ता और देह को ही आत्मा समझता है।

६ प्र०—जीव को मिथ्यात्व कब से लगा होगा ?

उ०—अनादि काल से जीव मिथ्यात्व गुणस्थानक में रहा हुआ है।

७ प्र०—मिथ्यात्व मे ऐसा कौन सा गुण है जिसमे मिथ्यात्व गुण स्थानक कहलाता है।

उ०—मिथ्यात्व मे रहने से गुप्त सर्व ज्ञान में से अक्षर के अनत वे भाग जितना ज्ञान प्रकट रहता है इसलिये उसे गुण स्थानक कहते हैं।

८ प्र –जीव को इतना भी प्रकट ज्ञान न रहे तो ?
उ॰–ज्ञान का गुण तनिक भी प्रकट न हो तो जीव का नाश हो अजीव हो जाय परन्तु ऐसा कभी नहीं हो सक्ता।

९ प्र॰–मिथ्यात्व मुख्य कितने प्रकार का है ?
उ॰–पाच, अभिग्राहिक, अनभिग्रहिक, अभिनिवेमिक, संशयिक अणाभोगिक।

१० प्र॰–अभिग्रहिक अर्थात् क्या ?
उ॰–प्रत्येक असत्य (मिथ्या बात को) को बिना विचारे ग्रहण कर रखने की मूढ़ता।

११ प्र॰ अनभिग्राहिक अर्थात् क्या ?
उ॰–किसी बात का निर्णय किये बिना सांच, झूठ, की स्वीकृति करे।

१२ प्र॰–अभिनिवेसिक अर्थात् क्या ?
उ॰–समझ बूझ कर अपना दुराग्रह रक्खे छोड़े नहीं।

१३ प्र॰–संशयिक अर्थात् क्या ?
उ॰–प्रत्येक सच बात में भी शंका रक्खे।

१४ प्र॰–अणाभोगिक अर्थात् क्या ?
उ॰–वे भानावस्था, जिस में किसी बात की कुछ खबर न रहे।

१५ प्र॰–इन पाचो मिथ्यात्व में से अधिक खराब मिथ्यात्व कौनसा और कुछ ठीक कौन सा ?
उ॰–अभिनिवेसिक अधिक खराब है क्योंकि जान बूझ कर खाली दुराग्रह करता है इसलिये यह

दुःसाध्य बीमारी के सदृश है और अनाभिग्राहक ठीक है कारण कि उस में नम्रता के गुण है और खोटे के साथ अच्छे को भी स्वीकारता है इससे उस में मार्गानुसारी पना प्राप्त होता है।

१६ प्र०–मार्गानुसारी अर्थात् क्या ? *

उ०–अनादि काल से संसार में परिभ्रमण करते हुए जीव का मोक्ष के मार्ग तरफ लगना।

१७ प्र०–इन पाचों के सिवाय मिथ्यात्व का समावेश कौन से मिथ्यात्व में होता है ? उ०–अभिग्रहिक में।

१८ प्र०–दूसरे गुण स्थानक का नाम क्या ?

उ०–साश्वादान सम्यक्त्व।

१९ प्र०–साश्वादान का अर्थ क्या ?

उ०–आश्वादान सहित वह साश्वादान।

२० प्र० आश्वादान किसका ?

उ० उपरोक्त गुण स्थानक को त्यागते ही इस गुण स्थान में जीव छे आवलिका जितना समय रहता है अर्थात् ऊपरके स्थान से नीचे के स्थान में आते हुए मध्य के समय में पूर्व के गुण का स्वाद रहता है वह।

२१ प्र०–साश्वादान एक भवमें कितने समय आता है ?

उ०–पाच वक्त।

* विशेष जानना हो तो "मार्गानुसारी" के ३५ गुण की पुस्तक –)। का टिकिट भेजकर मगाओ। पता –

जैन पुस्तक प्रकाशक कार्यालय, ब्यावर (रा पू.)

प्रकाशक

२२ प्र०–एक समय जिन्हें साश्वादान आता है उसका फल क्या ?

उ०–कृष्ण पक्षी था वह शुक्ल पक्षी हुआ, असंख्य ऋण मिट कर स्वल्पऋण रहता है वैसा फल होता है।

२३ प्र०–साश्वादान सम्यक्त्वी उत्कृष्ट कितने समय में मोक्ष जाता है ?

उ० अर्द्ध पुद्गल परावर्तन में आखिर मोक्ष जाता है।

२४ प्र०–पुद्गल परावर्तन का समय कितना ? उ० -अनंती उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी जिसमें समाजाय।

२५ प्र०–तीसरे गुणस्थानक का नाम क्या है ?

उ०–मिश्र गुणस्थानक।

२६ प्र०–मिश्र का अर्थ क्या ?

उ०–सम्यक्त्व और मिथ्यात्व की मिश्रता।

२७ प्र०–मिश्रपने को दृष्टांत से समझाओ ? उ०–जिस तरह श्री खंड में मिठास और खटास दोनों साथ २ रहते हैं, संध्या समय रात, दिन का मिश्र पना रहता है उसी तरह मध्यम भाव उत्पन्न होता है उसे मिश्र गुण स्थानक कहते हैं।

२८ प्र०-उसकी मान्यता कैसी होती है ? उ०–सत्य और असत्य दोनों मार्ग की ओर रुचि रखता हो, एक में भी निश्चित न हो परन्तु शंका शील हो।

२९ प्र०–मिश्र गुणस्थानक की स्थिति कितनी है ?

उ०–अंतर मुहुर्त रह कर या तो ऊपर चढ़ता है या नीचे गिरता है।

दुःसाध्य बीमारी के सदृश है और अनाभिग्राहिक
ठीक है कारण कि उस में नम्रता के गुण है
और खोटे के साथ अच्छे को भी स्वीकारता है
इससे उस में मार्गानुसारी पना प्राप्त होता है।

१६ प्र०-मार्गानुसारी अर्थात् क्या ? *
उ०-अनादि काल से संसार में परिभ्रमण करते हुए
जीव को मोक्ष के मार्ग तरफ लगना।

१७ प्र०-इन पाचों के सिवाय मिथ्यात्व का समावेश कौन
से मिथ्यात्व मे होता है ? उ०-अभिग्रहिक में।

१८ प्र०-दूसरे गुण स्थानक का नाम क्या ?
उ०-साश्वादान सम्यक्त्व।

१९ प्र०-साश्वादान का अर्थ क्या ?
उ०-आश्वादान सहित वह साश्वादान।

२० प्र० आश्वादान किसका ?
उ० उपरोक्त गुण स्थानक को त्यागते ही इस गुण
स्थान में जीव छ आवलिका जितना समय रहता
है अर्थात् ऊपरके स्थान से नीचे के स्थान में
आते हुए मध्य के समय मे पूर्व के गुण का
स्वाद रहता है वह।

२१ प्र०-साश्वादान एक भवमें कितने समय आता है ?
उ०-पाच वक्त।

---

* विशेष जानना हो तो "मार्गानुसारी" के ३५ गुण की
पुस्तक ‍)॥ का टिकिट भेजकर मगाओ। पता —
जैन पुस्तक प्रकाशक कार्यालय, ब्यावर (रा पू)
प्रकाशक

२२ प्र०—एक समय जिन्हें साश्वादान आता है उसका फल क्या ?

उ०—कृष्ण पत्ती था वह शुक्ल पत्ती हुआ, असंख्य ऋण मिट कर स्वल्पऋण रहता है वैसा फल होता है ।

२३ प्र०—साश्वादान सम्यक्त्वी उत्कृष्ट कितने समय में मोक्ष जाता है ?

उ०-अर्द्ध पुद्गल परावर्तन में आखिर मोक्ष जाता है।

२४ प्र०—पुद्गल परावर्तन का समय कितना ? उ० -अनंती उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी जिसमें समाजाय ।

२५ प्र०—तीसरे गुणस्थानक का नाम क्या है ?

उ०—मिश्र गुणस्थानक ।

२६ प्र०—मिश्र का अर्थ क्या ?

उ०—सम्यक्त्व और मिथ्यात्व की मिश्रता।

२७ प्र०—मिश्रपने को दृष्टांत से समझाओ ? उ०—जिस तरह श्रीखंड में मिठास और खटास दोनों साथ २ रहते हैं सध्या समय रात, दिन का मिश्र पना रहता है उसी तरह मध्यम भाव उत्पन्न होता है उसे मिश्र गुण स्थानक कहते हैं ।

२८ प्र०-उसकी मान्यता कैसी होती है ? उ०—सत्य और असत्य दोनों मार्ग की ओर रुचि हो, एक में भी निश्चित न हो परन्तु शंका ील

२९ प्र०—मिश्र गुणस्थानक की स्थिति कितनी है ?

उ०-अंतर मुहुर्त रह कर या तो ऊपर चढ़ता नीचे गिरता है ।

३० प्र०—चौथा गुण स्थानक का नाम क्या है ?
उ०—अविरति सम्यक्त्व।

३१ प्र०—अविरति सम्यक्त्व का अर्थ क्या ?
उ०—असत्य मान्यता को त्याग सत्य मानने की श्रद्धा हो परंतु व्रतको न आदर सके।

३२ प्र०—सम्यक्त्व के कितने भेद हैं ?
उ०—पाच क्षायिक क्षयोपशमिक, औपशमिक, सास्वादान, और वेदक।

३३ प्र० क्षायिक, क्षयोपशमिक और औपशमिक का अर्थ क्या ?
उ०—मोहनीय कर्म की मूल दो प्रकृतिया हैं ? चारित्र मोहनीय २ दर्शन मोहनीय। इनमें से चारित्र मोहनीय की २८ प्रकृतिया हैं और दर्शन मोहनीय की तीन, १ समकित मोहनीय २ मिश्र मोहनीय ३ मिथ्यात्व मोहनीय। ये तीन और दर्शन मोहनीय की २८ प्रकृति। चार अनतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ इन सात प्रकृति का क्षय करने से क्षायिक समकित गिनी जाती है। इनका उपशम करने से उपशम समकित और कुछ क्षय और कुछ उपशम करने से क्षयोपशमिक समकित गिनी जाती है।

३४ प्र०—अनतानु बधी कषाय अर्थात् क्या ? उ०—अनत है अनुबंध जिससे अर्थात् जो तीव्र कषाय के सेवन से अनत कर्म के पुद्गलों का बंध अनुक्रम से पडता है।

३५ प्र०-समकित मोहनीय का थोड़े में शब्दार्थ कहो ?
उ०-समकित होते भी मोहनीय की अमुक प्रकृति द्वारा खीजना पड़े

३६ प्र०-मिथ्यात्व मोहनीय अर्थात् क्या ? उ०-मिथ्यात्व में गिरना पड़े वह।

३७ प्र०-मिश्र मोहनीय अर्थात् क्या ? उ०-कुछ समकित और कुछ मिथ्यात्व इन दोनों के मिश्र में रहना पड़े वह

३८ प्र०-पाचवें गुण स्थानक का नाम क्या है ? और उस का अर्थ क्या ?
उ०-समकित सहित शक्ति अनुसार व्रतों को अंगीकार करना अर्थात् पाप को देश से तजना यह देश विरति नामक पाचवां गुण स्थान गिना जाता है।

३९ प्र०-इस गुण स्थान में कितनी प्रकृतियों का क्षयोपशम होता है ?
उ०-सात, प्रकृति पहिले कही हुई वे और अप्रत्याख्यान क्रोध, मान, माया और लोभ इन ग्यारहों का क्षयोपशम होता है।

४० प्र०-इस गुण स्थान वाला जीव कितने भव में मोक्ष जाता है ?
उ०-जघन्य तीसरे भव और उत्कृष्ट पंद्रहवें भव मोक्ष जाता है।

४१ प्र०-देश विरति में खास कितने और कौन से गुण प्रकट होते हैं ?

उ०—इकवीस-अल्प इच्छा, अल्पारम्भ, अल्पपरिग्रह सुशील धर्म वृत्ति, पाप भीरू नीति निपुण एकांत आर्य, विवेक दृष्टि, न्यायावलम्बी आ आराधक, अक्षुक, निष्कपट, कोमल लोकप्रिय सौम्य, परगजु विनित, कृतज्ञ, सरल स्वभा और सत्यानुप्रेची।

४२ प्र०—ऐसे इकवीस गुण वाले श्रावक के कितने व्रत हैं?

उ०—बारह, पाच अणुव्रत, तीन गुण व्रत, ४ शिक्षा व्रत।

४३ प्र०—श्रावकपना एक भव में मन से कितने स आता है?

उ०—प्रत्येक (नव) हजार समय आता है।

४४ प्र०—छटवें, सातवें, गुणस्थानक के नाम क्या?

उ०—प्रमत संयति और अप्रमत संयति।

४५ प्र०—प्रमत और अप्रमत संयति का अर्थ क्या?

उ०—ये दोनों सर्व विरति होते हुए भी सयम में थाड़ा बहुत प्रमाद सेवने वाले होते है वे प्रमत संयति, और संयम में प्रमाद सेवने हारे न हों उन्हें अप्रमत संयति कहते है।

४६ प्र०—छट्टे और सातवें गुण स्थानक में कितनी प्रकृतियें का चयोपशम होता है?

* विशेष जानने के लिये "श्रावक धर्म दर्पण" द्वितीय भाग ॥-) के टिकिट भेजकर मगाओ। पता —
जैन पुस्तक प्रकाशक कार्यालय, ब्यावर (रा पू)
प्रकाशक

उ०—छट्टे गुणस्थान में ग्यारह प्रकृति पहिले कही वे और प्रत्याख्यान के क्रोध मान, माया, लोभ यों पद्रह प्रकृति का च्योपशम होता है और सातवें गुणस्थान में संजल के क्रोध सहित सोलह प्रकृतियों का चयोपशम होता है।

४७ प्र०—छट्टे, सातवें गुणस्थान में कौन होता है ?

उ० -पांच महाव्रत धारी साधु पुरुष।

४८ प्र०—साधुपना एक भव में मन से कितने समय आता है ?

उ०—उत्कृष्ट नव सौ वार।

४९ प्र०—आठवें गुणस्थानक का नाम क्या ? और उसमें कितनी प्रकृतियो का चयोपशम होता है ?

उ० -पहिले क ी हुई सोलह प्रकृति और सजल का मान मिल कर १७ प्रकृति का चयोपशम होता है उसको निवृति बादर गुणस्थान कहते हैं।

५० प्र० -उस गुणस्थानक की कैसी स्थिति होती है ?

उ०—शुक्ल ध्यान प्रकट होता है, सहज समाधि रहती है, केवल्यज्ञान रूप सूर्य के उदय के पूर्व ही अनुभव रूपज्ञान अरुणोदय प्रकट होता है।

५१ प्र०—इस गुणस्थानक में हरएक जीव जाने वाला अत मे केवल्यज्ञान की सीमा तक पहुच सक्ता है ?

उ०—इस जगह उपशम और चपक ऐसी दो विचार की श्रेणिया हैं। इनमें से जो उपशम श्रेणी पर चढता है वह ग्यारहवें गुणस्थान में जाकर पतित होजाता है, और चपक श्रेणी में चढ़ता है वह कर्म के दल को तोड़ते २ समय २ पर अ-

नत-गुनी विशुद्धि करते तेरहवें-गुणस्थान
जा केवलज्ञान प्राप्त कर लेता है।

५२ प्र०—इस गुणस्थानक का दूसरा नाम क्या है ?
उ०—अपूर्व करण (पहिले प्राप्त नहीं हुआ) गुण स्थानक।

५३ प्र०—इस गुणस्थान वाला कितने भव करके मोक्ष जाता।
उ०—जघन्य इसी भव में, और उत्कृष्ट तीसरे भव.

५४ प्र०—निवृति वादर का अर्थ क्या ?
उ०—वादर कषाय से निवर्तित।

५५ प्र०—नवमे गुणस्थानक का नाम क्या ? और इसमें कितनी प्रकृतियो का क्षयोपशम होता है।
उ०—सतरह पहिले कही वे, और संजल की माया, स्त्री वेद पुरुष वेद, नपुंसक वेद यों इकवीस प्रकृति का क्षयोपशम करता है उसको अनिवृति वादर गुणस्थानक कहते हैं।

५६ प्र०—अनिवृति वादर का अर्थ क्या ?
उ०—सर्वथा क्रिया द्वारा निवृति नहीं परन्तु वादर संपराय क्रिया रही।

५७ प्र०—दसवें गुणस्थानक का नाम क्या ? और उसमें कितनी प्रकृतियों का क्षयोपशम होता है।
उ०—इकवीस पहिले कही वे और हास्य, रति, अरति भय, शोक जुगुप्सा इन सत्ताईस प्रकृतियों का क्षयोप शम करता है उसे सूक्ष्म संपराय नामक दसवा गुण स्थानक कहते हैं।

५८ प्र०—सूक्ष्म सपराय अर्थात् क्या ?

उ०-सूक्ष्म अर्थात् थोड़ी सम्पराय क्रिया अर्थात् छद्मस्त की क्रिया रही है उसे सूक्ष्म संपराय कहते हैं।

५९ प्र०-ग्यारहवें गुणस्थानक का नाम क्या ? और उसमें कितनी प्रकृतियों का क्षयोपशम होता है ?

उ०-सत्तावीस पहिले कहीं वे और संजल का लोभ ऐसी अट्ठाइस प्रकृति का उपशम करता है उसे उपशांत मोह नामक ग्यारहवां गुणस्थान कहते हैं

६०प्र०-उपशांत मोह का अर्थ क्या ?

उ०-उपशात अर्थात् जिसने मोह सर्वथा दबा दिया है अर्थात् पानी के नीचे मैल स्थित रहता है, परन्तु पानी निर्मल दृष्टिगत होता है, उसी तरह यहां पर मोहनी कर्म के उपशम होने से अधवसाय निर्मल होते है।

६१ प्र०-इस गुणस्थानक का परिणाम क्या ?

उ०-इस गुणस्थानक में जो मर जाय तो अनुत्तर विमान में जाकर देवता हो, और चौथे गुण स्थानक में रहे और नहीं तो अवश्य पतित हो तब दसवें से प्रथम गुणस्थानक में आजाय परन्तु वहा से आगे न चढ़े।

६२ प्र०-बारहवें गुणस्थानक का नाम क्या ! और इसमें कितनी प्रकृतियें दबती है ?

उ०-पहिले कही हुई अट्ठाईस प्रकृतियों को सर्वथा दबाता है उसे क्षीण मोहनीय नाम का बारहवां गुणस्थान कहते हैं।

६३ प्र०—उस गुणस्थानक की स्थिति (परिणाम) कैसी होती है ?

उ०—क्षपक श्रेणी, क्षायक भाव, क्षायक समकित, और यथा ख्यात चारित्र्य में रहते कारण सत्य जोग सत्य, भाव सत्य, अमायी, अकषाई वितरागी, अविकारी, महाज्ञानी, महाध्यानी, वर्धमान परिणामी, अप्रतिपाति होता है; वहां अंतर मुहुर्त रहता है और इसी जगह ज्ञानावरणीय, दर्शना वरणीय, अंतराय का भी क्षय कर तेरहवें गुणस्थानक के पहिले समय में ही केवल ज्योति प्रकट करता है उसे क्षीण मोहनीय गुणस्थानक कहते हैं।

६४ प्र०—तेरहवें गुणस्थान का नाम क्या ? और उसका लक्षण क्या ?

उ०—वह दश बोल सहित हो, सजोगी, सशरीरी, सलेशी, वीतरागी, यथा ख्यात चारित्री क्षायिक सम्यक्त्वी, पडित वीर्यवान, शुक्लध्यानी, केवल ज्ञानी, केवल दर्शनी होता है उसे सजोगी केवली गुणस्थानक कहते हैं।

६५ प्र०—उस गुणस्थान में कितने समय रहता है ?

उ०—जघन्य अंतर मुहुर्त और उत्कृष्ट थोडा कम क्रोड पूर्व।

६६ प्र०—तेरहवें गुणस्थानक में रहे हुए कैसे गिने जाते हैं।

उ०—केवली भगवान, जग दुद्धारक अनंतज्ञान दर्शन के आधार भूत, भविष्य, वर्तमान, काल

के सर्व भावों को एक समय में यथार्थ रीति से जानने वाले।

६७ प्र०—चौदहवें गुणस्थानक का नाम क्या?

उ०—अयोगी केवली गुणस्थानक।

६८ प्र०-अयोगी केवली अर्थात् क्या?

उ०—इस गुण स्थान में मन, वचन, काया के जोग और प्राण का निरोध कर रूपातित परम शुक्ल ध्यान में अडोल स्थिति में पचाक्षर बोले जितने समय तक रह चार (वेदनी, आयुष्य, नाम, गोत्र,) कर्म का क्षय कर शरीर से मुक्त होता है।

६६ प्र०—तेरहवें गुणस्थानक में कितने कर्म्मों का क्षय होता है?

उ०—मोहनीय ज्ञानावरणीय, दर्शना वरणीय, अंतराय इन चार घनघातिय कर्म का क्षय होता है, और बाकीके चार जली हुई रस्सी के समान रहते हैं।

७० प्र०-चौदहवें गुणस्थानक से मुक्त हो कहा जाते हैं?

उ०—सिद्ध क्षेत्र में, अनंत सिद्ध स्वरूप में विराजित होते हैं।

७१ प्र०-वे सिद्ध भगवान इस लोक में कभी आते है?

उ०—नहीं उनको यहां आने का कारण नहीं अर्थात् कभी भी नहीं आते।

७२ प्र०—उनकी शक्ति किस प्रकार की होती है?

उ०—अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत बल, वीर्य; अनंत तेज, अखंड आनन्द, और अनंत आव्या बाध, आत्मसुख, के धर्ता हैं।

७३ प्र०—उनका स्वरूप कैसा होता है ?

उ०—उनका स्वरूप अगम्य, अगोचर, अवाच्य अलख अचल, और अनंत स्वरूपी होता है।

७४ प्र०—सिद्ध हुई आत्मा एं कितनी होगी ?

उ०—भिन्न २ आत्माएं सिद्ध पद पाई हैं इस पक्ष से अनंत सिद्ध हैं, और सबका स्वरूप समान है इससे एक है। जहा अनंत है वहां अनंत है जहा एक है इस पक्ष से एक गिनी जाती है।

कर्म प्रकृति के प्रश्नोत्तर।

पाठ चौदवां

१ प्र०—जीवको दुख सुख देने का निमित्त कौन है ?

उ०—जीव के बाधे हुए शुभा शुभ कर्म।

२ प्र०—ये कर्म कितने प्रकार के है ? उ०-आठ।

३ प्र०—उनके नाम कहो ?

उ०—ज्ञानावर्णीय, दर्शना वरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयु नाम, गोत्र, अतराय।

४ प्र०—प्रत्येक कर्म जीव की कौन २ सी शक्तियों के अवरोध करने वाले हैं ? उ०—ज्ञाना वरणी ये ज्ञानकी अनंत शक्ति को दबाने वाला है, दर्शना वरणीय दर्शन को, वेदनीय आत्मीय अनत सुख को, मोहनीय चायिक सम्यक्त्व को, आयुष्य अक्षय स्थिति गुण को, नाम कर्म अमूर्ति गुण को, गोत्र अगुरु लघु गुण को, अंतराय आत्मिक अनन्त शक्ति को रोकने वाला है।

५ प्र०—ज्ञाना वरणीय कर्म कैसे बन्धता है ?

उ०-ज्ञानी के कार्य में विघ्न डालने से, उनका उपकार भूलजाने से, उनका अपमान करने से, उनके साथ वितडावाद करने से झगड़ा क्लेश, द्वेष तथा किसीके ज्ञान की अंतराय देने से ज्ञाना वरणीय कर्म का बन्ध होता है।

६ प्र०—इस कर्म का क्या फल है ?

उ०—मति ज्ञानादि कोई ज्ञान पैदा नहीं होता है तथा पाच इन्द्रिया का ज्ञान या विज्ञान भी नहीं होता है वह जड मूढ़ पशु सा रहता है।

७ प्र०-उस कर्म की स्थिति कितनी है ? उ०—जघन्य अन्तर्मुहूर्त की, उत्कृष्ट तीस क्रोडा क्रोड सागर की।

८ प्र०—दर्शनावरणीय कर्म कैसे बन्धता है ?

उ०—दर्शन (सम्यक्त्व-अथवा शासन या दर्शन शक्ति) में विघ्न करने से, टेढ़े बोलने से, त्रुटि देखने से, असातना करने से, उनके विपक्ष भूत बनने से, तथा हर किसीको इनकी अतराय देने से दर्शना वरणीय कर्म का बध होता है।

९ प्र०—इस कर्म का क्या फल है ? उ०—देखने में प्रत्येक शक्ति से वे नसीब रहता है, चक्षु दर्शन से पारम्भ कर कोई सत्य दर्शन नहीं होता।

१० प्र०—दर्शनावरणीय कर्म की स्थिति कितनी है ?

उ०—ज्ञानावरणीय के अनुसार।

११ प्र०—वेदनीय कर्म के कितने भेद हैं ?

उ०— दो० साता, असाता वेदनीय।

१२ प्र० -साता वेदनीय कर्म कैसे बनते हैं ?
उ० प्राणियों को शान्तता देने से, दया, अनुकम्पा करने से, कोई प्रकार की पीड़ा, दुःख, असाता नहीं देने से, साता वेदनीय कर्म का बंध होता है।

१३ प्र०—असाता वेदनीय कर्म का बंध कैसे होता है ?
उ०—प्राणियों को अशान्ति देने से निर्दयता करनेस, शारिरिक या मानसिक दुःख देने से असाता वेदनीय कर्म का बंध होता है।

१४ प्र०-यह साता या असाता वेदनीय कर्म क्या फल देता है ?
उ०—सातावेदनीय से शारिरिक तथा मानसिक दोनों प्रकार के मनोज्ञ सुख, शान्ति, और इनके अनुकुल हर एक सयोग प्राप्त होते हैं। असाता वेदनीय से अमनोज्ञ सामग्री मिळती है दुःख अशाति, व्याधि, व्याकुलता, पराधीनता पीडा, और हर एक प्रकार के प्रति कुल संयोग प्राप्त होते है।

१५ प्र०—साता वेदनीय की स्थिति कितनी है ?
उ०—जघन्य दो समय की उत्कृष्ट पन्द्रह क्रोडा क्रोड सागरोपम की।

१६ प्र०—असाता वेदनीय की स्थिति कितनी है ?
उ०—जघन्य एक सागर के ७ भाग में से ३ भाग में एक पल्य के असख्यातवें भाग कम की और उत्कृष्ट तीस क्रोडा क्रोड सागरोपम की।

१७ प्र० मोहनीय कर्म कैसे बंधते हैं ?

उ०–तीव्र क्रोध, मान माया, लोभ करने से, जीवों को वश करने से, अ न्य रीतिसे मार ने मे अथवा उपदेश से किसी को प्रतिकूल समझा कर मारने से

१८ प्र०–मोहनीय कर्म का फल क्या ?

उ०–इस मोहनीय कर्म की २८ प्रकृतियों में से जितने प्रकार की प्रकृतियों की तीव्रता मंदता हो उनमें यह घिरा रहे, सत्य वस्तु को न पहचान सके और असत्य में ही लिप्त रहे।

१६ प्र०–उसकी स्थिति किस प्रकार की होती है दृष्टान्त द्वारा समझाओ ?

उ०–जैसे मद्य पान के नशे से भान रहित मनुष्य हिताहित के मार्ग को नहीं समझ सक्ता, अक्लमंदी खो बैठता है, उसी तरह मोहनीय कर्म के उदय से मनुष्य आत्मज्ञान, सत्यमार्ग, हित के साधन और अपने कर्तव्य नहीं समझ सक्ता।

२० प्र०–मोहनीय कर्म की स्थिति कितनी है ?

उ०–जघन्य अंतर मुहूर्त की उत्कृष्ट सित्तर क्रोडा क्रोड सागर की।

२१ प्र०–आयुष्य कर्म के कितने भेद हैं ? उ –चार, नारकी, मनुष्य, त्रियंच, देव।

२२ प्र०–इन चारों में से नारकी का आयुष्य कैसे बंधता है ?

उ०–महा आरंभ समारंभ करने से महा परिग्रह सेवन करने से, सदा, मद्य मांस का आहार करने से पंचेंद्री प्राणियों को बिना अपराध घात करने से इत्यादि ऐसे महा अनर्थ, अकार्य, जुल्म करने से नारकी का आयुष्य बंधता है।

२३ प्र०—तिर्यंच का आयुष्य कैसे बांधा जाता है?

उ० माया कपट करने से, प्रपंच जाल फैलाने से, कम ज्यादा तोल नाप की वस्तुएं रख अन्य को ठगने से, विश्वासघात, असत्य, छल, दगा कर दूसरो को ठग लेने से

२४ प्र०—मनुष्य का आयुष्य कैसे बंधता है?

उ—दया से, भद्र प्रकृति से, विनीत प्रकृति से, और अभिमान रहित सरलता से।

२५ प्र०—देव का आयुष्य कैसे बंधता है?

उ०—न्याय पूर्वक गृहस्थ धर्म (श्रावक व्रत) का पालन करने से, मुनि धर्म (साधु व्रत) का पालन करने से बाल तपश्चर्या करने से, और अकाम निर्जरा से।

२६ प्र० देवता नारकी का आयुष्य कितना है?

उ०—जघन्य दश हजार वर्ष का तेतीस सागरोपम का।

२७ प्र०—मनुष्य तिर्यंच का आयुष्य कितना है?

उ०—जघन्य अंतर्मुहूर्त का उत्कृष्ट तीन पल का।

२८ प्र०—नाम कर्म के कितने भेद हैं?

उ०—दो शुभनाम कर्म, अशुभनाम कर्म।

२९ प्र०—शुभ और अशुभ नाम कर्म कैसे बंधता है?

उ०—मन, वचन, काया को सरलता से, योग्य रीति से, न्याय मार्ग पर प्रवृत करने से तथा दूसरों की आकांक्षाओं को दुःख पहुंच ऐसा कोई वितंडावाद न करने से शुभनाम कर्म बंधता है और इनके विपरीत चलने से अशुभ नाम कर्म का संचय होता है।

३० प्र०—यह शुभाशुभनाम कर्म क्या फल देता है?

उ० शुभ नाम कर्म के फल से इष्ट, शब्द, रूप, गंध, रस, स्पर्श गति, स्थिति, लावण्य, यश कीर्ति बल वीर्य, पुरुषार्थ पराक्रम स्वर्गादि मनोज्ञ प्राप्त होते हैं, और अशुभ नाम कर्म से इनके प्रतिकूल अमनोज्ञ सुख प्राप्त होते हैं।

३१ प्र०–नामकर्म की कितनी स्थिति है? उ०–जघन्य आठ मुहूर्त की उत्कृष्ट बीस क्रोडा क्रोड सागर की।

३२ प्र०–गोत्र कर्म के कितने भेद हैं?
उ०–दो उच्च गोत्र, नीच गोत्र।

३३ प्र०–उंच, नीच, गोत्र कैसे बन्धता है?
उ –जाति, कुल बल रूप, तप, शास्त्र, लाभ ऐश्वर्यता इन आठ प्रकार के मदसे नीच गोत्र का बंध होता है और ये वस्तुए प्राप्त होने पर भी यह न करे तो उच्च गोत्र का बंध होता है।

३४ प्र –उच्च, नीच गोत्र कर्म का फल क्या है?
उ० उच्च गोत्र से जाति, लाभ, कुल, बल, रूप, तप, शास्त्र ऐश्वर्य उच्च मिलते हैं, और नीच गोत्र से ये आठों वस्तुए हलकी एवं, तुच्छ मिलती हैं।

३५ प्र०-इस गोत्र कर्म की कितनी स्थिति है?
उ०-जघन्य आठ मुहुर्त की उत्कृष्ट बीस क्रोडा क्रोड सागरोपम की।

३६ प्र –अंतराय कर्म कितनी रीति से बंधता है?

उ०–दान, लाभ, भोग, उपभोग और वीर्य उनका
किसी जीव के उपभोग में (अतराय) रोडे
अटकाने से ।

३७ प्र०–अतराय कर्म का क्या फल है ?

उ०–जो मनुष्य किसी को जैसी अंतराय दे वैसीही
अन्तराय उसे मिलती है उस वस्तु का प्रयत्न करने
पर भी वह प्राप्त नहीं हो सक्ती ।

३८ प्र० इस कर्म की कितनी स्थिति है ?

उ०–जघन्य अंतर मुहुर्त की उत्कृष्ट बीस क्रोडा क्रोड
सागरोपम की ।

त्रैसठ श्लाघ्य पुरुषों सम्बन्धी प्रश्नोत्तर ।

पाठ पंद्रहवा

१ प्र०–इस अवसर्पिणी काल में अपने आर्यावर्त में
कितने तीर्थकर हुए ? उ०–चौईस ।

२ प्र०–बाकी रहे हुए चार भरत और पांच इर व्रत में
कितने तीर्थकर हुए ?

उ०–उन प्रत्येक भरत और इर व्रत में चौवीस २
तीर्थकर इस अवसर्पिणी काल में हुए ।

३ प्र०–एक कालचक्र में एक २ क्षेत्र में कितनी चौवीसी
होती है ?

उ०–दो, (एक उत्सर्पिणीमें, एक अवसर्पिणीमें ।)

४ प्र०–एक पुद्गल परीवर्तन में कितनी चौवीसी होती है ?

उ०–अनन्ती ।

५ प्र०—पहिले कितनी चौबीसी हुई होंगी ? उ०—अनंती.
६ प्र०—आते (भविष्य) कालमें कितनी चौबीसी होंगी ?
उ०—अनंती
७ प्र०—तीर्थंकर कौन २ से आरे में हुए ?
उ०—तीसरे और चौथे में
८ प्र०—उन चौबीस तीर्थंकरों के नाम कहो ?
उ०—ऋषभदेव से महावीर स्वामी
९ प्र०—इन चौबीस तीर्थंकरों में से तीसरे आरे में कितने हुए और चौथे आरे में कितने हुए ?
उ०—एक प्रथम तीर्थंकर तीसरे आरे में और बाकी के सब तीर्थंकर चौथे आरे में हुए।
१० प्र०—ऋषभदेव भगवान का दूसरा नाम क्या है ?
उ०—आदिनाथ, आदि जिनेश्वर, अथवा, आदिश्वर,
११ प्र०—यह नाम क्यों दिया गया ?
उ०—उन्होंने जुगल्या धर्म दूर कर धर्म की आदि की जिससे आदिनाथ नाम पड़ा
१२ प्र०—ऋषभदेव भगवान ने दूसरा क्या कार्य किया ?
उ०—पुरुषों की ७२ कला और स्त्रियों की ६४ कला लोकों को सिखाई।
१३ प्र०—प्रथम कलाए सिखाई या धर्म स्थापित किया ?
उ०—पहिले कलाए सिखाई और फिर राजपाट त्याग दिक्षा ली, दिक्षा लेने के १०० वर्ष पश्चात् केवल्य ज्ञान प्रकट हुआ और फिर धर्म की स्थापना की अर्थात् भरतक्षेत्रमें चार तीर्थका विच्छेद होगया था उनकी फिर स्थापना की ?

१४ प्र०-ऋषभदेव भगवान के कितने पुत्र थे ?
उ०-सो।
१५ प्र०-उनके सबसे बड़े पुत्र का नाम क्या?
उ०-भरत।
१६ प्र०-भरत राजा कौनसी बड़ी पदवी पाये थे?
उ०-चक्रवर्ती राजा की।
१७ प्र०-चक्रवर्ती राजा किसे कहते हैं?
उ०-जो चक्र द्वारा भरतक्षेत्र के छःहों खंडों का साधन करते हैं उसी तरह जो चौदहों रत्न तथा नौ निधान प्रभृति मोटी रिद्धि के स्वामी होते हैं वे चक्रवर्ती कहलाते हैं।
१८ प्र०-एक २ चौबीसी में ऐसे कितने चक्रवर्त होते हैं?
उ०-बारह।
१९ प्र०-अपने भरत क्षेत्र में उत्पन्न बारहों चक्रवर्ती के नाम कहो?
उ०-भरत २ सगर ३ मघव ४ सनत्कुमार ५ शांति ६ कुंथु ७ अरह ८ सुभूम ९ महापद्म १० हरिषेण ११ जय १२ ब्रह्मदत्त।
२० प्र०-तीर्थंकरों की और चक्रवर्तियों की किन २ ने पदवी पाई?
उ०-शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरिनाथ,।
२१ प्र०-चक्रवर्ती होकर तीर्थंकर कैसे हुए?
उ०-वे पहिले चक्रवर्ती राजा थे फिर संयम लेकर तीर्थंकर पद को प्राप्त हुए।
२२ प्र०-चक्रवर्ती मरकर कौनसी गति में जाते हैं?

उ०-जो चक्रवर्ती की रिद्धि त्यागकर संयम लेते हैं वे अवश्य मोक्ष या देवलोक में जाते हैं और जो चक्रवर्ती पद में ही मरते हैं वे अवश्य नरक गति में जाते हैं।

२३ प्र०-चक्रवर्ती से आधा राज्य पाया और अर्द्ध ऋद्धि के स्वामी हुए वे कौनसे राजा कहलाते हैं?

उ०-वासुदेव या अर्द्ध चक्री।

२४ प्र०-वासुदेव कितने खंड जीतते हैं?

उ०-तीन, दक्षिण भरत के।

२५ प्र०-एक चौवीसी में ऐसे कितने वासुदेव हुए हैं?

उ०-नौ.

२६ प्र०-भरतक्षेत्र में हुए नव वासुदेवों के नाम कहो?

उ०-१ त्रिपृष्ट महावीर स्वामी का जीव २ द्विपृष्ट ३ स्वयंभू ४ पुरुषोत्तम ५ पुरुषसिंह ६ पुरुष पुंडरीक ७ दत्त ८ नारायण ९ कृष्ण।

२७ प्र०-वासुदेव अपनी समस्त जिंदगी में किसीसे पराजित होवें या नहीं?

उ०-नहीं, ये किसी से नहीं हारते।

२८ प्र०-वासुदेव के भाई को क्या कहते हैं?

उ०-बलदेव।

२९ प्र०-वासुदेव के सब भाई बलदेव कहलाते हैं?

उ०-नहीं, उनके बड़े भाई जो महा समर्थ हों वे बलदेव कहलाते हैं।

३० प्र०-वासुदेव की हाजरी में कितने देव रहते हैं?

उ०-आठ हजार।

३१ प्र०—चक्रवर्ती की सेवा में कितने देव रहते हैं ?
उ० -सोलह हजार।
३२ प्र०—एक चौबीसी में कितने बलदेव होते हैं ?
उ०—नौ।
३३ प्र०—इस चौवीसी में प्रकट हुए नौ बलदेवों के नाम कहो ? उ०—१ अचल २ विजय ३ भद्र ४ सुप्रभ ५ सुदर्शन ६ आनन्द ७ नंदन ८ राम ९ बलभद्र।
३४ प्र०— बलदेव मरके कहां जाते हैं ? उ०—वासुदेव की मृत्यु से वैराग्य पा बलदेव अवश्य दिक्षा लेते हैं और मृत्यु पाकर मोक्ष या देवलोक पधारते हैं।
३५ प्र०—वासुदेव की तरह और कोई तीन खंड जीतते हैं ? उ०—प्रति वासुदेव तीन खण्ड जीतते हैं।
३६ प्र०—प्रति वासुदेव किसे कहते हैं ? उ०- वासुदेव के प्रति पक्षी, प्रति वासुदेव।
३७ प्र०—प्रति वासुदेव किससे मारे जाते है ?
उ०—प्रति वासुदेव और वासुदेव के मध्य अवश्य युद्ध होता है और प्रति वासुदेव को वासुदेव मारते हैं और प्रति वासुदेव के जीते हुए तीन खण्ड वासुदेव प्राप्त करते हैं।
३८ प्र०—नौ प्रति वासुदेवों के नाम कहो ?
उ०—अश्वग्रीव, तारक, मेरक, मधु, निशुंभ, जालेंद्र, प्रहलाद, रावण, जरासिंधु।
३९ प्र०—तीर्थंकर चक्रवर्ती, वासुदेव, बलदेव, प्रति वासुदेव ये सब कैसे पुरुष कहलाते हैं ?

उ०—श्लाघ्य वाले पुरुष कहे जाते हैं।

१० प्र०—प्रत्येक चौबीसी में ऐसे प्रख्यात पुरुष कुल कितने होते है?

उ०—त्रेसठ।

ज्योतिष्य के प्रश्नोत्तर।

पाठ सोलहवां।

१ प्र०—भूत, भविष्यत, वर्तमान काल के फलाफल देखने का कौनसा शास्त्र है? उ०—ज्योतिष्य।

२ प्र०—ज्योतिष्य के नायक कौन हैं? उ०—ग्रह, नक्षत्र।

३ प्र०—गृह कितने है? उ०—नव।

४ प्र०—कौनसे? उ०—सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, केतु।

५ प्र०—नक्षत्र अर्थात् क्या?

उ०—एक सी रीति से गमन करनेवाले प्रभावोत्पादक तारे।

६ प्र०—नक्षत्र कितने हैं? उ०—सत्ताईस, अट्ठाईस।

७ प्र०—उनके नाम क्या हैं? और प्रत्येक नक्षत्र के कितने तारे हैं?

उ०—(१) अश्विनी, जिसके तीन तारे (२) भरणी, के तीन, (३) कृतिका के छः (४) रोहिणी के पांच (५) मृगशीर के तीन (६) आर्द्राका एक (७) पुनर्वसु के पांच (८) पुष्य के तीन (९) अश्लेषा के छः (१०) मघा के सात (११) पुर्वा फाल्गुनी के दो (१२) उत्तरा

फाल्गुनी के दो (१३) हस्ति के पांच (१४) चित्रा का एक (१५) स्वांति का एक (१६) विशाखा के पांच (१७) अनुराधा के चार (१८) जेष्ठा के तीन (१९) मूल के ग्यारह (२०) पूर्वापाढ़ के चार (२१) उत्तरापाढ़ा के चार (२२) अभिच के तीन (२३) श्रवण के तीन (२४) धनिष्टा के पाच (२५) शतभीसा के सौ (२६) पूर्वा भाद्रपद के दो (२७) उत्तरा भाद्रपद के दो (२८) रेवती के बत्तीस।

८ प्र०—नक्षत्रों का गणित किस संज्ञा से होता है ?

उ०—राशी पर से।

९ प्र०—राशि कितनी और कौन २ सी ?

उ०—बारह (१) मेष (२) वृष (३) मिथुन (४) कर्क (५) सिंह (६) कन्या (७) तुल (८) वृश्चिक (९) धन (१०) मकर (११) कुंभ (१२) मीन

१० प्र०—कितने नक्षत्र पर एक राशि रहती है ?

उ०—सवा दो नक्षत्रों पर

११ प्र०—मेष राषि में कितने नक्षत्र हैं ?

उ०—अश्विनीपूर्ण भरणी पूर्ण, कृतिका का एक चरण

१२ प्र०—वृष राशिमें कितने नक्षत्र हैं ?

उ०—कृतिका के तीन चरण रोहणी पूर्ण और मृग शीर के दो चरण।

१३ प्र०—मिथुन राशि में कितने नक्षत्र हैं ?

उ०—मृग शीर के दो चरण आर्द्रा पूर्ण, पुनर्वसु के तीन चरण।

१४ प्र०—कर्क राशि में कितने नक्षत्र हैं ?

उ०—पुनर्वसु का एक चरण, पुष्य पूर्ण, अश्लेषा पूर्ण

१५ प्र०—सिंह राशि में कौनसे नक्षत्र हैं ?

उ०—मघा पूर्ण पूर्वा फाल्गुनी पूर्ण उत्तरा फाल्गुनी का एक चरण।

१६ प्र०—कन्या राशि में कौनसे नक्षत्र हैं ?

उ०—उत्तरा फाल्गुनी के तीन चरण, हस्त पूर्ण के दो चरण।

१७ प्र०—तुल राशि में कौनसे नक्षत्र हैं ?

उ०—चित्रा के दो चरण स्वाती पूर्ण, विशाखा के तीन चरण।

१८ प्र०—वृश्चिक राशि में कितने नक्षत्र हैं ?

उ०—विशाखा का एक चरण, अनुराधा पूर्ण, ज्येष्ठा पूर्ण

१९ प्र०—धन राशि में कौनसे नक्षत्र हैं ?

उ०—मूल पूर्ण, पुर्वाषाढा पूर्ण, और उत्तराषाढा का एक चरण।

२० प्र०—मकर राशि में कौनसे नक्षत्र हैं ?

उ०—उत्तराषाढा के तीन चरण श्रवण पूर्ण, धनिष्ठा के दो चरण।

२१ प्र०—कुंभ राशि में कौनसे नक्षत्र हैं ?

उ०—धनिष्ठा के दो चरण शतभीसा पूर्ण, पूर्वा भाद्रपद के तीन चरण।

२२ प्र०—मीन राशि में कौनसे नक्षत्र हैं ?

उ०—पूर्वा भाद्रपद का एक पाया, उत्तरापूर्ण, रेवती पूर्ण

२३ प्र०—मेष राशि के कौनसे अक्षर हैं ? उ०—अ० ल० इ०
२४ प्र०—वृष „ „ „ „ „ ? उ०—ख० व० ऊ०
२५ प्र०—मिथुन „ „ „ „ „ ? उ०—क० छ० घ०
२६ प्र०—कर्क „ „ „ „ „ ? उ० —उ० ह०
२७ प्र०—सिंह राशि के कौनसे अक्षर हैं ? उ० म० ट०
२८ प्र०—कन्या „ „ „ „ „ ? उ०—प० ठ० ण०
२९ प्र०—तुल „ „ „ „ „ ? उ०— र० त०
३० प्र०—वृश्चिक „ „ „ „ „ ? उ०—न० र० प०
३१ प्र०—धन „ „ „ „ „ ? उ०—फ० घ० क० ट०
३२ प्र०—मकर „ „ „ „ „ ? उ०—व० ज०
३३ प्र०—कुंभ „ „ „ „ „ ? उ०—ग० श०
३४ प्र०—मीन „ „ „ „ „ ? उ०—द० च० ज० थ०
३५ प्र०—युग के कितने वर्ष होते हैं ? उ०—पाच
३६ प्र०—पाच वर्ष को क्या कहते हैं ?
उ०—पांच संवत्सर।
३ प्र०—संवत्सर कितने प्रकार के हैं ? उ०—पाच
३८ प्र०—उनके नाम कहो ?
उ०—चद्र संवत्सर, सूर्य संवत्सर, नक्षत्र संवत्सर, ऋतु संवत्सर अभिवर्धन संवत्सर।
३९ प्र०—चद्र संवत्सर के कितने दिन होते हैं ?
उ०—तीन से चौपन में कुछ कम कुछ ज्यादा परिपूर्ण है।
४० प्र०—सूर्य संवत्सर के कितने दिन होते हैं ?
उ०—तीन से छासठ।
४१ प्र०—नक्षत्र संवत्सर के कितने दिन होते हैं ?
उ०—३२७

४२ प्र०—ऋतु संवत्सर के कितने दिन होते हैं ? उ०— ३६०

४३ प्र०—अभिवर्धन ,, ,, ,, ,, ,,? उ०— ३८०

४४ प्र०—सब नक्षत्रों का मंडल गुरु कितने दिन में फिरता है?
उ०-बारह वर्ष में।

४५ प्र०—मंगल कितनी वक्त में फिरता है? उ०-१॥। वर्ष

४६ प्र०—बुद्ध ,, ,, ,, ,, ,,? उ०—बारह माह।

४७ प्र०—शुक्र कितने समय में परिभ्रमण करता है?
उ०-१२ माह।

४८ प्र०—रवि ,, ,, ,, ,, ,, ,,? उ०—१२ माह।

४६ प्र०—शनि ,, ,, ,, ,, ,, ,,? उ०—तीस वर्ष।

५० प्र०—चंद्र ,, ,, ,, ,, ,,?
उ०—सत्ताईस दिन से कुछ ज्यादा।

५१ प्र०—राहु ,, ,, ,, ,, ,,? उ०—डेढ़ वर्ष।

५२ प्र०—परदेश गमन करने वालों को कौन कौन से अवयोग जानना चाहिये?
उ०—दिशा शूल, नाल काल, काल राहु, योगिनी, चंद्र इत्यादि।

५३ प्र०—पूर्व दिशा में किस वार को दिक् शूल रहता है?
उ०-शनि और चंद्र को।

५४ प्र०—पश्चिम दिशा में किस वार को शूल रहता है?
उ०—रवि, शुक्र को।

५५ प्र०—उत्तर दिशा में किस वार को शूल रहता है?
उ०-बुध और मंगलवार को।

५६ प्र०—दक्षिण दिशा में किस वार को शूल रहता है?
उ०-गुरुवार।

५७ प्र०—वायव्य कोन में किस ,, ,, ,, ,, ,, उ०—मंगल
५८ प्र०—ईशान ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, उ०—बुध और शनि
५६ प्र०—नैऋत्य ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, उ०—शुक्र और रवि
६० प्र०—अग्नि ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, उ०—गुरु और चंद्र
६१ प्र०—जिस दिशा में शूल हो ओर उसी ओर प्रयाण करे तो क्या होता है ?

उ०—हानि होती है ।

६२ प्र०—कौनसा नक्षत्र किस दिशा में होतो गमन नहीं करना चाहिये ।

उ०—जिस दिन को हस्त नक्षत्र हो तो उत्तर में, चित्रा हो उस दिन दक्षिण में, रोहिणी होतो पूर्व में श्रवण हो तो पश्चिम में गमन न करे अगर करता है तो मृत्यु प्राप्त होती है ।

६३ प्र०—नग्नकाल किस दिन किस दिशा को रहता है ?

उ०—रवि को उत्तर में, चंद्र को वायव्य में, मंगल को पश्चिम में, बुध को नैऋत्य में, गुरु को दक्षिण में शुक्र को आग्नेय में, शनि को पूर्व दिशा में, काल का वास रहता है इसलिये नग्न काल की ओर गमन नहीं करना चाहिये ।

६४ प्र०—ईशाण कोन में नग्न काल कब होता है ?

उ०—ईशाण कोन में नग्न काल होता ही नहीं ।

६५ प्र०—योगिनी कौनसी तिथी को कौनसी दिशा में रहती है ।

उ०—प्रतिपदा और नवमी को पूर्व में, द्वितीया और दसमी को उत्तर में तृतिया और एकादशी को

अग्नि कोन में, चतुर्थी और द्वादशी को नैऋत्य में, पंचमी और त्रयोदशी को दक्षिण में, षष्ठी और चतुर्दशी को पश्चिम में, सप्तमी और पूर्णिमा को वायव्य में अष्टमी और अमावस्या को ईशान कोन में योगिनी का वास रहता है।

६६ प्र०—गमन करते समय कौनसी दिशा में योगिनी हो तो लाभ होता है और कोनसी दिशा में हो तो हानि होती है?

उ०—बाईं और सुख प्रद पीछले भाग पर हो तो वांछित फल देने वाली दाहिनी और धन की नाशक तथा सन्मुख होतो मरण पद गिनी जाती है।

६७ प्र०—चंद्रमा पूर्व में होतो कौन कौन सी राशि होती है?

उ०—मेष, सिंह, धन।

६८ प्र०—चंद्रमा दक्षिण में हो तो कौन २ सी राशी होती है?

उ०-वृषभ, कन्या, मकर।

६९ प्र०-चद्रमा पश्चिम में होतो कौन २ सी राशि होती है?

उ०—मिथुन, तुल, कुंभ।

७० प्र.— चंद्रमा उत्तर में होतो कौन २ सी राशि होती है?

उ०— कर्क, वृश्चिक, मीन।

७१ प्र०-गमन करने वालों को कौन सी दिशा में चंद्र लाभकारी है?

उ०-चद्र सन्मुख हो तो लाभ प्राप्त हो, दाहिना होतो सुख मिले, पीठ की ओर हो तो प्राण का नाश हो बांई ओर हो तो धन का नाश होता है।

७२ प्र०—ग्रहों के घूमने के भवन कितने हैं ? उ०—बारह।

७३ प्र०—बारह भुवन किस २ नाम से पहिचाने जाते हैं?

उ०—पहिला भुवन तन (शरीर) दूसरा धन तीसरा भाई चौथा मित्र पांचवां पुत्र छठा शत्रु सातवां स्त्री आठवां मृत्यु नवा धर्म दसवां कर्म ग्यारहवां लाभ बारहवां व्यय।

७४ प्र०—जन्म कुंडली के प्रथम भुवन में ग्रह हों तो वे क्या फल देते हैं ?

उ०— लग्न भुवन में सूर्य, मंगल, शनि हों तो शरीर में भिन्न २ प्रकार की पीडा उत्पन्न करते रहते हैं और गुरु, चंद्र, शुक्र, बुध, हों तो शरीर में सुख शांति रहती है।

७५ प्र०—दूसरे धन भुवन में ग्रह हों तो वे क्या २ फल देते हैं ?

उ०—सूर्य, शनि, मंगल हो तो धन का नाश करते हैं और चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र होतो धन की वृद्धि होती हैं।

७६ प्र०—तीसरे भ्रात भुवन मे ग्रह हों तो वे क्या फल देते हैं ?

उ०—सूर्य निरोग करे, चंद्र कांतिवान करे, मंगल क्रोधी करे, बुध कार्य की सिद्धि करे, गुरु शुक्र शनि बुद्धिमान चतुर रूपवान, स्त्रियों को प्रिय कारी बनावे।

७७ प्र०— चौथे मित्र भुवन के ग्रह क्या २ फल देते हैं ?

उ०—सूर्य, मगल शनि, सुख से रहित करते हैं चंद्र बुध, गुरु, शुक्र हो तो सुखी करते हैं और राज्य में मान दिलाने वाले होते हैं।

७८ प्र०—पाचवें पुत्र भुवन में ग्रह होतो वे क्या २ फल देते हैं?

उ०—सूर्य होतो अत्यन्त क्रोधी बुध हो तो कम संतति वाला, शनि और मगल होतो संताते रहित, शुक्र, चंद्र और गुरु हो तो विपेश संतति वाला सुखी तथा स्वरूपवान होता है।

७९ प्र०—छट्ठे शत्रु भुवन के ग्रह क्या २ फल देते है ?

उ०—सूर्य और मंगल शत्रु पक्ष का नाश करते हैं, शनि राज्य से मान दिलाते है, शुक्र और बुध कुमति देते हैं, गुरु रोग बढ़ाते हैं, चंद्र विकलता और उपाय को नष्ट करते हैं।

८० प्र०—सातवें स्त्री भुवन में ग्रह हों तो वे क्या फल देते हैं?

उ०—सूर्य मगल शनि हो तो स्त्री कुकर्म वाली दुःख दायक हो गुरु शुक्र चंद्र और बुध हो तो स्त्री बहु संतान वाली सुशील तथा सुखदायक प्राप्त हो।

८१ प्र०—आठवें मृत्यु भुवन में ग्रह हों तो वे क्या २ फल देते हैं ?

उ०—आठवें भुवन में कोई भी गृह हो तो वे बुद्धि भ्रष्ट करते हैं, शस्त्र से अग को पीड़ित कराते हैं तथा रोगी करते हैं।

८२ प्र०—नवमें धर्म भुवन के ग्रह क्या फल देते हैं ?

उ०—सूर्य, शनि, मगल धर्म रहित, मति हीन और कुशील करते हैं, चंद्र-बुद्ध-गुरु-शुक्र हों तो धर्म प्रेमी मति मान करते हैं।

७२ प्र०—ग्रहों के घूमने के भुवन कितने हैं ? उ०—बारह।

७३ प्र०—बारह भुवन किस २ नाम से पहिचाने जाते हैं?

उ०-पहिला भुवन तन (शरीर) दूसरा धन तीसरा भाई चौथा मित्र पांचवा पुत्र छठा शत्रु सातवा स्त्री आठवां मृत्यु नवां धर्म दसवां कर्म ग्यारहवा लाभ बारहवा व्यय।

७४ प्र०—जन्म कुंडली के प्रथम भुवन में ग्रह हों तो वे क्या फल देते हैं ?

उ०— लग्न भुवन में सूर्य, मंगल, शनि हो तो शरीर में भिन्न २ प्रकार की पीडा उत्पन्न करते रहते हैं और गुरु, चंद्र, शुक्र, बुध, हो तो शरीर में सुख शांति रहती है।

७५ प्र०—दूसरे धन भुवन में ग्रह हों तो वे क्या २ फल देते हैं ?

उ०-सूर्य, शनि, मंगल हो तो धन का नाश करते हैं और चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र होतो धन की वृद्धि होती है।

७६ प्र०—तीसरे भ्रातृ भुवन में ग्रह हों तो वे क्या फल देते हैं ?

उ०—सूर्य निरोग करे, चंद्र कांतिवान करे, मंगल क्रोधी करे, बुध कार्य की सिद्धि करे, गुरु शुक्र शनि बुद्धिमान चतुर रूपवान, स्त्रियों को प्रिय कारी बनावे।

७७ प्र०— चौथे मित्र भुवन के ग्रह क्या २ फल देते हैं ?

उ०—सूर्य, मंगल शनि, सुख से रहित करते हैं चंद्र बुध, गुरु, शुक्र हो तो सुखी करते हैं और राज्य से मान दिलाने वाले होते हैं।

७८ प्र०—पाचवें पुत्र भुवन में ग्रह हो तो वे क्या २ फल देते हैं?

उ०—सूर्य हो तो अत्यन्त क्रोधी बुध हो तो कम संतति वाला, शनि और मंगल हो तो संतति रहित, शुक्र, चंद्र और गुरु हो तो विशेष संतति वाला सुखी तथा रूपवान होता है।

७९ प्र०—छठे शत्रु भुवन के ग्रह क्या २ फल देते हैं?

उ०—सूर्य और मंगल शत्रु पक्ष का नाश करते हैं, शनि राज्य से मान दिलाते हैं, शुक्र और बुध कुमति देते हैं, गुरु रोग बढ़ाते हैं, चंद्र विकलता और उपाय को नष्ट करते हैं।

८० प्र०—सातवें स्त्री भुवन में ग्रह हो तो वे क्या फल देते हैं?

उ०—सूर्य मंगल शनि हो तो स्त्री कुकर्म वाली दुःख दायक हो गुरु शुक्र चंद्र और बुध हो तो स्त्री बहु संतान वाली, सुशील तथा सुखदायक प्राप्त हो।

८१ प्र०—आठवें मृत्यु भुवन में ग्रह हों तो वे क्या २ फल देते हैं?

उ०—आठवें भुवन में कोई भी ग्रह हो तो वे बुद्धि भ्रष्ट करते हैं, शस्त्र से अंग को पीड़ित कराते हैं तथा रोगी करते हैं।

८२ प्र०—नवमें धर्म भुवन के ग्रह क्या फल देते हैं?

उ०—सूर्य, शनि, मंगल धर्म रहित, मति हीन और कुशील करते हैं, चंद्र-बुद्ध-गुरु शुक्र हों तो धर्म प्रेमी मति मान करते हैं।

८३ प्र०-दसवें कर्म भुवन के ग्रह क्या २ फल देतें हैं ?
उ०-सूर्य, मंगल, शनि कुकर्मी तथा कुपुत्र बनाते हैं चंद्र कीर्तिवान शुक्र धनवान, और बुध, गुरु, शनि कार्य में प्रीतिवान करते हैं।

८४ प्र०-ग्यारहवें लाभ भुवन के ग्रह क्या २ फल देते हैं ?
उ०-सूर्य राजा से लाभ कराता है चद्र शुक्र धनवान बनाता है, मंगल स्त्री सुख देता है, बुद्ध ज्ञानी विवेकी, गुरु ऐश्वर्य शाली बनाता है, और शनि कीर्ति मान करता है।

८५ प्र०-बारहवें व्यय भुवन में जो ग्रह होते हैं वे क्या फल देते है ?
उ०-सूर्य दुष्ट स्वभावी बनाता है, चंद्र एक आंख रहित करता है, मंगल पाप कर्म कराता है, बुध निर्धन बनाता है, गुरु दुर्बल अंग करता है शुक्र बहुत खर्च कराता है, शनि, तीक्ष्ण प्रकृति वाला करता है।

८६ प्र०-जन्म कुंडली में कौनसे ग्रह कहा २ हों तो बालक पराक्रमी होता है ?
उ०-जिसके लग्न (प्रथम स्थान में) स्थान में शुक्र और बुध हो, केन्द्र स्थान में बृस्पति हो, तथा दसवें स्थान में मगल हो तो बालक पराक्रमी और कुल दीपक, तेजस्वी होता है।

८७ प्र०-ये ग्रह उन स्थानों में न हो तो क्या होता है ?
उ०-माल रहित और अशक्त होता है।

८८ प्र०-जन्म कुंडली में कैसे ग्रह हो तो शीघ्र मृत्यु होती है ?

उ०-जिसके चौथे स्थान में राहू, छठे और आठवें स्थान में चंद्र या छठे और आठवें स्थान में मगल सूर्य और शनि हो, तो बालक शीघ्र मृत्यु पाता है।

८९ प्र० जन्म कुडली में कैसे ग्रह हों तो राज योग गिना जाता है?

उ०-जिसके केंद्र स्थान में शुक्र गुरु और चंद्र हों अथवा शनि और चंद्र लग्न स्थान हो. सूर्य और गुरु त्रिकोण स्थान में हों अथवा मंगल दसवें स्थान हो तो राज योग गिना जाता है।

९० प्र०-जन्म कुंडली में कैसे ग्रह हों तो उसके मात पिता जीवित न रहें?

उ०-जिसके छठवें स्थान में चंद्र लग्न स्थान में शनि, सातवें स्थान में मगल हो उस बालक का पिता जीवित नहीं रहता है-और लग्न स्थान में गुरु दूसरे स्थान में शनि तीसरे स्थान में राहू होतो उस बालक की माता जीवित नहीं रहती है-और छठें स्थान में मंगल, सातवें स्थान में राहू, आठवें स्थान में शनि हो तो उसकी स्त्री जीवित नहीं रहती है।

९१ प्र -पाप ग्रह कौनसे और शुभ ग्रह कौन से हैं?

उ०-रवि-मंगल शनि-राहु-केतु ये पाप ग्रह और चंद्र-बुध गुरु और शुक्र ये शुभ ग्रह गिने जाते हैं।

९२ प्र०-कैसे ग्रह हों तो बालक अल्पायुष्य पाता हो?

८३ प्र०-दसवें कर्म भुवन के गृह क्या २ फल देते हैं ?

उ०-सूर्य, मगल, शनि कुकर्मी तथा कुपुत्र बनाते हैं चद्र कीर्तिवान शुक्र धनवान, और बुध, गुरु, शनि कार्य में प्रीतिवान करते हैं।

८४ प्र०-ग्यारहवें लाभ भुवन के ग्रह क्या २ फल देते हैं ?

उ०-सूर्य राजा से लाभ कराता है चंद्र शुक्र धनवान बनाता है, मंगल स्त्री सुख देता है, बुद्ध ज्ञानी विवेकी, गुरु ऐश्वर्य शाली बनाता है, और शनि कीर्ति मान करता है।

८५ प्र०-बारहवें व्यय भुवन में जो ग्रह होते हैं वे क्या फल देते है ?

उ०-सूर्य दुष्ट स्वभावी बनाता है, चंद्र एक आंख रहित करता है, मंगल पाप कर्म कराता है, बुध निर्धन बनाता है, गुरु दुर्बल अंग करता है शुक्र बहुत खर्च कराता है, शनि, तीक्ष्ण प्रकृति वाला करता है।

८६ प्र०-जन्म कुंडली में कौनसे ग्रह कहा २ हों तो बालक पराक्रमी होता है ?

उ०-जिसके लग्न (प्रथम स्थान में) स्थान में शुक्र और बुध हो, केन्द्र स्थान में बृस्पति हो, तथा दसवें स्थान में मंगल हो तो बालक पराक्रमी और कुल दीपक, तेजस्वी होता है।

८७ प्र०-ये ग्रह उन स्थानों में न हो तो क्या होता है ?

उ०-माल रहित और अशक्त होता है।

८८ प्र०-जन्म कुंडली में कैसे ग्रह हो तो शीघ्र मृत्यु होती है ?

उ० -जिसके चौथे स्थान में राहु, छठे और आठवें
स्थान में चद्र या छठे और आठवें स्थान में
मंगल सूर्य और शनि हो तो बालक शीघ्र मृ-
त्यु पाता है।

९ प्र० जन्म कुडली में कैसे ग्रह हों तो राज योग गि-
ना जाता है ?

उ०-जिसके केंद्र स्थान में शुक्र गुरु और चंद्र हों
अथवा शनि और चंद्र लग्न स्थान हो सूर्य
और गुरु त्रिकोण स्थान में हों अथवा मंगल
दसवें स्थान हो तो राज योग गिना जाता है।

६० प्र०-जन्म कुंडली में कैसे ग्रह हों तो उसके मात
पिता जीवित न रहें ?

उ०-जिसके छठवें स्थान में चद्र लग्न स्थान में श-
नि, सातवें स्थान में मंगल हो उस बालक का
पिता जीवित नहीं रहता है-और लग्न स्थान में
गुरु दूसरे स्थान में शनि तीसरे स्थान में राहु
होतो उस बालक की माता जीवित नहीं रहती
है-और छठवें स्थान में मगल, सातवें स्थान में
राहू, आठवें स्थान में शनि हो तो उसकी स्त्री
जीवित नहीं रहती है।

६१ प्र -पाप ग्रह कौनसे और शुभ ग्रह कौन से हैं ?

उ०-रवि मगल शनि-राहु-केतु ये पाप ग्रह और चं
द्र-बुध गुरु और शुक्र ये शुभ ग्रह गिने जाते हैं।

६२ प्र०-कैसे ग्रह हों तो बालक अल्पायुष्य वाला हो ?

उ०–जिसके आठवें स्थान में चद्र और केंद्र में पाप ग्रह चौथे स्थान में राहु हो तो बालक एक व र्ष जीवित रहता है परन्तु छठवें आठवें तथा लग्न में बुध हो तो वह चौथे वर्ष मृत्यु पाता है और शनि स्थान में सूर्य हो और सूर्य स्थान में शनि होतो बारहवें वर्ष मृत्यु पाता है।

९३ प्र०–किस वार को कौनसी तिथि हो तो मृत्यु योग गिनते हैं ?

उ०–रवि और मंगल को नंदा तिथि (१–६–११) गुरु और और चंद्र को भद्रा तिथि २–७–१२) शुक्र को जया तिथि (३–८–१३) बुध को रिक्ता तिथि (४–९–१४) शनि को पूर्णा ति- थि (५–१०–१५) हो तो मृत्यु योग गिना- जाता है।

९४ प्र०– किस वार को कौनसी तिथि हो तो सिद्ध योग गिना जाता है ?

उ०–शुक्र को नंद्रा बुध को भद्रा, मंगल को जया, शनि को रिक्ता गुरु को पूर्णा तिथि हो तो सि- द्ध योग गिना जाता है।

९५ प्र०–राशियों के स्वामी कौन २ हैं ?

उ०–मेष और वृश्चिक का स्वामी मंगल-वृषभ और तुल का स्वामी शुक्र कन्या और मिथुन का स्वामी बुध कर्क का स्वामी चंद्र-मीन और धन का स्वामी गुरु-मकर और कुंभ का स्वामी शनि, सिंह का स्वामी सूर्य।

९६ प्र०—मनुष्य के भाग्य में ग्रह फेर फार करते हैं ?

उ०—नहीं।

९७ प्र०—अच्छे ग्रह मनुष्य का भला करते हैं और खराब ग्रह अश्रेय करते ऐसा कहते हैं इसका क्या प्रत्युत्तर है ?

उ०—ऐसी कहावत है परन्तु ये बात सच्ची होने पर भी सच्ची नहीं मानी जाती।

९८ प्र०—तो सच्ची बात क्या है ?

उ०—मनुष्य का श्रेय अश्रेय होना उसके भाग्य (पूर्व के पुरुषार्थ से बंधे हुये शुभाशुभ कर्म) पर निर्भर है, ज्योतिष्य तो सिर्फ भाग्य को पाहिले से देखने का घड़ियाल जैसा यत्र है।

९९ प्र०—ज्योतिष्य पर से पाहिले से, क्या मालूम होजाता है?

उ०—हां जिस मनुष्य का जैसा प्रारब्ध हो, जैसे सुख दुख प्राप्त होने के हों, वैसे ही शुभाशुभ ग्रह जन्म कुंडली में वैसे ही स्थान में पडे हुए रहते हैं।

१०० प्र०—गमन करने में ज्योतिष्य क्या मदद करता है?

उ०—ज्योतिष्य का बराबर ज्ञान हो तो पहिले से ही लाभ हानि का ज्ञान हो सक्ता है।

१०१ प्र०—ज्योतिष्य और अपने कार्य में क्या सम्बन्ध है ?

उ०—ज्योतिष्य चक्र यह अपनी पृथ्वी के प्रत्येक व्यक्ति के साथ सम्बन्ध रखता है और इसी से उसके किरण अपने ऊपर शुभ अशुभ असर भी करते हैं।

१०२ प्र०—अपने भाग्य निर्बल हों और अपने शुभ मुहुर्त देखकर गमन करें तो श्रेयकारी होगा क्या ?

उ०—निर्बल भाग्य होगा और अश्रेय कारी होना होगा तो शुभ मुहुर्त मिलेगा ही नहीं अथवा खराब मुहुर्त होगा भी तो वह भूल से श्रेयकारी समझा जायगा परन्तु श्रेष्ट मुहुर्त में अनिष्ट होना असंभववित है।

१०३ प्र०—जो भाग्य में कुछ भी फेर फार नहीं कर सक्ता तो ज्योतिष्य देखने का क्या फल है ?

उ०—भविष्य की पहिले से ही खबर होजाय और जिससे कुछ भी उत्तम पुरुपार्थ कर कर्मोदय होने के पहिले उसका उपाय कर लिया जाय, यही इसका फल है।

ब्रह्मचर्य ।

लड़कों को बाल्य अवस्था में २५ वर्ष पर्यन्त अवश्य ब्रह्मचर्य पालना चाहिये ।

१ प्र०—मन वचन काया के शुद्ध जोगों से ब्रह्मचर्य पालने से क्या २ लाभ होते हैं । उसके विपरीत कुशील में प्रवतने से क्या २ हानियां होती हैं ।

उ०—ब्रह्मचर्य से शरीर सुडौल, बलिष्ट, सुन्दर और स्वतेज होता है । और मानसिक बल इतने बढ़ते हैं जिसमे आश्चर्यजनक सिद्धियें प्राप्त होती है, जिससे कुलकी, जाति की, धर्म की, वा देशकी सेवा कर इस लोक में यश का भागी बनता हुआ, धर्म में दृढ़ रहकर आत्म कल्याण करता हुआ परभव में देवेन्द्र आदि की पदवियों का भोगता बन, मोक्ष सुख प्राप्त करता है। कुशील में प्रवेश करने वाला दुखी होता है ।

२ प्र०—ब्रह्मचर्य से शरीर सुन्दर सुडौल बलिष्ट कैसे बनता है ?

उ०—माता पिता की योग्य अवस्था से जन्म पाय बालक, जैसे दिन दूनी रात चौगुनी अवस्था से वृद्धि को प्राप्त होता है, आदि व्याधि से बचने से समर्थ होता है, डील डौल में मजबूत और घम धाट करता हुआ तेज आकृति वाला होता है । जब तक की वह मन वचन काया की शुद्धि से

ब्रह्मचर्य को पालता है, यदि वह बालक बाल्य अवस्था ही में कच्चा वीर्य नष्ट करने लग जाय तो, वे अपनी उपरोक्त सिद्धियों को नष्ट कर दुखी होता हुआ, विकराल काल के गाल में पतित होता है।

३ प्र०—योग्य अवस्था किसे कहते हैं?

उ०—पुरुष को २५ वर्ष पर्यन्त और स्त्रियों को १६ वर्ष पर्यन्त, शुद्ध योगों से ब्रह्मचर्य पालना और कुशील में नहीं प्रवर्त्तना ये ही योग्य अवस्था है।

४ प्र०—२५ वर्ष पहिले विवाह करने में शारीरिक सम्पति कैसे नष्ट होती है और क्यों अयोग्य समझा जाता है?

उ०—वैदिक शास्त्रों का सिद्धान्त है कि मनुष्य का वीर्य २५ वर्ष पहिले परिपक्व नहीं होता है और अपरिपक्व अवस्था में कच्चा वीर्य नष्ट होने से शरीर की आरोग्यता भ्रष्ट होती है और अनेक बिमारीयों को भोक्ता बन असमय में काल के गाल में पड़ जाता है।

५ प्र०—कच्चा वीर्य नष्ट होने में क्यों आरोग्यता में बाधा पड़ती है?

उ०—जैसे, आम्र वृक्ष को बोने वाला २ वर्ष बाद ही फल की आकांक्षा करे तो १५ या २० फूल लग के ५ या ४ कच्चे या अपक्व फल हाथ लगेंगे। उसी प्रकार दूसरे वर्ष में भी २० या २५ फल हाथ लगेंगे इसी तरह ५ या ६ वर्ष का आम्रवृक्ष सौ, १०० या १५० सौ फल देने में सामर्थ होता

है सो भी उतना स्वादिष्ट नहीं और वृक्ष भी अन्दाज १२ फीट से जियादा नहीं बढ सक्ता। यदि उपरोक्त वृक्ष को पालने वाला आदमी चतुर हो तो उस आम्रवृक्ष के फल की ५ या ६ वर्ष तक आशा नहीं करता हुआ, फूल काटते ही जाता है जिससे उस वृक्ष की मार उसी में रहने से, वह वृक्ष अति विशाल और गहर गंभीर होता है और तुर्त का फल देने वाले वृक्ष से कई गुना उचा और विस्तार में फैल जाता है, और फल भी उसके स्वादिष्ट गाडियों से हजारों उतरते हैं। उसी तरह योग्य अवस्था यानी २५ वर्ष तक शुद्ध ब्रह्मचर्य पालने वाला पुरुष, कद का उंचा, शरीर बलिष्ट, निरोगी और दीर्घ आयुष्मन्त होता है, उसकी सन्तान भी बलिष्ट, लंबी, आयुष्य वाली सतेज होती है और जो वीर्य को कच्चा नष्ट करते है, वे अनेक रोगों में फसते हुये बहुतसी दवाईयां खाते २ अधुरे आयुष्य में परलोक की मुसाफिरी को तैयार होते हैं। अखबारों की दवाईयां देख देख ललचाते हैं। धन और धर्म को तिलाजली देते हुये, बाल अवस्था के कुकर्मों से नष्ट किये हुये वीर्य के लिये पश्चात्ताप करते है, सन्तान होती ही नहीं यदि हो भी जाय तो बलहीन, रोगिष्ट, अल्पायु होती है वह भर जवानी में बुढ्ढे बाबा बन बैठते हैं, गाल बैठ जाते है, दांत गिर जाते हैं, थोडा चलने से

थकावट होती है, चित्त भ्रमित होता है, और स्मर्ण शक्ति आस्थिफा ले जाती हैं, थोड़ीसी खुराक जियादा लें तो अजीर्ण होता है, पौष्टिक खुराक से बुखार आजाता है, खांसी सताने लगती है, ऐसे २ हजारों दुःखों से दुखी होता है जिसका पूरा बयान नहीं लिखा जा सक्ता, कहे तो कह सक्ते हैं, कचा वीर्य नष्ट करने वाला अथाह दुःख सागर में गोते मारता है।

९ प्र०—यदि २५ वर्ष पर्यंत ब्रह्मचर्य पालने में इतना लाभ है तो उसके दृष्टान्त बहुत से होने चाहिये। मात्र एक आम्र दृष्टान्त ही से कैसे तृप्त हो?

उ०—दृष्टान्त तो अनेक हैं किंतु विषय बढ़ जाने के भय से मात्र दो या चार वर्तमान के अच्छे २ दृष्टान्त देकर समाधान करुंगा; मानलो जैसे एक हीरा जब वह अपनी बिल्कुल कच्ची अवस्था में होता है, जब उसे कोई खान में से निकाले तो चमक तो उस में होती है किंतु वह चमक कोमल और दृढ़ता रहित होने से थोडीसी चोट से टूट जायगा, और मात्र मुंह की भाप से चमक भद्दी हो जायगी, और उसकी कीमत बिलकुल थोडी यानी हजार की जगह सिर्फ एक रुपया, जिसको जौहरी लोग फटक (पटिकम) कहते हैं,—यदि वह और जियादा दिन खान में रह कर पक जाय तो पुखराज होता है, वह पाटिकम से कुछ मजबूत

चमक और दृढ़ता में ज्यादा होता है, यदि हीरे की कीमत हजार की हो तो इसकी पचास रुपये होगी, और यदि वह पुरी मुद्दत तक खान में पका तो इसमें दृढ़ता इतनी बढ़ती है कि लोहे के घन से भी नहीं टूटता, बल्कि उलटे घण ही में खड्डा पड़ जाता है, और इसमें चमक इतनी होती है कि घोरमघोर अंधकार को नष्ट कर प्रकाश कर देता है जिससे वह हीरा कहलाता है, वैसे ही बहोत से कोमल बालक देखने में तो तेज और कोमल नजर आते हैं किंतु दुर्भाग्य से कुसंगत में पड़ कुकर्म सीख वीर्य नष्ट करने लगते हैं, जिससे चचलता और तेज नष्ट होने से चहरे पर झुरियां पड़ जाती हैं। जैसे वह हीरा घन की चोट से रक्षा करने में समर्थ होता है वैसे ही यह परिपक्व वीर्य वाला प्लेग आदि बीमारियों से बचने में समर्थ होता है। वैसे ही कच्चे गर्भ का पानी पड़ने से कई बीमारियें उत्पन्न होती हैं, ऋतु विपरीत फल देने लगती है, लोग दुखी होते हैं, जैसे कोई आदमी खेतका कच्चा नाज काट डाले तो अनाज आधा भी नहीं मिलेगा, चारा भी कम होगा कीमत पुरी नहीं मिलने से अपने किये पर पश्चाताप करेगा और दुःखी होगा, वैसे ही अपने कोमल कलेवर द्वादस वर्षीय बालक का विवाह कर सुख मानने वाले माता पिता, अपने प्राणप्रिय पुत्र को दु-

शील रुप कीचड़ में ढकेल देते हैं यह माता पिता अपने तुच्छ लोभ के लिये बिचारे बालक के मानसिक और शारीरिक बल को नष्ट कर खान पान और सांसारिक सुख से आखिर धर्म ध्यान से भी वंचित कर कूप के मेंडक की तरह दुःख से आयु व्यतीत करा, अल्प (अधुरे) आयु ही में परलोक की मुसाफिरी करा देते हैं।

७ प्र०—यह दृष्टान्त तो ठीक है किन्तु इसका प्रत्यक्ष प्रमाण भी अवश्य होना चाहिये, क्योंकि यह बाल विवाह की रीति तो बहुत दिनों से प्रचलित है। यदि हम बाल विवाह ही से दुःखी होते हैं, तो योग्य अवस्था तक ब्रह्मचर्य पाल कौन ज्यादा सुख भुगत रहे हैं सो बतलाइये।

उ०—प्रिय बाल मित्रों अंग्रेज दो सौ वर्ष पहले अंग्रेज लोगों में भी यही प्रथा थी। याने बाल्य अवस्था ही में बालकों को कुकर्म में पड़ते दुखी होते देख उसको रोकने के लिये अंग्रेजों ने हिन्दुस्थान की प्राचीन रीति अनुसार, बालकों को ५ ही वर्ष की अवस्था में पाठशाला में भेजना शुरु किया, जो २५ या ३० वर्ष की अवस्था तक पूर्ण ब्रह्मचर्य पालता हुआ विद्याभ्यास करता है, जिससे आज अंग्रेजों में विद्वान और कला कौशल में हुशियार होते हुये, हिन्दुस्थान जैसे विशाल देश पर राज्य करते हैं। २ कला

एरोप्लेन (हवाई जहाज) बे तार का तार, मोटर, रेल, प्रमुख अनेक चमत्कारी अनार्य कला प्रचलित कर लोगों को चकित करते हैं किन्तु इनके भी दादा गुरु अमेरिकन जो पचास वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्य पालते हैं यह इनमें भी ज्यादा चमत्कार दिखा कर एशिया, युरोप, अफ्रिका आदि विशाल देशों में अपना रुजगार फैला, करोडों अरबों की संख्या में धन इकट्ठा कर, सौ या उससे भी ज्यादा आयुष्य सुख और स्वतन्त्रता पूर्वक भोगते है, इनमें ऐसे २ धनाढ्य है जो मिलना हो तो हिन्दुस्तान को भी खरीद सकते है और कितनेक की मासिक आमदनी करोड, सवा डेढ करोड़ तक है, कहें तो कह सकते है कि यह सब द्रव्य ब्रह्मचर्य की तुच्छ सिद्धियां हैं क्योंकि यह लोग ब्रह्मचर्य सिर्फ अपने शारीरिक सुखके लिये ही पालते हैं, इससे उनका धार्मिक सम्बन्ध उतना नहीं है, जितना कि मांस मदिरा का त्याग कर, दया धर्म के पालने वाले एक आर्य पुत्र का है, क्योंकि वह तो शुद्ध समकित और ब्रह्मचर्य ही को मोक्ष का साधन मानता है। सच्च है कि जब यह हमारा आर्य देश ब्रह्मचर्य में दृढ़ था, उस समय के माता पिता अपने पुत्र को योग्य अवस्था तक ब्रह्मचर्य पालन कराते थे, और नव ही अंग जागृत हुवे बिना विवाह नहीं करते थे, ऐसा शास्त्रों से

प्रमाण मिलता है, और यहां तक लिखा है कि एक रात्रि शुद्ध ब्रह्मचर्य पालने वाले को तावे उमर रोज क्रोड सौनिया दान देने वाले से भी ज्यादा फल मिलता है, तो, विचारिये २५ वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्य पालने में कितनी पुन्यवानी चढ़ती है, और कितना शारीरिक और मानसिक बल बढता है, इस विचार से कितनेक ब्रह्मचारी रहने ही में सुख मानते थे। उस समय यह हमारा आर्य देश धन धान्य से परिपूर्ण था, कला कौशल में बढा चढा था, और इन देश के आर्य पुत्र विदेशों से धन की रासियां वहनों में भर भर कर लाते, और देश को गौरववंत बनाते थे, अहा! तब यह हमारा आर्य देश मुकटमणी समान सुशोभित था अहो! आश्चर्य! आज उसही आर्य भूमि में, ब्रह्मचर्य के अभाव से करोड़ों भारतवासियों को भर पेट भोजन नहीं मिलता जो देश चीनादिक विशाल देशों को वस्त्र देता था। आज उसही देश की संतान वस्त्र के अभाव से दुःखी होकर प्राण तक दे देने की खबरें अखबारों में पढने में आती हैं। सच्च है जो २ देश, जाति व धर्म उपर चढे हैं, चढ़ते हैं, व चढेंगे उनका एक मात्र आधार ब्रह्मचर्य ही है और जो २ देश वा जाति नीचे गिरी है, गिरती है व गिरेगी,

उन सबका मुख्य-कारण अब्रह्मचर्य (कुशील) ही है, वास्ते योग्य अवस्था तक अवश्य ब्रह्मचर्य पालना चाहिये।

८ प्र०—विद्यार्थियों को क्यों ब्रह्मचर्य पालना चाहिये और उससे क्या लाभ ?

उ०—विद्यार्थी जब विद्याध्ययन करते हैं, या रटन करते हैं, तब मगज में थकावट होती है, उसकी पूर्ति खून का तत्त्व (सार) वीर्य ही से होता है इस लिये विद्यार्थी अवस्था तक पूर्ण ब्रह्मचर्य पालना चाहिये।

९ प्र०—दुर्भाग्य से कुसगत में पड़ या माता पिता की डाली हुई फरज मे जो बालक बाल अवस्था ही में वीर्य नष्ट करते हैं, उससे विद्याध्ययन में क्या २ हानिया होती हैं ?

उ०—कठिन अभ्यास में जब मगजपची करनी पड़ती है, तब मगज में प्रशाण (घसारा) उत्पन्न होता है जैसे २ अभ्यास बढ़ता जाता है तैसे २ मगज का प्रशाण भी बढ़ता ही जाता है, जितने प्रमाण में मगज का घसारा होता है, उससे भी ज्यादा प्रमाण में उसे पोषणता मिलनी ही चाहिये, मगज की याने थकावट की पूर्ति करने की कोई चीज संसार में है तो एक मात्र वीर्य ही है जो मात्र ब्रह्मचर्य ही से प्राप्त होता है। इसही कारण से बिना ब्रह्मचर्य के विद्याध्ययन में विघ्न होता है, मानसिक बल प्राय

नष्ट होता है। और अभ्यास थकावट और भु लावट से प्राय रुक जाता है। हे विद्यार्थियों! ब्रह्मचर्य की प्रसंशा में कहां तक गाऊं तारे उमर में एक ही दफे वीर्य नष्ट करने वाला सिंघ, अपने से चौगुना आकार और वजन वाल हस्ती को मात्र एक जोरदार गर्जन से कंपायमान कर देता है, वैसे ही तारे उमर में एक ही बार भोगेल्ल वाली सिंघनी का दूध, इतना तेज है कि तांबा चांदी, लोहा आदि के पात्रों को छेदता हुआ निकल जाता है उस दूध को रखने को कोई समर्थ है तो एक मात्र सोने ही का पात्र है वर्तमान में लोहे की संकल को तोड़ने वाला, हाथी को छाती पर चढ़ाने वाला ४० मन के पत्थर को छाती पर उठाने वाला रामसूर्ति अपने भाषण में इन सब का कारण एक मात्र ब्रह्मचर्य ही बतलाया है। इस वास्ते हे लड़कों! हमेसा ब्रह्मचर्य में दृढ़ बनकर विद्याभ्यास करो इसही में तुम्हारी तुम्हारे कुल की देश की, जाति की व धर्म की भलाई है। याद रहे हस्त मैथुन आदि महा भयंकर कुकृत्यों से हमेशा अपने अमुल्य शरीर की रक्षा करना, यदि ब्रह्मचर्य की रक्षा में गफलत करोगे तो डुक्टर वैद्य व औषध और लाठी की शरण लेनी पड़ेगी, फिर हजार पश्चाताप करने पर भी कुछ नहीं बनेगा।

ओं शान्तिः ओं शान्तिः ओं शान्ति. ॥

[illegible]